हर घर के लिये जरूरी हर व्यक्ति की आवश्यकता

हमारी हिन्दी पब्लिकेशंज

बहिश्ती ज़ेवर [illegible]	
क़सासुल अम्बिया नबियों के किस्से	R 60/-
मरने के बाद क्या होगा	R 15/-
[illegible] नमाज़	R 25/-
आईना-ए-नमाज़	R 8/-
मुसलमान बीवी	R 8/-
मुसलमान खाविंद	R 8/-
[illegible] शरीफ़	R 8/-
रसूलुल्लाह सल्ल. की बातें व [illegible]	R 10/-
मीलादे अकबर	R 8/-
रसूलुल्लाह सल्ल की दुआऐं	R 10/-
क़यामत कब आयेगी	R 40/-
मियाँ बीवी के हकूक़	R 10/-
नमाज़	R 3/-
तर्कीबे नमाज़	R [illegible]
मसनून दुआऐं	R [illegible]
[illegible]	R 6/-
अक़्ल की बातें	R [illegible]
[illegible] मुनाजात	R [illegible]
दुआ-ए-गंजुल अर्श मुनाजात	R 1/50
मिलने का पता	R 1/50

जसीम बुक डिपो
उर्दू बाजार जामा मस्जिद, दिल्ली

Rs./-22

आमाले कुरआनी

लेखक
हज़रत मौलाना अशरफ़ अली

اعمال قرآنی

जसीम बुक डिपो
उर्दू बाजार जामा मस्जिद दिल्ली 6

قوله تعالى

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ وَرَحْمَةٌ لِلْمُؤْمِنِينَ

अल्लाह तआला का इर्शाद है

आमाले क़ुरआनी

लेखक

हज़रत मौलाना अशरफ़ अली

प्रकाशक

जसीम बुक डिपो

उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद, दिल्ली

NOOR MOHAMMED & SONS
BOOK SELLERS
BAZAR, CUTTACK

प्रकाशक :

लेखक :
हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि

जनवरी, १९९१

Rs. 30/-

PRINTED BY SHOBI OFFSET PRESS 3016 KUCHA CHELAN, DARIYA GUNJ, N. DELHI

विषय-सूची

क्या ? | कहाँ ?

पहला हिस्सा १२-५०

दीनी ज़रूरतें (१२-२३)

१. नमाज़ का शौक़ और ख़ुशूअ (गिड़गिड़ाहट)	१२
२. इबादत पर आमादगी	१३
३. अल्लाह की ख़ुशी	१३
४. दिल का रोशन होना	१३
५. हिदायत पाना	१४
६. हिफ़्ज़े क़ुरआन	१५
७. फ़ासिक़ की इस्लाह	१५
८. ज़ियारते रसूल सल्ल०	१५
९. इस्मे आज़म	१६
१०. ईमान पर ख़ात्मा	१७
११. गुनाह माफ़ हों	१७
१२. सफ़ाइये नसीब हो	१८
१३. अमल का क़ुबूल किया जाना	१८
१४. रिश्तेदार दीनदार हो जायें	१९
१५. शैतानी वस्वसों से पनाह	१९
१६. क़ियामत के दिन चेहरा चमके	२०
१७. दोज़ख़ से निजात हो जाये	२०
१८. रात को जिस वक़्त चाहे, आंख खुल जाये	२१
१९. क़ब्र के अज़ाब से निजात	२२

क्या ?	कहां ?

२०. सफ़र में दिल न घबराये २३

दुनिया की ज़रूरतें (२३-५०)

१. फल में बरकत २३
२. हर आफ़त से फल की हिफ़ाज़त २४
३. दरख़्त का बोझ या हमल गिरने से बचाने के लिए २६
४. माल, मवेशी और खेत में बरकत २७
५. खेत और बाग़ की पैदावार बढ़िया हो २८
६. ज़मीन और पेड़ सींचने का अमल ३१
७. जानवर का दूध और कुएं का पानी बढ़ जाये ३३
८. दुश्मन के बाग़ की बर्बादी ३४
९. कारोबार में तरक़्क़ी ३४
१०. मज़दूर की मुश्किल आसान हो ३८
११. बला व मुसीबत से नजात हासिल होना ३९
१२. दुआ क़ुबूल होने के लिए ३९
१३. ज़रूरत पूरी होना ४४
१४. ज़रूरत पूरी होने के अमल ४६

दूसरा हिस्सा ५१-२१६

१. इल्म की तरक़्क़ी और ज़ेहन का बढ़ना ५१
२. रोज़गार लगना और निकाह का पैग़ाम मंज़ूर होना ५३
३. हमेशा ख़ुश रहना, ग़म का दूर होना ५६
४. मुश्किल आसान होना ५७
५. मुराद पूरी होना ५७

क्या ?	कहां ?

६. हर मुसीबत से बचाव के लिए ५८
७. दफ़ीने का पता लगाना ६२
८. गुमशुदा की तलाश ६३
९. भागे हुए की वापसी ६८

बीवी व शौहर से मुतालिक़ (७०-९४)

१. लड़की का निकाह होना ७०
२. शौहर का मेहरबान बनाना ७१
३. बीवी का मुहब्बत करना ७७
४. औलाद वाला होना ७७
५. बांझपन ख़त्म होना ७९
६. हमल की हिफ़ाज़त ८३
७. विलादत में आसानी ८५
८. दूध बढ़ना ८७
९. दूध छुड़ाना ८९
१०. औलाद (लड़कों) का नेक होना ८९
११. बच्चों की हिफ़ाज़त ९०
१२. बच्चों का पलना-बढ़ना ९१
१३. जिमाअ़ की ताक़त ९२
१४. लड़के का ज़िदा न रहना ९३
१५. छिपी बातों का मालूम करना ९३

रोज़ी और क़र्ज़ का अदा करना (९४-१०९)

१. क़र्ज़ का अदा करना ९४
२. बरकत होना ९७

क्या ? — कहाँ ?

३. अमला से ज़्यादा सुख-चैन — ९७
४. दुख-दर्द ख़त्म करने के लिए — ९७
५. बे-मेहनत रोज़ी — ९९
६. रोज़ी बढ़ाने के लिए — १००

मुहब्बत और क़ाबू में रखने की बातें (११०-१२८)

१. हाकिम का नाराज़ होना — ११०
२. ज़ालिम के लिए — ११५
३. इज़्ज़त बढ़ाना — १२२
४. मुहब्बत के लिए — १२६
५. अपना हक़ वसूल करने के लिए — १३०
६. सब का प्रिय बनने के लिए — १३०
७. बाल-बच्चों का फ़रमांबरदार होना — १३५
८. राज़ मालूम करने के लिए — १३६
९. बुराई से बचने के लिए — १३७
१० बरकश गुलाम के लिए — १३७
११. ख़ाना वीरानी के लिए — १३८

जादू, जिन्न, आसेब और तकलीफ़ देने वाले जानवरों से हिफ़ाज़त (१३९-१६५)

१. जिन्न व इन्स से हिफ़ाज़त — १३९
२. जादू दूर करने के लिए — १४१
३. जिन्न व इन्सान का क़ाबू में करना — १४४

क्या ? — कहाँ ?

४. शैतानी वस्वसा दूर करने के लिए — १४६
५. ख़ौफ़ का दूर होना — १४७
६. तकलीफ़ देने वाले जानवर से बचने का अमल — १४९
७. आसेब वग़ैरह से हिफ़ाज़त — १५२
८. आसेब व जिन्न भगाने के आमाल — १५६
९. बुरी नज़र — १६०
१०. अम्न व अमान के लिए — १६२
११. दुश्मनों से बचाव और उनकी तबाही — १६३
१२. ख़ौफ़ व डर दूर करने के लिए — १६४
१३. बहस में ग़ालिब आना — १६४
१४. जान की हिफ़ाज़त — १६५
१५. दुश्मन से मुक़ाबला — १६६

सफ़र (१७४-१८०)

१. सवार होते वक़्त — १७४
२. किसी शहर में दाख़िल होना — १७५
३. कश्ती व जहाज़ की हिफ़ाज़त — १७६
४. वापसी ख़ैरियत के साथ — १८०

जिस्मानी मर्ज़ (१८१-२२६)

१. बुख़ार या हर बीमारी को दूर करने के लिए — १८१
२. हौलदिली — १८८
३. दिल की धड़कन — १८९
४. दिल का दर्द — १९०
५. दिल को ताक़त पहुंचाने के लिए — १९०

क्या ?	कहां ?
६. तहारत के लिए	१९१
७. नाफ़ टलने के लिए	१९१
८. बवासीर के लिए	१९२
९. हैज़ की ज्यादती से हिफ़ाज़त	१९३
१०. नक्सीर के लिए	१९३
११. दर्द	१९४
१२. सर दर्द के लिए	१९६
१३. दाढ़ का दर्द	१९८
१४. कान का दर्द	१९९
१५. आंख का आना	२०१
१६. आंख का दर्द	२०३
१७. गुर्दे का का दर्द	२०४
१८. पथरी को तोड़ कर निकाले	२०४
१९. पसली का दर्द (नमूनिया)	२०४
२०. आंख की रोशनी	२०५
२१. बुखार का कंपन	२०६
२२. मिरगी के लिए	२०६
२३. फ़ालिज के लिए	२०७
२४. लक्वा कूलंज के लिए	२०८
२५. कोढ़ के लिए	२०९
२६. सफ़ेद-दाग़ के लिए	२०९
२७. खारिश के लिए	२१०
२८. दाद	२११
२९. चेचक के लिए	२११
३०. उम्मुस्सिबयान	२१२

क्या ?	कहां ?
३१. उज़्व का ढीला पड़ना (फ़ालिज)	२१३
३२. हड्डी का टूटना	२१३
३३. नींद आना	२१४
३४. निसयान (भूलना)	२१४
३५. पेशाब रुक जाना	२१५
३६. एहतलाम	२१५
३७. परेशान ख्वाब	२१६
३८. बच्चे का बोलना	२१६

तीसरा हिस्सा २१७-२३२

१. अस्माउल हुस्ना २२२

क़ैद और तकलीफ़ पहुंचाने वाले जानवरों से निजात (२२१-२३२)

१. क़ैद से निजात	२२१
२. चीटियों की ज्यादती	२२३
३. मच्छरों की ज्यादती	२२४
	२२६
	२३२

ज़रूरी गुज़ारिश

अहक़र को आला हज़रत मुर्शिदी सय्यिदी रह्मतुल्लाहि अलैहि ने इर्शाद फ़रमाया था कि अगर कोई ज़रूरतमंद तावीज़ लेने आये, तो इंकार मत किया करो। जो ख्याल में आया करे, लिख दिया करे।

चुनांचे अहक़र का मामूल है कि उसकी ज़रूरत के मुताबिक़ कोई क़ुरआनी आयत या कोई इस्मे इलाही सोच कर लिख देता है और अल्लाह के फ़ज़्ल से उसमें बरकत होती है। चुनांचे एक बीबी की मांग बार-बार की कोशिश के बावजूद सीधी न निकलती थी। अहक़र ने कहा 'इह्दिनस्सिरातल् मुस्तक़ीम' पढ़ कर मांग निकालो। चुनांचे इसका पढ़ना था कि बे-तकल्लुफ़ मांग सीधी निकल आयी।

अहक़र ने यह हिकायत इस लिए अर्ज़ की है कि अगर कोई सच्चा तालिब भी इस मामूल को अख्तियार करे तो, नफ़ा और बरकत की उम्मीद है।

—अशरफ़ अली

ज़रूरी मस्अले

१. बे-वुज़ू क़ुरआनी आयतों को काग़ज़ या तश्तरी पर लिखना जायज़ नहीं।

२. बे-वुज़ू उस काग़ज़ या तश्तरी को छूना जायज़ नहीं। बल्कि

चाहिए कि लिखने वाला और तश्तरी या तावीज़ का हाथ में लेने वाला और उसका धोने वाला सब बा-वुज़ू हों, वरना सब गुनाहगार होंगे।

३. जब तावीज़ से काम हो चुके तो उसको क़ब्रस्तान में किसी एहतियात की जगह दफ़न कर दे।

बिला वुज़ू बिला जुज़्दान के क़ुरआन शरीफ़ को हाथ लगाना जायज़ नहीं।

आमाले क़ुरआनी यानी

आमाले क़ुरआनी (पहला हिस्सा)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम०

दीनी ज़रूरतें

१. नमाज़ का शौक़ और ख़ुशूअ (गिड़गिड़ाहट)

जुमे की रात में आधी रात के वक़्त उठकर वुज़ू करके दो रकअत नफ़्ल पढ़े और आयत—

قُلِ ادْعُوا اللَّهَ أَوِ ادْعُوا الرَّحْمَٰنَ ۖ أَيًّا مَا تَدْعُوا فَلَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ ۚ وَلَا
تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذَٰلِكَ سَبِيلًا ۝ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَمْ
يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُنْ لَهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ وَلِيٌّ مِنَ الذُّلِّ ۖ وَكَبِّرْهُ
تَكْبِيرًا ۝

कुलिद् उल्ला ह अविद उर्रहमा न अय्यम्मा तद्अू फ़ लहुल अस्माउल हुस्ना व ला तजहर बिसलाति क व ला तुख़ाफ़ित बिहा वब्तग़ि बैं न ज़ालि क सबीला० व क़ुलिल् हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी लम् यत्तख़िज़ व ल दंव्व लम यकुल्लहू शरीकुन फ़िल्मुल्कि व लम यकुल्लहू वलीयुम्मिनज़्ज़ुल्लि व कब्बिर्हु तक्बीरा०

शीशे के बरतन में ज़ाफ़रान और गुलाब से लिख कर बरतन को

पानी से धोए, फिर इन आयतों को उस पानी पर सात मर्तबा पढ़े, फिर सुबह की नमाज़ के बाद उस पानी पर सूरः 'अलम् न श् रह्' दम करके दुआ करे कि यह सुस्ती जाती रहे और नेक कामों का शौक़, नमाज़ में शौक़ पैदा हो जावे और फिर वह पानी पी ले। इन्शा अल्लाह तआला मक़सद पूरा हो।

२. इताअत पर आमादगी

१. अलबसीरु (देखने वाले)

ख़ासियत—नमाज़ जुमा के बाद सौ मर्तबा पढ़ने से दिल में सफ़ाई हो और नेक अमल करने की तौफ़ीक़ हो।

२. अलक़य्यूमु (थामने वाले)

ख़ासियत—इसकी ज़्यादती से नींद जाती रहे और 'या हय्यु या क़य्यूमु' को फ़ज्र से सूरज निकलने तक पढ़ने से मुस्तैदी और इताअत पर आमादगी हासिल हो।

३. अल्लाह की ख़ुशी

अल्अफ़ुव्वु (माफ़ करने वाले)

ख़ासियत—ज़्यादा ज़िक्र करने से गुनाहों से माफ़ी और ख़ुदा की ख़ुशी हासिल हो।

४. दिल का रोशन होना

१. अलबाइसु (भेजने वाले रसूलों के)

ख़ासियत—सोते वक़्त सीने पर हाथ रखकर इसको सौ मर्तबा पढ़ा करे तो उसका दिल इल्म व हिकमत से रोशन होगा।

فَاسْتَقِمْ كَمَا أُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ

२. फ़स्तक़िम क मा उमिर त व मन ता ब मअ क (पारः १२,

रुकूअ १०)

फस्तक़िम्—जिस तरह आपको हुक्म हुआ है (दीन की राह पर) मुस्तक़ीम (जमे) रहिये और वे लोग भी मुस्तक़ीम रहें जो कुफ्र से तौबा करके आपके साथ हैं।

ख़ासियत—दिल की इस्तक़ामत (जमाव) के लिये ग्यारह मर्तबा हर नमाज़ के बाद पढ़ें।

३. अन्नूरु (रोशनी वाले)

ख़ासियत—इसके ज़िक्र से दिल का नूर हासिल हो।

४. पूरी सूरः कह्फ़ (पारः १५)

ख़ासियत—जो कोई हर जुमा को एक बार पढ़ ले, इन्शा-अल्लाह तआला दूसरे जुमा तक उसका दिल नूर से रोशन होगा। और जो कोई शुरू की दस आयतें याद करता रहेगा वह दज्जाल के शर (बुराई) से बचा रहेगा।

५. हिफ़ाज़त ईमान

१. सूरः इख़लास (पारः ३०)

ख़ासियत—सुबह व शाम पढ़ें, शिर्क और कुफ़्र की बातों से बचा रहे।

२. एक मिस्री ने बयान किया कि एक मुश्रिक एक मुसलमान के पास आया और कहा कि तुम्हारे कुरआन में कोई ऐसी चीज़ भी है जो मेरे दिल को बदल दे, शायद मैं मुसलमान हो जाऊं। उसने कहा, हां है और उसको सूरः अलम् नशरह लिख कर पिलाई। वह मुसल-मान हो गया।

३. अल्मुहैमिनु (पीछा करने वाले)

ख़ासियत—ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ें, तो बुरे कामों से तौबा नसीब हो।

४. अत्तव्वाबु (तौबः कुबूल करने वाले)

ख़ासियत—नमाज़ चाश्त के बाद तीन सौ साठ बार पढ़ें तो तौबा की तौफ़ीक़ हासिल हो और अगर ज़ालिम पर दस बार पढ़ें तो उससे छुटकारा मिले।

६. हिफ़्ज़े कुरआन

सूरः मुद्दस्सिर (पारः २९)

ख़ासियत—इसको पढ़कर अगर दुआ कुरआन के हिफ़्ज़ (ज़ुबानी याद) होने की करे, इन्शाअल्लाह हिफ़्ज़ आसान हो।

७. फ़ासिक़ की इस्लाह

अल्मतीनु (मज़बूत)

ख़ासियत—अगर कमज़ोर पढ़े, ज़ोर वाला हो जावे, और अगर किसी फ़ासिक़ व फ़ाजिर (बुरा और नाफ़र्मान) मर्द या औरत पर पढ़ा जाये तो फ़ुजूर से बाज़ आ जाये।

८. ज़ियारते रसूल सल्ल०

सूरः कौसर (पारः ३०)

ख़ासियत—जुमे की रात में एक हज़ार मर्तबा इसको पढ़े और एक हज़ार मर्तबा दरूद शरीफ़ पढ़े तो ख़्वाब में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत नसीब हो।

९. इस्मे आज़म

الٓمٓ ۝ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۝ (١٥٨/١٠٩٢٣)

१. अलिफ़-लाम्-मीम् अल्लाहु ला इला ह इल्ला हुवल् हय्युल

क़य्यूम० (पारः ३, रुकूअ ६)

तर्जुमा—अलिफ़-लाम-मीम् अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद (पूजा के लायक़) बनाने के क़ाबिल नहीं और वह ज़िन्दा है। सब चीज़ों को बरक़रार रखने वाले हैं।

ख़ासियत—हदीस शरीफ़ में आया है कि इसमें इस्मे आज़म है।

لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ (پ ١٧)

२. ला इला ह इल्ला अन त सुब्हान क इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन० (पारः १७, रुकूअ ६)

तर्जुमा—आपके सिवा कोई माबूद नहीं है, आप सब ऐबों से पाक हैं। मैं बेशक क़ुसूर वाला हूं।

ख़ासियत—इसमें इस्मे आज़म छिपा हुआ है। जिस मुसीबत व बला में पढ़ेगा, इन्शाअल्लाह तआला बड़ा फ़ायदा उठाएगा।

هُوَ اللّٰهُ الَّذِي لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيمُ (پ ٢٨ ع ٦)

३. **हुवल्लाहु ल्लज़ी** ला इला ह इल्ला हु व आलि मुल ग़ै बि वश्शहादति **हुवर्रह्मानुर्रहीम्** (पारः २८, रुकूअ ६)

तर्जुमा—वह ऐसा माबूद है कि उसके सिवा और कोई माबूद (जिसकी इबादत की जाए) बनने के लायक नहीं। वह जानने वाला है, छिपी और खुली चीज़ों का। वही बड़ा मेहरबान, रहम वाला है।

ख़ासियत—इसमें इस्मे आज़म छिपा हुआ है। जो कोई इसको सुबह के वक़्त सात बार पढ़े तो शाम तक उसके वास्ते फ़रिश्ते मग्फ़िरत की दुआ करें और अगर उस दिन में मरे तो शहीद

का दर्जा पायेगा और अगर शाम को पढ़े तो सुबह तक उसके वास्ते फ़रिश्ते मग्फ़िरत की दुआ करें और अगर उस रात को मरे तो शहादत का दर्जा पाये।

१०. ईमान पर ख़ात्मा

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ (پ ٣ ع ٩)

१. रब्बना ला तुज़िग़ क़ुलू बना बअ् द इज़ हदै तना व हब ल ना मिल् ल दुन क रहमतन इन्न क अन्तल वह्हाब० (पारः ३, रुकूअ ६)

तर्जुमा—ए हमारे परवरदिगार! दिलों को हिदायत के बाद टेढ़ा न कर दीजिए और हमको अपने पास से रहमत अता फ़र्माइये, बेशक आप बहुत बख़्शिश करने वाले हैं।

ख़ासियत—जो कोई हर नमाज़ के बाद इस आयत को पढ़ लिया करे वह दुनिया से इन्शा अल्लाह ईमान के साथ उठेगा।

११. गुनाह माफ़ हों

رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنْفُسَنَا وَإِنْ لَمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ (پ ٨ ع ٩)

रब्बना ज़ लम ना अनफ़ु स ना व इल्लम् तग़फ़िर ल ना व तर्हम्ना ल न कू नन्न मिनलख़ासिरीन० (पारः ८, रुकूअ ६)

तर्जुमा—ऐ हमारे रब। हमने अपने ऊपर ज़ुल्म किया और अगर आप मग्फ़िरत न करेंगे और हम पर रहम न करेंगे, तो वाक़ई हमारा बड़ा नुक़्सान हो जायेगा।

ख़ासियत—जो शख़्स इस आयत को हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद

एक बार पढ़ कर मग्फ़िरत की दुश्रा मांगे इन्शा श्रल्लाह उसके गुनाह माफ़ हों, क्योंकि यह दुश्रा श्रादम श्रलैहिस्सलाम की है।

१२. शफ़ाश्रत नसीब हो

لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُم بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ۝ فَإِن تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ۝

लक़द जा श्र कुम रसूलुम्मिन श्रन्फ़ुसि कुम श्रज़ीज़ुन श्रलैहि मा श्रनित्तुम हरीसुन श्रलैकुम बिल मुश्रमिनी न रऊफ़ुर्रहीम० फ़ इन तवल्लौ फ़ क़ुल हस्बियल्लाहु ला इला ह इल्ला हु व श्रलैहि तवक्कल तु व हु व रब्बुल श्रर्शिल श्रज़ीम० (पारा ११, रुकूश्र ५)

तर्जुमा—ऐ लोगो ! तुम्हारे पास एक ऐसे पैग़म्बर तशरीफ़ लाये हैं जो तुम में से हैं। जिनको तुम्हारी तक्लीफ़ भारी होती है, तुम्हारी खोज-खबर रखते हैं, ईमान वालों पर शफ़ीक़ और मेहरबान हैं, फिर अगर वह फिर जाएं तो आप कह दीजिए काफ़ी है हमको अल्लाह ! किसी की बंदगी नहीं सिवाए उसके। उसी पर मैंने भरोसा किया और वह अज़ीम तख़्त का मालिक है।

ख़ासियत—जो कोई इन श्रायतों को हर नमाज़ के बाद एक मर्तबा पढ़ा करे तो इन्शा अल्लाहु तश्राला हश्र के दिन जनाबे रसूले मक़बूल सल्लल्लाहु श्रलैहि व सल्लम उसकी शफ़ाश्रत फ़रमाएंगे और जिस मुसीबत और मुहिम के लिए चाहे पढ़े, इन्शा अल्लाहु तश्राला मुश्किल श्रासान हो जायेगी।

१३. श्रमल का क़ुबूल किया जाना

إِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهُ

१. इलैहि यस्श्रदुल कलिमुत्तय्यिबु वल श्र मलुस्सालिहु यर फ़ श्रुहू० (पारा २२, रुकूश्र १४)

तर्जुमा—श्रच्छा कलाम उस तक पहुंचता है और श्रच्छा काम उसी को पहुंचता है।

ख़ासियत—बुज़ुर्ग इससे यह नतीजा निकालते हैं कि जो शख़्स नमाज़ के बाद कल्मा-ए-तौहीद तीन बार पढ़ लिया करे तो इन्शा अल्लाह तश्राला उसकी दुश्रा मक़बूल होगी।

२. अर्रशीदु

ख़ासियत—इशा की नमाज़ के बाद सौ बार पढ़े तो सब श्रमल मक़बूल होंगे।

१४. दिललेदार बीबी श्रौलाद हो जावे

رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا

रब्ब ना हब लना मिन अज़्वाजिना व ज़ुर्रिय्यातिना क़ुर्र त श्रयुनिंव्वज श्रल नालिल मुत्तक़ी न इमामा० (पारा १६, रुकूश्र ४)

तर्जुमा—ऐ हमारे परवरदिगार (पालन हार !) हमको हमारी बीवियों और श्रौलाद की तरफ़ से श्रांखों की ठंडक (यानी राहत) श्रता फ़र्मा और हमको परहेज़गारों का इमाम बना दे।

ख़ासियत—जो कोई इसको एक बार हर नमाज़ के बाद पढ़ लिया करे उसकी श्रौलाद और बीवी दीनदार हो जायेंगे।

१५. शैतानी वसवसों से पनाह

رَّبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِينِ ۝ وَأَعُوذُ بِكَ رَبِّ أَن يَحْضُرُونِ

१—रब्बि श्र ऊ ज़ु बि क मिन ह म ज़ातिश्श्यातीनि० व श्र ऊ

बुबि क रब्बि अंय्यह्जुरूनि० —पारा १८, रुकूअ ६

तर्जुमा—ऐ मेरे रब ! मैं आपकी पनाह मांगता हूं शैतानों के चोकों से और ऐ मेरे रब ! मैं आपकी पनाह मांगता हूं इससे कि शैतान मेरे पास भी आये।

खासियत—जिसके दिल में शैतानी वसवसा ज्यादा पैदा होते हों वह इसको ज्यादा पढ़ा करे, इन्शा अल्लाह तआला इन वसवसों से बचा रहेगा।

२. अलमुक्सितु (इन्साफ करने वाले)

खासियत—इसे हमेशा पढ़ते रहने से इबादतों में वसवसा न आयेगा।

१६. कियामत के दिन चेहरा चमके

إِنَّهُ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيمُ (پ٢٧ ع٣)

इन्नहू हुवल बर्रु र्रहीम० (पारा २७, रुकूअ ३)

खासियत—जो कोई इस आयते करीमा को नमाज के बाद ग्यारह बार उंगली पर दम करके पेशानी पर मले तो इन्शा अल्लाह कियामत में उसका मुंह चमकेगा।

१७. दोज़ख से निजात हो जाये

حم ۝ تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ (پ٢٤ ع٦)

१. हामीम० तन्जीलुल किताबि मिनल्लाहिल अज़ीज़िल अलीम० (पारा २४, रुकूअ ६)

حم ۝ تَنْزِيلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ (پ٢٤ ع١٥)

२. हामीम० तन्ज़ीलुम्मिनर्रहमानिर्रहीम०

(पारा २४, रुकूअ १५)

حم ۝ عسق (پ٢٥ ع٢)

३. हामीम० ऐन सीन क़ाफ़० (पारा २५, रुकूअ २)

حم ۝ وَالْكِتَابِ الْمُبِينِ (پ٢٥ ع٧)

४. हामीम वल्किताबिल मुबीन० (पारा २५, रुकूअ १४)

حم ۝ وَالْكِتَابِ الْمُبِينِ ۝ إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةٍ مُّبَارَكَةٍ إِنَّا كُنَّا مُنْذِرِينَ (پ٢٥ ع١٤)

५. हामीम० इन्ना अन्ज़ल्नाहु फ़ी लैलतिम मुबारकतिन इन्ना कुन्ना मुन्ज़िरीन० (पारा २५, रुकूअ १४)

حم ۝ تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ (پ٢٥ ع١٧)

६. हामीम् तन्ज़ीलुल्किताबि मिनल्लाहिल अज़ीज़िल हकीम० (पारा २५, रुकूअ १७)

حم ۝ تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ (پ٢٦ ع١)

७. हामीम् तन्ज़ीलुल्किताबि मिनल्लाहिल अज़ीज़िल हकीम० (पारा २६, रुकूअ १)

खासियत—जो शख्स इन सातों हामीम् को पढ़ा करे, उस पर दोज़ख के सारे दरवाज़े बन्द हो जायेंगे।

१८. रात को जिस वक़्त चाहे, आंख खुल जाये

وَإِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَأَمْنًا وَاتَّخِذُوا مِنْ مَّقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى وَعَهِدْنَا إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ أَنْ طَهِّرَا بَيْتِيَ لِلطَّائِفِينَ وَالْعَاكِفِينَ وَالرُّكَّعِ السُّجُودِ ۝ (پ١ ع١٥)

१. व इज़ जअल्नल बै त मसाबतन लिन्नासि व अमनन् वत्तखिज़ू

मिम्मक़ामि इब्राही म मुसल्ला व अहिद्ना इला इब्राही म व इस्माई ल अन तह्हि र बैति य लित्ताइफ़ी न वल्आकिफ़ी न वर्रुक्कइस्सुजूदि०
(पारा १०, रुकूअ १५)

तर्जुमा—और (वह वक्त भी ज़िक्र के क़ाबिल है कि) जिस वक़्त हमने ख़ाना-ए-काबा लोगों के लिये (इबादत की जगह और) अम्न मुक़र्रर रखा और मक़ामे इब्राहीम को नमाज़ पढ़ने की जगह बना लिया करो, और हमने हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल (अलैहिमस्सलाम) की तरफ़ हुक्म भेजा कि मेरे (इस) घर को खूब पाक रखा करो बाहरी और मक़ामी लोगों (की इबादत) के वास्ते और रुकूअ (और) सज्दा करने वालों के वास्ते।

ख़ासियत—एक आरिफ़ (अल्लाह वाले) के नौवश्ते (लेख) से नक़ल किया गया है कि इस आयत को अगर सोते वक़्त पढ़े, जिस वक़्त चाहे आंख खुले।

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ ... تُخْلِفُ الْمِيعَادَ

२. इन् न फ़ी ख़ल्क़िस्समावाति……से तुख़्लिफ़ुल्मी आद
(पारा ४, रुकूअ ११)

ख़ासियत—जो शख़्स हमेशा इन आयतों को पढ़ा करे, उस का ईमान क़ायम रहे और अगर लकड़ी के बरतन पर लिखकर और ज़मज़म के पानी से धोकर पिये, जिस वक़्त रात को उठना चाहेगा, उसी वक़्त आंख खुल जायेगी।

१९. क़ब्र के अज़ाब से निजात

पूरी सूरः मुल्क (पारा २९, रुकूअ १)

ख़ासियत—जो शख़्स इस सूरः को हमेशा पढ़ेगा इन्शा अल्लाह तआला वह क़ब्र के अज़ाब से बचा रहेगा।

२०. सफ़र में दिल न घबराये

अल्मुक़ीतु (क़ूवत देने वाले)

ख़ासियत—अगर रोज़ेदार इसको मिट्टी पर पढ़कर या लिख कर इसको तर करके सूंघे तो ताक़त और ग़िज़ाइयत (पौष्टिकता) हासिल हो और अगर मुसाफ़िर कूज़े पर सात बार पढ़ कर फिर उसको लिखकर उसमें पानी पिया करे तो सफ़र की घबराहट से बचा रहे।

दुनिया की ज़रूरतें

१. फल में बरकत

وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ كُلَّمَا رُزِقُوا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِزْقًا قَالُوا هَٰذَا الَّذِي رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ وَأُتُوا بِهِ مُتَشَابِهًا وَلَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ وَهُمْ فِيهَا خَالِدُونَ

१. व बश्शिरिल्लज़ीन आ म नू व अमिलुस्सालिहाति अन न लहुम जन्नातिन तज्री मिन तह्तिहल अन्हारु कुल्लमा रुज़िक़ू मिन हा मिन स म र तिन रिज़्क़न क़ा लू हाज़ल्लज़ी रुज़िक़्ना मिन क़ब्लु व उतू बि ही मुत शाबि हा व ल हुम फ़ी हा अज़्वाजुम्मुतहह र तुं व्व हुम फ़ी हा ख़ालिदून०
(पारा १, रुकूअ ३)

तर्जुमा—और ख़ुशख़बरी सुना दीजिए आप ऐ पैग़म्बर! उन लोगों को जो ईमान लाये और अच्छे काम किये इस बात की कि बेशक बहिश्तें उनके लिये हैं कि चलती होंगी उनके नीचे से नहरें।

जब कभी दिये जायेंगे वे लोग उन बहिश्तों में किसी फल की खूराक तो हर बार यही कहेंगे कि यह तो वही है जो हमको मिला था इससे पहले और मिलेगा भी उनको दोनों बार का फल मिलता-जुलता और उनके वास्ते इन जन्नतों में पाक बीवियां होंगी और वे लोग इन बहिश्तों में हमेशा के लिये बसने वाले होंगे।

आमिलयत—जो पेड़ फलते न हों या कम फलते हों उनको (फलदार) करने के लिये जुमेरात का रोजा रखे और कद्दू से इफ्तार करे (रोजा खोले,) और मग्रिब की नमाज पढ़कर ये आयतें कागज पर लिखे और किसी से बात न करे और उसको लेकर इस बाग के बीच में किसी पेड़ पर लटका दे। अगर उसमें कुछ फल लगा हो तो उससे वरना उसके आस-पास के किसी दरख्त से फल लेकर खाये और उस पर तीन घूंट पानी पिये और चला आये, इन्शा अल्लाह तआला बरकत होगी।

२. हर आफ़त से फ़स्ल की हिफ़ाज़त

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ
الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ فِرَاشًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ الثَّمَرَاتِ
رِزْقًا لَكُمْ فَلَا تَجْعَلُوا لِلَّهِ أَنْدَادًا وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ

१. या अय्युहन्नासुअबुदू रब् ब कुमुल्लज़ी ख ल क कुम वल्लज़ी न मिन क़ब्लिकुम लअल्लकुम तत् त कून० अल्लज़ी जअ ल लकुमुल अर ज़ फ़िराशंव्वस्समा अ बिनाअंव्व अन्ज़ ल मिनस्समाइ माअन् फ़ अख् र ज बिही मिनस्स म राति रिज़्क़ल्लकुम फ़ला तज् अलू लिल्लाहि अन्दादंव्व अन्तुम् तअलमून० (पारा १, रुकूअ ३)

तर्जुमा—ऐ लोगो! इबादत अख्तियार करो अपने परवरदिगार की, जिसने तुमको पैदा किया और उन लोगों को भी जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं, क्या ताज्जुब है कि तुम दोज़ख से बच जाओ। वह ज़ात पाक ऐसी है जिसने बनाया तुम्हारे लिये ज़मीन को फ़र्श और आसमान को छत और बरसाया आसमान से पानी। फिर अदम के पर्दे से तुम्हारी खूराक के लिये फलों को निकाला। अब मत ठहराओ अल्लाह के मुक़ाबिल और तुम तो जानते-बूझते हो।

आमिलयत—बाग, पेड़ और खेत तमाम आफ़तों और बलाओं से बचाने के लिये नहा करके जुमेरात के दिन रोज़ा रखे और जुमा के दिन उस गांव के चारों कोनों पर दो-दो रकअत नफ्ल पढ़े। अव्वल रकअत में अल्हम्दु और वत्तीन और दूसरी में अल्हम्दु और 'अलम् नश्रह लक' और 'लिईलाफ़ि' पढ़े और इसी तरह दो रकअत उस बाग या गांव के बीच में पढ़े फिर एक क़लम ज़ैतून की लकड़ी का बनाकर ज़ाफ़रान से ऊपर ज़िक्र की गयी आयत उसी गांव के किसी पेड़ के हरे पत्ते पर लिखे और ऊद की धूनी दे। उस गांव के सिरे पर जिधर से पानी आता हो, गाड़ दे और दूसरा पत्ता लिखकर उस गांव के खम्भ पर दफ़न कर दे और तीसरा लिखकर किसी ऊंचे दरख्त पर बांध दे, इन्शा अल्लाह तआला हर क़िस्म की आफ़त से महफ़ूज़ रहेगा।

وَهُوَ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيَاحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ حَتَّىٰ إِذَا أَقَلَّتْ
سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنَاهُ لِبَلَدٍ مَيِّتٍ فَأَنْزَلْنَا بِهِ الْمَاءَ فَأَخْرَجْنَا بِهِ مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ
كَذَٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتَىٰ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهُ بِإِذْنِ رَبِّهِ
وَالَّذِي خَبُثَ لَا يَخْرُجُ إِلَّا نَكِدًا كَذَٰلِكَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَشْكُرُونَ

२. व हुवल्लज़ी युर्सिलुर्रिया ह बुश्रम् बै न यदै रह् मति ही हत्ता इ ज़ा अक़ल्लत सहाबन सिक़ालन सुक़्नाहु लि ब ल दिम् मय्यितिन फ़ अन्ज़ल ना बिहिल मा अ फ़ अख्रज्ना बिही मिन कुल्लि स्समराति कज़ा लि क नुख्रिजुल मौता लअल्लकुम

तजक्करून०

वल ब ल दुत्तय्यिबु यख़रुजु न बा तु हू बि इज़्नि रब्बिही वल्लज़ी ख़बु स ला यख़्रुजु इल्ला नकिदा कज़ालि क नु सर्रिफ़ुल आयाति लिक़ौमिय्यश्कुरून० (पारा ८, रुकूअ १४)

तर्जुमा—और वह अल्लाह ऐसा है कि अपनी रहमत की बारिश से पहले हवाओं को भेजता है कि वह खुश कर देती हैं, यहां तक कि जब वे हवाएं भारी बादलों को उठा लेती हैं, तो हम उस बादल को किसी सूखी ज़मीन की तरफ़ ले जाते हैं, फिर उस बादल से पानी बरसाते हैं।

फिर उस पानी से हर क़िस्म के फल निकालते हैं। यों ही हम मुर्दों को निकाल कर खड़ा कर देंगे, ताकि तुम समझो और जो सुथरी धरती होती है उसकी पैदावार खुदा के हुक्म से खूब निकलती है और जो ख़राब है, उसकी पैदावार बहुत कम निकलती है। इसी तरह हम दलीलों को तरह-तरह बयान करते रहते हैं, उन लोगों के लिये जो क़द्र करते हैं।

ख़ासियत—यह आयत पेड़ों को आफ़तों, कीड़ों और सड़ांद और चूहों और तक्लीफ़ देने वाले जानवरों से बचाये रखने के लिये फ़ायदामंद है। ज़ैतून की लकड़ी पर सेब के पानी, ज़ाफ़रान और अगूर के अर्क़ से लिखकर, अगूर के पानी में धोकर, थोड़ा सा पेड़ की जड़ में छोड़ दे और ऊपर से ख़ालिस पानी भर दे, इन्शा अल्लाह उस पेड़ की हालत दुरुस्त हो जायेगी।

बरकत का बोझ या छप्पर गिरने से बचाने के लिये

यह लिखकर बांधा जाये—

إِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ أَنْ تَزُولَا وَلَئِنْ زَالَتَا إِنْ أَمْسَكَهُمَا

مِنْ أَحَدٍ مِّنْ بَعْدِهٖ إِنَّهٗ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ۞ وَلَهٗ مَا سَكَنَ فِي اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۞ وَلَبِثُوا فِي كَهْفِهِمْ ثَلٰثَ مِائَةٍ سِنِينَ وَازْدَادُوا تِسْعًا ۞ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ ۞

१. इन्नल्लाह युम्सिकुस्समावाति वल अर ज़ अन् तज़ू ला० व ल इन ज़ा ल ता इन अम् स क हुमा मिन अ हदिन मिम् बअ्दिही इन्नहू का न हलीमन् ग़फ़ूरा० व लहू मा स क न फ़िल्लैलि वन्नहारि व हुवस्समी उल अलीम० व ल बिसू फ़ी कहफ़िहिम सला स मिअतिन सिनी न वज़्दादू तिस्आ व ला हौ ल व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाहिल अलीयिल अज़ीम०

لَا تُدْرِكُهُ الْأَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْأَبْصَارَ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ

(پاره ۷ رکوع ۱۹)

४. ला तुद्रिकुहुल अब्सारु व हु व युद्रिकुल अब्सा र व हुवल्लतीफ़ुल ख़बीर० (पारा ७, रुकूअ १६)

तर्जुमा—उसको तो किसी की निगाह नहीं पा सकती और वह सब निगाहों को घेर लेता है और वही बड़ा बारीकी जानने वाला और बाख़बर है।

ख़ासियत—इस आयत को अक्सर पढ़ने से तेज़ हवा को सुकून हो जाता है और ज़ालिमों की निगाह से छिपा रहता है।

२. माल, मज़दूरी और खेत में बरकत

اللّٰهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهٖ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْأَنْهٰرَ ۞ وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَائِبَيْنِ وَسَخَّرَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۞ وَآتٰكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا سَأَلْتُمُوهُ وَإِنْ تَعُدُّوا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوهَا إِنَّ الْإِنْسَانَ لَظَلُومٌ كَفَّارٌ ۞ (پاره ۱۳ رکوع ۱۷)

१. अल्लाहुल्लज़ी ख़ ल क़स्समावाति वल अर ज़ व अन्ज़ ल मिनस्समाइ माअन फ़ अख़ र ज बिही मिनस्स म राति रिज़क़ल लकुम व सख़्ख़ र लकुमुल फ़ुल्क लितजरि य फ़िल्बहिर बि अम्रिही व सख़्ख़ र लकुमुल अन्हा र व सख़्ख़ र लकुमुश्शम स वल्क़ म र दाइबैनि व सख़्ख़ र लकुमुल्लै ल वन्नहा र व आताकुम मिन कुल्लि मा स अल्तुमूहु व इन त उद्दू निअ्मतल्लाहि ला तुह्सूहा इन्नल इन्सा न ल ज़लूमुन कफ़्फ़ार० (पारा १३, रुकूअ १७)

तर्जुमा—अल्लाह ऐसा है जिसने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को और आसमान से पानी (यानी मेंह) बरसाया। फिर उस पानी से फलों की क़िस्म से तुम्हारे लिये रोज़ी पैदा किया और तुम्हारे फ़ायदे के लिये कश्ती (और जहाज़) को मसख़्ख़र बनाया कि वह ख़ुदा के हुक्म (व क़ुदरत) से दरिया में चले और तुम्हारे फ़ायदे के वास्ते सूरज और चांद को मुसख़्ख़र बनाया, जो हमेशा चलते ही रहते हैं और तुम्हारे नफ़ा के वास्ते दिन और रात को मुसख़्ख़र (ताबे) बनाया और जो चीज़ तुमने मांगी, तुमको हर चीज़ दी और अल्लाह तआला की नेमत अगर गिनने लगो तो गिनती में नहीं ला सकते (मगर) सच यह है कि आदमी बहुत ही बेइन्साफ़, बड़ा ही नाशुक्रा है।

ख़ासियत—जो शख़्स इसको सुबह-शाम और सोने के वक़्त पढ़ा करे या कहीं जाने के वक़्त पढ़े तो तमाम ज़मीनी और समुद्री आफ़तों से बचा रहे और माल व खेत व मवेशी में बरकत हो।

८. खेत और बाग़ की पैदावार बढ़िया हो

إِنَّ اللَّهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوَىٰ ۖ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ ۖ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ○ (پ ۷، رکوع ۱۸)

१. इन्नल्ला ह फ़ालिक़ुल्हब्बि वन्न वा युख़्रिजुल्हय्य मिनल मय्यिति व मुख़्रिजुल मय्यिति मिनल्हय्यि ज़ालिकुमुल्लाहु फ़ अन्ना तुअ्फ़कून० (पारा ७, रुकूअ १८)

तर्जुमा—बेशक अल्लाह फाड़ने वाला है दाने को और गुठली को, वह जानदार को बेजान से निकाल लाता है और वह बेजान को जानदार से निकालने वाला है। अल्लाह यही है सो तुम कहां उल्टे चले जा रहे हो।

ख़ासियत—खेत के बढ़िया होने और उसकी हिफ़ाज़त के लिये और पेड़ों की पैदावार और बढ़िया फल निकलने के लिये किसी पाक बरतन में ज़ाफ़रान और काफ़ूर से लिखकर और ज़मज़म के कुएं के पानी से धोकर जो बीज या ग़ल्ला बोना हो उसको भिगो कर बोये या वह पानी पेड़ की जड़ में छोड़ा करें। इन्शा अल्लाह तआला बरकत और हिफ़ाज़त होगी और फलों में ख़ूबी और मिठास पैदा होगी।

فَذَبَحُوهَا وَمَا كَادُوا يَفْعَلُونَ ○ (پ ۱، رکوع ۸)

२. फ़ ज़ ब हूहा व मा कादू यफ़्अलून० (पारा १, रुकूअ ८)

ख़ासियत—यह आयत पढ़कर ख़रबूज़ा या और कोई चीज़ काटे तो इन्शा अल्लाह तआला मीठी और लज़ीज़ मालूम होगी।

وَهُوَ الَّذِي أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَأَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ۚ وَمِنَ النَّخْلِ مِن طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَجَنَّاتٍ مِّنْ أَعْنَابٍ وَالزَّيْتُونَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۗ انظُرُوا إِلَىٰ ثَمَرِهِ إِذَا أَثْمَرَ وَيَنْعِهِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكُمْ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ○ (پ ۷، رکوع ۱۸)

३. व हुवल्लज़ी अन्ज़ ल मिनस्समाइ माअन् फ़ अख़्रज्ना बिही नबा त कुल्लि शैइन फ़ अख़्रज्ना मिन्हु ख़ज़िरन् नुख़्रिजु मिन्हु हब्बम् मु त राकिबन् व मिनन्नख़्लि मिन तल्इहा क़िन्वानुन् दानि यतुंव व जन्नातिम मिन अअ्नाबिंव वज़्ज़ैतू न वर्रुम्मा न मुश्तबिहंव व ग़ै र मु त शाबिहिन उन्ज़ुरू इला स म रिही इज़ा अस्म र व यन्इही इन न फ़ी ज़ालिकुम ल आयातिल लिक़ौमिंय युअ्मिनून०

(पारा ७. रुकूअ १६)

खासियत—इस आयत को खजूर की गुठली के गिलाफ़ में जब अव्वल-अव्वल निकले, जुमा के रोज लिख कर सिंचाई के कुएं में डाल दे। उसके पानी में और वह पानी जिस पेड़ या फल में दिया जावे उन सब में बरकत और पाकीज़गी पैदा हो और तमाम जिन्न व इन्सान की बुरी नज़र और सब आफ़तों से बचा रहे।

وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَ جَنَّاتٍ مَّعْرُوشَاتٍ وَغَيْرَ مَعْرُوشَاتٍ وَالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا أُكُلُهُ وَالزَّيْتُونَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَغَيْرَ مُتَشَابِهٍ كُلُوا مِن ثَمَرِهِ إِذَا أَثْمَرَ وَآتُوا حَقَّهُ يَوْمَ حَصَادِهِ وَلَا تُسْرِفُوا إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ

४. व हुवल्लज़ी अन्शा अ जन्नातिम् मअ़रूशातिंव व ग़ैर मअ़रूशातिंव वन्नख़्ल वज़्ज़र अ मुख़्तलिफ़न उकुलुहू वज़्ज़ैतू न वर्रुम्मा न मु त शा बिहंव व ग़ै र मु त शाबिहिन् कुलू मिन स म रिही इ ज़ा अस्म र व आतू हक़्क़ हू यौ म ह सा दिही व ला तुस्रिफ़ू इन्नहू ला युहिब्बुल मुस्रिफ़ीन० (पारा ८, रुकूअ ४)

खासियत—इस आयत को 'जैतून' की तख़्ती पर लिख कर बाग के दरवाज़े पर लगाये तो खूब फल पैदा हो और अगर भेड़ के बनाये चमड़े पर लिख कर जानवर के गले में बांध दिया जाए तो तमाम आफ़तों से बचा रहे।

الٓمٓرٰ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ وَالَّذِي أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ الْحَقُّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ اللَّهُ الَّذِي رَفَعَ السَّمَاوَاتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى يُدَبِّرُ الْأَمْرَ يُفَصِّلُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُم بِلِقَاءِ رَبِّكُمْ تُوقِنُونَ وَهُوَ الَّذِي مَدَّ الْأَرْضَ وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْهَارًا وَمِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ جَعَلَ فِيهَا زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ يُغْشِي اللَّيْلَ النَّهَارَ

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ

५. अलिफ़ लाम् मीम् रा तिल्क आयातुल्किताबि वल्लज़ी उन्ज़ि ल इलै क मिर्रब्बि कल्हक़्क़ु व ला किन्न अक् सरन्नासि ला युअ्मिनून० अल्लाहुल्लज़ी र फ़ अस्समावाति बिग़ैरि अ म दिन तरौ न हा सुम्मस्त वा अ़लल्अ़र्शि व सख़्ख़रश्शम्स वल्क़मर कुल्लुंय्यजरी लि अ ज लिम्मुसम्मन युदब्बिरुल्अम्र युफ़स्सिलुल् आयाति लअ़ल्लकुम बिलिक़ाइ रब्बि कुम तूक़िनून०व हु वल्लज़ी मद्दल अर्ज़ व ज अ ल फ़ी हा रवासि य व अन्हारा व मिन्कुल्लिस्समराति ज अ ल फ़ी हा ज़ौ जै निस् नैनि युग़्शिल्लै लन्नहा र इन्न फ़ी ज़ालि क ल आया-तिल्लि क़ौमिंय्यतफ़क्करून० (पारा १३, रुकूअ ७)

खासियत—बागों व मकानों व मिल्कियतों व दुकानों की आबादी और तिजारत की तरक़्क़ी के लिये इन आयतों को 'जैतून' के चार पत्तों पर लिख कर मकान या दुकान या बाग के चारों कोनों में दफ़न कर दे, बहुत तरक़्क़ी और आबादी हो।

ज़मीन और पेड़ सींचने का अमल

एक ठीकरी पर यह आयत—

وَفَجَّرْنَا الْأَرْضَ عُيُونًا فَالْتَقَى الْمَاءُ عَلَىٰ أَمْرٍ قَدْ قُدِرَ

'व फ़ज्जर्नल अर्ज़ उयूनन् फ़ल्तक़ल्मा उ अ़ ला अम्रिन् क़द क़ुदिर' लिख कर और आंख बन्द करके वह ठीकरी उस ज़मीन पर डाल दो कि उसके गिरने की जगह नज़र न आये, इन्शा अल्लाह तआ़ला बारिश होगी।

तजुर्बा—बनी हाशिम में से एक शख़्स का कौल है कि मैंने सूरः फ़ातिहा तमाम व कमाल लिखी और 'मालिकि यौमि-द्दीन' सात बार लिखा और उसको ऐसे पेड़ों में छिड़का जो कई साल

से बे फल-पत्ते हो गये थे। ख़ुदा-ए-तआला के फ़ज़्ल से बहुत ही जल्दी उसमें पत्ते आ गये और फल आने लगे।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُم مِّنْ أَرْضِنَا أَوْ لَتَعُودُنَّ فِي مِلَّتِنَا
فَأَوْحَىٰ إِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظَّالِمِينَ ۝ وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْأَرْضَ مِن بَعْدِهِمْ ذَٰلِكَ
لِمَنْ خَافَ مَقَامِي وَخَافَ وَعِيدِ ۝ وَاسْتَفْتَحُوا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ
مِّن وَرَائِهِ جَهَنَّمُ وَيُسْقَىٰ مِن مَّاءٍ صَدِيدٍ ۝ يَتَجَرَّعُهُ وَلَا يَكَادُ يُسِيغُهُ وَيَأْتِيهِ الْمَوْتُ
مِن كُلِّ مَكَانٍ وَمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ۝ وَمِن وَرَائِهِ عَذَابٌ غَلِيظٌ

८. व क़ालल्लज़ी न क फ़ रू लिरुसुलिहिम लनुख़रि-जन्नकुम मिन अर्ज़ि ना औ ल तऊदुन्न फ़ी मिल्लतिना फ़ औ हा इलै-हिम रब्बुहुम ल नुह लिकन्नज़्ज़ालिमीन० व ल नुस कि नन्न कुमुल अर्ज़ मिम् बअ्दिहिम ज़ालि क लिमन् ख़ा फ़ मक़ामी व ख़ा फ़ वईद० वस्तफ़्तहू व ख़ा ब कुल्लु जब्बारिन अनीदिम् मिव्व राइही जहन्नमु व युस्क़ा मिम्माइन सदीदिय्य त जर्र अुहू व ला य का दु युसी ग़ुहू व यातीहिल्मौतु मिन कुल्लि मकानिव्व मा हु व बिमय्यित० व मिव्व-राइही अज़ाबुन् ग़लीज़०   (पारा १३, रुकूअ १५)

ख़ासियत—जिसके खेत में कीड़ा या चूहा लग गया हो, जैतून की चार तख़्तियों पर स्याही से इन आयतों को बुध की सुबह के वक़्त सूरज निकलने से पहले लिख कर एक-एक कोने में एक-एक तख़्ती दफ़न कर दे और गाड़ते वक़्त इन आयतों को बार-बार पढ़े, इन्शा अल्लाह तआला सब तक्लीफ़ पहुंचाने वाले जानवर भाग जायेंगे।

६. सूरतुलमुजादल: (पारा २८)

ख़ासियत—मरीज़ के पास पढ़ने से उसको नींद और सुकून आये और अगर काग़ज़ पर लिख कर ग़ल्ले में रख दे तो उसमें कोई ख़िसारा न हो।

ذَٰلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ

१०. ज़ालि क फ़ज़्लुल्लाहि यूतीहि मंय्यशाउ वल्लाहु ज़ुल फ़ज़्लिल अज़ीम०   (पारा २८, रुकूअ ११)

मतलब—यह (रसूल सल्ल० के ज़रिए गुमराही से निकल कर हिदायत की तरफ़ आना) ख़ुदा का फ़ज़्ल है। वह फ़ज़्ल जिसको चाहता है, देता है और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है।

ख़ासियत—सीपी के टुकड़े पर जुमा के रोज़ लिख कर माल या अस्बाब में रखने से बरकत व हिफ़ाज़त रहे।

११. सूरतुत्तत्फ़ीफ़ (पारा ३०) (वैलुल्लिल्मुतफ़्फ़िफ़ीन)

ख़ासियत—किसी इकट्ठा की हुई चीज़ पर पढ़ दे तो दीमक वग़ैरह से बचा रहे।

१२. सूरतुत्तीन (पारा ३०) (वत्तीन)

ख़ासियत—ग़ल्ला की कोठरी में पढ़ कर दम करने से बर-कत हो और नुक़सान पहुंचाने वाले जानवरों से हिफ़ाज़त रहती है।

५. जानवर का दूध और कुएं का पानी बढ़ जाये

ثُمَّ قَسَتْ قُلُوبُكُم مِّن بَعْدِ ذَٰلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ أَوْ أَشَدُّ قَسْوَةً ۚ
وَإِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْأَنْهَارُ ۚ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَاءُ ۚ
وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ ۗ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ

सुम्म क़सत क़ुलूबुकुम मिम् बअ्दि ज़ालि क फ़हि य कल्हिजारति औ अशद्दु क़स्व: व इन्न मिनल्हिजारति ल मा यतफ़ज्जरु मिन्हुल् अन्हारु व इन्न मिन्हा लमा यश्शक़्क़क़ु फ़ यख़रुजु मिन्हुल्माउ व इन्न

मिन्हा ल मा यह्बितु मिन ख़श्यतिल्लाहि व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन अम्मा तअ्मलून०

(पारा १, रुकूअ ६)

ख़ासियत—अगर गाय या बकरी का दूध घट जाये तो कोरे तांबे के बर्तन के में इस आयत को लिख कर और पानी से धोकर उस जानवर को पिलाया जाये, इन्शा अल्लाह दूध बढ़ जायेगा। अगर कुएं या नहर या चश्मे का पानी घट जाये तो यह आयत ठीकरी पर लिख कर उसमें डाल दे।

६. दुश्मन के बाग़ की बर्बादी

१. सूरतुन्नह्ल (पारा १४)

ख़ासियत—अगर इसको लिख कर किसी बाग़ में रख दे तो तमाम पेड़ों का फल जाता रहे और जो किसी मज्मे में रख दे, सब बर्बाद और तबाह हो जायें।

७. कारोबार में तरक़्क़ी

إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُم بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ وَيُقْتَلُونَ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرَاةِ وَالْإِنجِيلِ وَالْقُرْآنِ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ مِنَ اللَّهِ فَاسْتَبْشِرُوا بِبَيْعِكُمُ الَّذِي بَايَعْتُم بِهِ وَذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ (پ ١١ ع ٣)

१. इन्नल्लाहश्तरा मिनल्मोमिनी न अन्फ़ुसहुम व अम्वा ल हुम बिअन्न लहुमुल् जन्न: युक़ातिलू न फ़ी सबीलिल्लाहि फ़यक़्तुलू न व युक़तलू न व अ दन् अलैहि हक़्क़न् फ़ित्तौराति वल्इन्जीलि वल्क़ुरआनि व मन् औफ़ा बिअह्दिही मिनल्लाहि फ़स्तब्शिरू बिबैइकुमुल्लज़ी बा यअ्तुम बिही० व ज़ालि क हु वल्फ़ौज़ुल अज़ीम०

(पारा ११, रुकूअ ३)

तर्जुमा—बेशक अल्लाह तआला ने मुसलमानों से उनकी जानों और मालों को इस बात के बदले ख़रीद लिया है कि उनको जन्नत मिलेगी। वे लोग अल्लाह की राह में लड़ते हैं, जिसमें क़त्ल करते हैं और क़त्ल किये जाते हैं। इस पर सच्चा वायदा किया गया है तौरात में और इन्जील में और क़ुरआन में और (यह मुसल्लम है कि) अल्लाह से ज़्यादा अपने वायदे को कौन पूरा करने वाला है तो तुम लोग अपनी इस बैअ पर जिस का तुमने (अल्लाह तआला से) मामला ठहराया है, ख़ुशी मनाओ और यह बड़ी कामियाबी है।

ख़ासियत—इन आयतों को लिख कर तिजारत के माल में रख तो बेहतरी और तरक़्क़ी की वजह होगी।

२. जो शख़्स आयतल्कुर्सी को लिख कर तिजारत के माल में रखा करे, शैतान के वस्वसे और सरकश शैतानों के मक्र और ईज़ा (तकलीफ़) से बचा रहे और फ़क़ीर से ग़नी हो जाए और इस तरह रोज़ी मिले कि उसको गुमान भी न हो और जो इसको सुबह व शाम और घर में आते वक़्त और बिस्तर पर लेटने के वक़्त हमेशा पढ़ा करे, तो चोरी और डूबने और जलने से बचा रहे और तन्दुरुस्ती नसीब हो।

قُلْ إِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۝ (پ ٣ ع ١٦)

१. क़ुल इन्नल्फ़ज़्ल बियदिल्लाहि यूतीहि मय्यशा उ वल्लाहु वासिउन अलीम० यख़्तस्सु बिरह्मतिही मय्यशा उ वल्लाहु ज़ुल्फ़ज़्लिल अज़ीम०

(पारा ३, रुकूअ १६)

तर्जुमा—(ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम!) आप कह दीजिए कि बेशक फ़ज़्ल तो ख़ुदा के क़ब्ज़े में है, वह इसको जिसे चाहे अता फ़र्मायें और अल्लाह तआला बड़ी वुसअत वाले हैं, ख़ूब

जानने वाले हैं, खास कर देते हैं अपनी रहमत जिसको चाहें और अल्लाह तआला बड़े फ़ज़्ल वाले हैं।

खासियत—जुमेरात के रोज़ वुज़ू के साथ किसी क़िस्मती आदमी के कुरते के टुकड़े पर इस आयत को दुकान या मकान या ख़रीद व फ़रोख़्त की जगह में लटकाये, ख़ूब आमदनी हो।

४. **खीणाद**—और उस काग़ज़ को लिखकर किसी बेकार आदमी के बाज़ू पर बांध दिया जाए, बाकार बन जाए या जिसने कहीं निकाह का पैग़ाम भेजा हो, उसके बाज़ू पर बांध दिया जाए, उसका पैग़ाम मन्ज़ूर हो जाए।

المر تلك آيات الكتاب والذي أنزل إليك من ربك الحق ولكن
أكثر الناس لا يؤمنون ○ الله الذي رفع السماوات بغير عمد ترونها ثم استوى
على العرش وسخر الشمس والقمر كل يجري لأجل مسمى يدبر الأمر يفصل
الآيات لعلكم بلقاء ربكم توقنون ○ وهو الذي مد الأرض وجعل فيها رواسي
وأنهارا ومن كل الثمرات جعل فيها زوجين اثنين يغشي الليل النهار
إن في ذلك لآيات لقوم يتفكرون ○

५. अलिफ़-लाम्-मीम-रा० तिल्क आयातुल्किताबि वल्लज़ी उन्ज़िल इलै क मिर्रब्बिकल्हक़्क़ु व ला किन्न अक्सरन्नासि ला यूमिनून० अल्लाहुल्ल ज़ी र फ़ अस्समावाति बिग़ैरि अ म दिन तरौ न हा सुम्मस्त वा अलल अर्शि व सख़्ख़ रश्शम स वल्क़म र कुल्लु य्यज्री लि अ जलिम मुसम्मा युदब्बिरुल अम् र युफ़स्सिलुल आयाति लअल्लकुम बिलिक़ाइ रब्बिकुम तूक़िनून० व हुवल्लज़ी मद्दल अर ज़ व ज अ ल फ़ीहा रवासि य व अन्हारा० व मिन् कुल्लिस् स राति ज अ ल फ़ीहा ज़ौ जै निस्नै नि युग़शिल्लै लन् न हार इन्न फ़ी ज़ालि क ल आ यातिल लिक़ौमि य्यत फ़क्करून० (पारा १३, रुकूअ ७)

खासियत—बाग़ों की और तिजारत की तरक़्क़ी के लिए इन आयतों को ज़ैतून के चार पत्तों पर लिखकर मकान, दुकान या बाग़ के चारों कोनों में दफ़्न कर दे, बहुत तरक़्क़ी और आबादी हो।

६. अलहलीमु (बुर्दबार)

खासियत—अगर रईस आदमी इसको ज़्यादा से ज़्यादा पढ़े, उसकी सरदारी ख़ूब जमे और राहत से रहे और अगर काग़ज़ पर लिखकर पानी से धोकर अपने पेशे के आलों और औज़ारों पर मले तो इस पेशे में बरकत हो। अगर कश्ती हो, डूबने से बची रहे। अगर जानवर हो हर आफ़त से बचा रहे।

قالوا ادع لنا ربك يبين لنا ما هي قال إنه يقول إنها بقرة لا فارض
ولا بكر عوان بين ذلك فافعلوا ما تؤمرون ○ قالوا ادع لنا ربك يبين لنا
ما لونها قال إنه يقول إنها بقرة صفراء فاقع لونها تسر الناظرين ○ قالوا ادع لنا ربك
يبين لنا ما هي إن البقر تشابه علينا وإنا إن شاء الله لمهتدون ○

७. क़ालुद्उ ल ना रब्ब क युबय्यिल ल ना माहि य क़ा ल इन्न हू यक़ूलु इन्न हा ब क़ र तुन् ला फ़ारिज़ुंव्व ला बिकरुन अवा-नुम् बैन ज़ालि क फ़फ़ अ लू मा तुअ्मरून० क़ा लु द् उ ल ना रब्ब क युबय्यिल ल ना मा लौनु हा क़ा ल इन्न हू यक़ूलु इन्नहा ब क़ रतुन सफ़रा उ फ़ाक़िउल्लौनु हा तसुर्रुन्नाज़िरीन० क़ालुद्उ ल ना रब्ब क युबय्यिल ल ना माहिय० इन्नल ब क़ र तशाब ह अ लैना व इन्ना इन्शा अल्लाहु ल मुह्तदून० (पारा १, रुकूअ ८)

खासियत—जो शख़्स कोई जानवर या लिबास या मेवा या और कोई चीज़ ख़रीदना चाहे और उसको मंज़ूर हो कि अच्छी चीज़ मिले तो उस चीज़ के देखने-भालने के वक़्त इन आयतों को पढ़ता रहे। इन्शा अल्लाह तआला मनचाही चीज़ मिले।

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُغْشِي اللَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهُ حَثِيثًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُومَ مُسَخَّرَاتٍ بِأَمْرِهِ ۗ أَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ ۗ تَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ○

८. इन रब्बकुमुल्लाहु ल्लज़ी ख ल क स्समावाति वल अर ज़ि फ़ी सित्तति अय्यामिन सुम्मस्त वा अलल् अर्शि युग़्शिल् लैलन् न हा र य त लुबुहू हसीसव्व श्शम स व ल क़ म र वन्नुजू म मुसख़्ख़ रातिम बि अम्‌रिही अला ल हु ल ख़ल्क़ु वलअम्रु तबारकल् लाहु रब्बुल् आ ल मीन०

(पारा ८, रुकूअ १४)

ख़ासियत—अगर यह आयत सूरः बराअत की आख़िरी आयतों के साथ मकान, दुकान या अस्बाब व माल पर पढ़ दी जाए तो हर तरह की हिफ़ाज़त रहे।

८. मज़दूर की मुश्किल आसान हो

الْآنَ خَفَّفَ اللَّهُ عَنكُمْ وَعَلِمَ أَنَّ فِيكُمْ ضَعْفًا ۚ فَإِن يَكُن مِّنكُم مِّائَةٌ صَابِرَةٌ يَغْلِبُوا مِائَتَيْنِ ۚ وَإِن يَكُن مِّنكُمْ أَلْفٌ يَغْلِبُوا أَلْفَيْنِ بِإِذْنِ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ ○

अल्आ न ख़फ़्फ़फ़ल्लाहु अन्कुम व अलि म अन्न फ़ी कुम ज़अ् फ़ा फ़ इंय्यकुम् मिन्कुम मि अतुन् साबिरतुं य ग़् लिबू मि अतैनि व इंय्यकुम् मिन्कुम अल्फ़ुंय्यग़लिबू अल्फ़ैनि बिइज़्निल्लाहि वल्लाहु म अस्साबिरीन०

(पारा १०, रुकूअ ५)

ख़ासियत—बोझ उठाने वाले और मुश्किल काम करने वाले अगर इस आयत को जुमा की अस्र से शुरू करके अगले जुमे की नमाज़ पर ख़त्म करें, पांचों नमाज़ों के बाद और कामों से फ़ारिग़ होने के बाद पढ़ा करें, तो काम में तख़्फ़ीफ़ और आसानी हर क़िस्म की हासिल हो।

९. बला व मुसीबत से नजात हासिल होना

حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ ○ (پ ۴ ع ۹)

हस्बुनल्लाहु व नेअ्मल वकील, (पारा ४, रुकूअ ६)

तर्जुमा—हमको हक़ तआला काफ़ी है और वही सब काम सुपुर्द करने के लिये अच्छा है।

ख़ासियत—जो कोई किसी मुसीबत और बला में मुब्तला हो इस आयत को पढ़ा करे, इन्शा अल्लाह तआला उसकी मुसीबत जाती रहेगी।

أَنِّي مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَأَنتَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ○ (پ ۱۷ ع ۶)

१. अन्नी मस्सनियज़्ज़ुर्रु व अन् त अर्हमुर्राहिमीन०

(पारा ७, रुकूअ ६)

तर्जुमा—मुझको यह तक्लीफ़ पहुंच रही है और आप सब मेहरबानों से ज़्यादा मेहरबान हैं।

ख़ासियत—बला और मुसीबत के वक़्त पढ़ें, इन्शा अल्लाह तआला नजात होगी।

१०. दुआ क़बूल होने के लिये

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَآيَاتٍ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ ○ الَّذِينَ يَذْكُرُونَ اللَّهَ قِيَامًا وَقُعُودًا وَعَلَىٰ جُنُوبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُونَ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هَٰذَا بَاطِلًا سُبْحَانَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ○ رَبَّنَا إِنَّكَ مَن تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ أَخْزَيْتَهُ ۖ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنصَارٍ ○ رَّبَّنَا إِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُنَادِي لِلْإِيمَانِ أَنْ آمِنُوا بِرَبِّكُمْ فَآمَنَّا ۚ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّئَاتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْأَبْرَارِ ○ رَبَّنَا وَآتِنَا مَا وَعَدتَّنَا عَلَىٰ رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيعَادَ ○ فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ أَنِّي لَا أُضِيعُ عَمَلَ

[illegible]

इन्न फ़ी ख़ल्क़िस्समावाति वल्अर्ज़ि वख़्तिलाफ़िल्लैलि वन्नहारि लिआयातिल् लिउलिल् अल्बाबि० अल्लज़ी न यज़्कुरू नल्ला ह क़ियामंव्व क़ुऊदंव्व अ ला जुनूबिहिम व य त फ़क्करू न फ़ी ख़ल्क़िस्समावाति वल् अर्ज़ि रब्ब ना मा ख़ लक़ त हा ज़ा बातिलन सुब्हा न क फ़ क़िना अज़ाबन्नारि० रब्ब ना इन्न क मन तुद ख़िलिन्ना र फ़ क़द अख़्ज़ैतहू व मा लिज़्ज़ालिमी न मिन अन्सा र० रब्बना इन्न ना समे अ् ना मुनादियंय्युनादी लिल् ईमानि अन् आमिनू बिरब्बिकुम फ़ आमन्ना रब्ब ना फ़ग् फ़ि र ल ना ज़ुनूबना व कफ़्फ़िर अन्ना सय्यि आतिना व तवफ़्फ़ना मअल् अब्रारि० रब्ब ना व आति ना मा व अत्त ना अला रुसुलि क व ला तुख़्ज़ि ना यौमल क़ियाम ति इन्न क ला तुख़्लिफ़ु ल मीआदि० फ़स्तजा ब लहु म रब्बु हुम अन्नी ला उज़ीअु अ म ल आमिलिम मिन्कुम मिन ज़ क रिन औ उन्सा बअ्ज़ुकुम मिम् बाज़िन फ़ल्ल ज़ी न हा ज रू व उख़्रि जू मिन दियारिहिम व ऊ ज़ू फ़ी सबीली व क़ातिलू व क़ुतिलू ल उकफ़्फ़िरन्न

[illegible] अन्हुम सय्यिआतिहिम व ल उद्ख़िलन्न हुम जन्नातिन तज्री मिन [illegible] हु ल अन्हारु सवाबम् मिन अन्दिल्लाहि वल्लाहु इन्द हू हुस्नु-[illegible]० ला यग़ुर्रन्न क तक़ल्लुबु ल्लज़ी न क फ़ रू फ़िल् बिलादि [illegible] क़लीलुन् सुम् म मा वाहुम जहन्न मु व बिअ्सल मिहादु० [illegible] रब्बहुम लहुम जन्नातुन तज्री मिन तह्तिहल [illegible] ख़ालिदी न फ़ी हा नु ज़ु ल म मिन अिन्दिल्लाहि व मा अिन्द-[illegible] ख़ैरुल लिल् अब्रारि० व इन्न मिन अह्लिल् किताबि लमं-[illegible] बिल्लाहि व मा उन्ज़ि ल इलैकुम व मा उन्ज़ि ल इलैहिम [illegible] लिल्लाहि ला यश्तरू न बि आयातिल्लाहि स म न न क़लीलन [illegible] लहुम अज्रुहुम इन्द रब्बिहिम इन्नल्ला ह सरीउल हिसाब० या अय्युहल्लज़ी न आम नू स्बिरू व साबिरू व राबितू [illegible] ल्ला ह ल अल्लकुम तुफ़ लि हून० (पारा ४, रुकूअ १०)

[illegible]—रसूले मक़बूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम [illegible] की नमाज़ के बाद इस रुकूअ को पढ़ा करते थे, इससे बढ़ [illegible] और क्या फ़ज़ीलत होगी कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व [illegible] इसको पढ़ा करते थे। इसको उस वक़्त पढ़ कर जो दुआ मांगे [illegible] अल्लाह तआला पूरी होगी।

[illegible]

[illegible] आयतुन क़ा लू लन नु मि न हत्ता नूता [illegible] रुसुलुल्लाहि अल्लाहु आल मु है सु यज्अलु रिसा ल [illegible] (पारा ८, रुकूअ २)

[illegible]—और जब इनको कोई आयत पहुंचती है तो कहते हैं कि हम [illegible] ईमान नहीं लायेंगे जब तक कि हम को भी ऐसी ही [illegible] जो अल्लाह के रसूलों को दी जाती है, इस मौक़े को [illegible] ही ख़ूब जानता है।

ख़ासियत—जहां पैग़ाम भेजना हो, इन दो आयतों में लफ़्ज़ अल्लाह का दो जगह मिला हुआ आया है। जो शख़्स इन दोनों लफ़्ज़ अल्लाह के दर्मियान दुआ मांगे इन्शाअल्लाह तआला वह जल्द क़ुबूल हो जाए।

[illegible]

[illegible]

३. फ़क़ुल्तुस् तग़्फ़िरू रब्ब कुम इन्नहू का न ग़फ़्फ़ारंय् युर्सिलिस्समाअ अलैकुम मिद्रारंव्व युम्दिद् कुम बिअम्वालिंव्व बनी न व यज्अल् लकुम जन्नातिंव्व यज्अल्लकुम अन्हारा०

(पारा २९, रुकूअ ६)

तर्जुमा—और मैंने कहा कि तुम अपने परवरदिगार से गुनाह माफ़ बख़्शवाओ, बेशक वह बड़ा माफ़ करने वाला है। तुम पर ज़्यादा बारिश भेजेगा और तुम्हारे माल और औलाद में तरक़्क़ी देगा और तुम्हारे लिए बाग़ लगा देगा और तुम्हारे लिए नहरें बहा देगा।

ख़ासियत—कुछ लोग हसन बसरी रहमतुल्लाह अलैहि के पास आये। किसी ने पानी न बरसने की शिकायत की और किसी ने औलाद न होने की शिकायत की और किसी ने दूसरी ज़रूरत के लिए कहा। आपने सब के जवाब में फ़रमाया कि इस्तग़फ़ार किया करो। एक शख़्स ने पूछा कि हज़रत! इसकी क्या वजह कि आपने सबको इस्तग़फ़ार ही के लिए फ़र्माया है। आपने जवाब में इन तीनों आयतों को पढ़ा और फ़रमाया कि देखो, अल्लाह तआला ने अपने कलाम पाक में इसी को इर्शाद फ़रमाया है।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

४. अल्लाहु ला इला ह इल्ला हुवल्हय्युल् क़य्यूमु ला ता खुज़ु हू सि न तुंव व ला नौमुन लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल अर्ज़ि मन ज़ल्लज़ी यश फ़उ इन्द हू इल्ला बिइज़्निही यअ़लमु मा बैं न ऐदीहिम व मा ख़ल्फ़ हुम व ला युहीतू न बिशैइम मिन् इल्मिही इल्ला बि मा शा अ व सि अ कुर्सिय्यु हुस्स मा वाति वल्अर्ज़ि व ला यऊदुहू हिफ़्ज़ुहुमा व हु व ल अली युल् अज़ीम० (पारा ३, रुकूअ २)

तर्जुमा—अल्लाह (ऐसा है कि) उसके सिवा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं। ज़िंदा है, संभालने वाला है, न उसको ऊंघ दबा सकती है और न नींद। उसी के ममलूक हैं सब, जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है। ऐसा कौन शख़्स है जो उसके पास सिफ़ारिश कर सके, बिना उसकी इजाज़त के। वह जानता है उनके तमाम हाज़िर व ग़ायब हालात को और वह मौजूदात उसके मालूमात में से, किसी चीज़ को अपने इल्म के अहाते में नहीं ला सकते, मगर जिस क़दर चाहे, उसकी कुर्सी ने तमाम ज़मीनों और आसमानों को अपने घेरे में ले रखा है और अल्लाह तआला को इन दोनों की हिफ़ाज़त कुछ गरां नहीं गुज़रती। वह आलीशान है।

ख़ासियत—जुमा के रोज़ नमाज़ अस्र के बाद तन्हाई में [illegible] बार पढ़ने से क़ल्ब (दिल) में अजीब कैफ़ियत पैदा होगी। इस हालत में जो दुआ करे क़ुबूल हो।

१. अस्समीउ (सुनने वाले)

ख़ासियत—जुमेरात के रोज़ नमाज़ चाश्त के बाद सात सौ मर्तबा पढ़ कर जो दुआ करे क़ुबूल हो।

२. अलमुजीबु (क़ुबूल करने वाले)

ख़ासियत—दुआ के साथ इसका ज़िक्र करना दुआ की क़बूलियत की वजह है।

११. ज़रूरत पूरी होना

१. सूरः यासीन

अमल—जिस ज़रूरत के लिए ४१ बार पढ़ें, वह पूरी हो, ख़ौफ़ज़दा हो अम्न में हो जाये, बीमार हो बीमारी से अच्छा हो जाये, या भूखा हो पेट भर जाये।

दीगर—सूरः यासीन में चार जगह लफ़्ज़ 'अर्रहमान' आया है और तीन जगह लफ़्ज़ अल्लाह और इसी तरह सूरः 'तबारकल्लजी' में, बस जो शख़्स सूरः यासीन पढ़े और जहां लफ़्ज़ रहमान आये दाहिने हाथ की एक उंगली बन्द कर ले और जहां लफ़्ज़ अल्लाह आए, बायें हाथ की उंगली बन्द कर ले, यहां तक कि सूरः के ख़त्म पर दाहिने हाथ की चार उंगलियां बन्द हो जायेंगी और बायें हाथ की तीन उंगलियां, फिर सूरः तबारकल्लजी पढ़े और लफ़्ज़ रहमान पर दाहिने हाथ की एक उंगली खोल दे और लफ़्ज़ अल्लाह पर बायें हाथ की उंगली खोल दे। उसकी तमाम ज़रूरतें पूरी हों और दुआयें क़बूल हों और उंगलियों का खोलना-बन्द करना कन् उंगलियों से शुरू होगा।

२. पूरी सूरः अन्आम (पारा ७)

ख़ासियत—जिस मुहिम और ग़रज़ के लिए चाहे इस सूरः को पढ़कर दुआ करे, इन्शा अल्लाह तआला पूरी होगी।

३. नून और जितने मुक़त्तआत क़ुरआन शरीफ़ में हैं।

ख़ासियत—इन सब को अंगूठी पर खुदवा कर जो शख़्स अपने पास रखेगा तो इन्शाअल्लाह तआला उसकी सब ज़रूरतें पूरी होंगी और ख़ैर व ख़ूबी से बसर होगी।

[illegible]

४. बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम को बारह हज़ार बार इस तरह पढ़े कि जब एक हज़ार बार हो जाए, दो रकअत पढ़कर अपनी ज़रूरत के वास्ते दुआ करे, फिर पढ़ना शुरू करे, एक हज़ार के बाद फिर इसी तरह दो रकअत पढ़े, ग़रज़ इस तरह बारह हज़ार मर्तबा ख़त्म करे, इन्शा अल्लाह उसकी ज़रूरत पूरी होगी।

५. अल्मुल्कु के हर्फ़ जुदा-जुदा इस तरह लिखे अलिफ़ लाम मीम लाम काफ़ और हर रोज़ दर्मियान के हर्फ़ यानी मीम को चालीस बार यह आयत पढ़ता हुआ देखे। अल्लाह तआला दुनिया व आख़िरत के सामान उसके लिए दुरुस्त फ़रमायें और सब हाजतें पूरी फ़रमायें।

[illegible]

[illegible]

६. क़ हुम् तआली क़ कुल हस्बियल्लाहु ला इला ह इल्ला हु व अलैहि तवक्कल्तु व हु व रब्बुल अर्शिल अज़ीम०

(पारा ११, रुकूअ ५)

ख़ासियत—हज़रत अबू दर्दा रज़ि० से मन्क़ूल है कि जो शख़्स इस आयत को हर रोज़ सौ बार पढ़े, तमाम मुहिम्माते दुनिया व आख़िरत के लिए उसको काफ़ी है, और एक रिवायत में है कि वह शख़्स गिर पड़ने, डूब मरने, सख़्त चोट लगने से न मरेगा। लैस बिन सअद से मन्क़ूल है कि किसी शख़्स की रान में चोट लग गई थी, जिस से हड्डी टूट गई थी। कोई शख़्स उसके ख़्वाब में आया और कहा कि जिस जगह में दर्द है, उस जगह अपना हाथ रखकर यह आयत पढ़े, उसकी रान अच्छी हो गई और उसकी ख़ासियत यह भी है कि इसको लिखकर, बांध कर जिस हाकिम के रूबरू जिस काम के लिए जाये वह उसकी हाजत ख़ुदा के हुक्म के साथ पूरी करे।

७. दूसरा तरीक़ा—मुहम्मद बिन ख़त्तीबिया से नक़ल किया गया है कि मैंने इमाम शाफ़ई की किताब में उनके हाथ का लिखा हुआ देखा कि यह नमाज़ हाजत है हज़ार हाजत के वास्ते। हज़रत ख़िज़्र ने किसी आबिद को सिखाई थी। दो रक्अत नफ़्ल पढ़े, अव्वल में सूरः फ़ातिहा एक बार और क़ुल या अय्युहल् काफ़िरू न दस बार। दूसरी रक्अत में सूरः फ़ातिहा एक बार और क़ुल हुवल्लाहु ग्यारह बार, फिर सलाम फेर कर सज्दा में जाये और इसमें दस बार—

سبحان الله والحمد لله ولا اله الا الله
والله اكبر ولا حول ولا قوة الا بالله العلي العظيم۔

सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि व ला इला ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर व ला हौल व ला क़ुव्व त इल्ला बिल्लाहिल् अलीयिल अज़ीम और दस बार—

ربنا اتنا في الدنيا حسنة وفي الاخرة حسنة وقنا عذاب النار۔

रब्ब ना आति ना फ़िद्दुन्या हस न त व्व फ़िल आख़ि रति हस न तंव्व क़िना अज़ाबन्नारि' पढ़ कर अपनी ज़रूरत मांगे। हकीम अबुल क़ासिम फ़रमाते है कि मैंने उस आबिद के पास क़ासिद भेजा कि मुझ को यह नमाज़ सिखलाइए। उन्होंने बतला दी। मैंने पढ़कर इल्म व हिक्मत की दुआ की। अल्लाह तआला ने अता फ़रमाया और हज़ार ज़रूरतें मेरी पूरी फ़रमाईं।

हकीम साहब फ़रमाते है कि जो शख़्स इस नमाज़ को पढ़ना चाहे, जुमा की रात में नहाए, पाक कपड़े पहने और आख़िर में ज़रूरत पूरी करने की नीयत से पढ़े, इन्शा अल्लाह वह ज़रूरत पूरी हो।

८. ज़रूरत पूरी होने के अमल

इब्ने सीरीन रहमतुल्लाह अलैहि से नक़ल किया गया है कि हम

[illegible] सफ़र में थे। एक नहर पर ठहरना हुआ। लोगों ने डराया कि [illegible] आते है। मेरे सब साथी वहां से चल दिए, मगर चूंकि मैं [illegible] हिफ़्ज़ पढ़ा करता था, इस लिए वहां ठहरा रहा। जब रात हुई [illegible] भी न पाया था कि कुछ आदमी नंगी तलवार लिए [illegible] मगर मुझ तक न पहुंच सकते थे। जब सुबह को वहां से [illegible] एक शख़्स घोड़े पर सवार मिला और मुझ से कहा कि हम [illegible] रात में सौ बार से ज़्यादा तेरे पास पाये, मगर बीच-बीच में [illegible] दीवार लोहे रोक बन जाती है। मैंने कहा कि यह उन आयात की [illegible] है। उस शख़्स ने अह्द किया कि अब यह काम न करूंगा)। [illegible] इस तरह है—

الم ○ ذلك الكتب لا ريب فيه هدى للمتقين ○ الذين يؤمنون
بالغيب ويقيمون الصلوة ومما رزقنهم ينفقون ○ والذين يؤمنون بما انزل
اليك وما انزل من قبلك وبالاخرة هم يوقنون ○ اولئك على هدى من ربهم واولئك
هم المفلحون ○ الله لا اله الا هو الحي القيوم لا تاخذه سنة ولا نوم له ما في
السموت وما في الارض من ذا الذي يشفع عنده الا باذنه يعلم ما بين
ايديهم وما خلفهم ولا يحيطون بشيء من علمه الا بما شاء وسع كرسيه
السموت والارض ولا يؤده حفظهما وهو العلي العظيم ○ لا اكراه في الدين قد
تبين الرشد من الغي فمن يكفر بالطاغوت ويؤمن بالله فقد استمسك
بالعروة الوثقى لا انفصام لها والله سميع عليم ○ الله ولي الذين امنوا
يخرجهم من الظلمت الى النور ○ والذين كفروا اولياؤهم الطاغوت يخرجونهم
من النور الى الظلمت اولئك اصحب النار هم فيها خلدون ○ لله ما في
السموت وما في الارض وان تبدوا ما في انفسكم او تخفوه يحاسبكم به
الله فيغفر لمن يشاء ويعذب من يشاء والله على كل شيء قدير

آمَنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ وَالْمُؤْمِنُونَ ۚ كُلٌّ آمَنَ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْ رُسُلِهِ ۚ وَقَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۖ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ۝ لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ۗ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا إِنْ نَسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ ۖ وَاعْفُ عَنَّا وَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا ۚ أَنْتَ مَوْلَانَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُغْشِي اللَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهُ حَثِيثًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُومَ مُسَخَّرَاتٍ بِأَمْرِهِ ۗ أَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ ۗ تَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝ ادْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ۝ وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا وَادْعُوهُ خَوْفًا وَطَمَعًا ۚ إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ قَرِيبٌ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ۝ قُلِ ادْعُوا اللَّهَ أَوِ ادْعُوا الرَّحْمَٰنَ ۖ أَيًّا مَا تَدْعُوا فَلَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ ۚ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذَٰلِكَ سَبِيلًا ۝ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُنْ لَهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ وَلِيٌّ مِنَ الذُّلِّ ۖ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيرًا ۝ وَالصَّافَّاتِ صَفًّا ۝ فَالزَّاجِرَاتِ زَجْرًا ۝ فَالتَّالِيَاتِ ذِكْرًا ۝ إِنَّ إِلَٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ۝ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ۝ إِنَّا زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِزِينَةٍ الْكَوَاكِبِ ۝ وَحِفْظًا مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ مَارِدٍ ۝ لَا يَسَّمَّعُونَ إِلَى الْمَلَإِ الْأَعْلَىٰ وَيُقْذَفُونَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ۝ دُحُورًا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ وَاصِبٌ ۝ إِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَأَتْبَعَهُ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ۝ فَاسْتَفْتِهِمْ أَهُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمْ مَنْ خَلَقْنَا ۚ إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِنْ طِينٍ لَازِبٍ ۝ يَا مَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ إِنِ اسْتَطَعْتُمْ أَنْ تَنْفُذُوا مِنْ أَقْطَارِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ فَانْفُذُوا ۚ

لَا تَنْفُذُونَ إِلَّا بِسُلْطَانٍ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِنْ نَارٍ وَنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرَانِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ فَإِذَا انْشَقَّتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ فَيَوْمَئِذٍ لَا يُسْأَلُ عَنْ ذَنْبِهِ إِنْسٌ وَلَا جَانٌّ ۝ لَوْ أَنْزَلْنَا هَٰذَا الْقُرْآنَ عَلَىٰ جَبَلٍ لَرَأَيْتَهُ خَاشِعًا مُتَصَدِّعًا مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ ۚ وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ۝ هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۖ هُوَ الرَّحْمَٰنُ الرَّحِيمُ ۝ هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْمَلِكُ الْقُدُّوسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ۚ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ ۖ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ ۚ يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ قُلْ أُوحِيَ إِلَيَّ أَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِنَ الْجِنِّ فَقَالُوا إِنَّا سَمِعْنَا قُرْآنًا عَجَبًا ۝ يَهْدِي إِلَى الرُّشْدِ فَآمَنَّا بِهِ ۖ وَلَنْ نُشْرِكَ بِرَبِّنَا أَحَدًا ۝ وَأَنَّهُ تَعَالَىٰ جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَلَا وَلَدًا ۝

ये ३३ आयतें हैं। इनके पढ़ने से आसेब व दरिंदे, चोर और हर किस्म की बला और आफ़त दूर हो जाती है। कहा गया है कि पुरानी बीमारियों से शिफ़ा है। मुहम्मद बिन अली फ़रमाते हैं कि हमारे एक बुज़ुर्ग को फ़ालिज हो गया था, उस पर ये आयतें पढ़ीं, उन को शिफ़ा हो गयी।

५१ अल-हक़्क़ु (सज़ावारे ख़ुदाई)

ख़ासियत व अमल—एक चौकोर (वर्ग) कागज़ के चारों कोनों पर लिखकर उसको हथेली पर रखकर रात के आख़िरी हिस्से में आसमान की तरफ़ हाथ उठाये तो मुहिमों में किफ़ायत हो।

५२ अल-वकीलु (कार साज़)

ख़ासियत व अमल—हर मुहिम के लिए इसकी ज़्यादती फ़ायदा रखती है।

११. अल मुक़्तदिर (क़ुदरत वाले)

ख़ासियत—जब सो कर उठे इसे ज़्यादा पढ़ा तो जो उसकी मुराद हो, उसका उपाय अल्लाह तआला आसान कर दे।

आमाले क़ुरआनी यानी ख़वासे फ़ुर्क़ानी

दूसरा हिस्सा

१२. इल्म की तरक़्क़ी और ज़ेहन का बढ़ना

رب اشرح لي صدري ويسر لي أمري واحلل عقدة من لساني يفقهوا قولي

रब्बिश्रह ली सद्री व यस्सिर ली अम्री वह्लुल उक़्दतम मिल्लिसानी यफ़्क़हू क़ौली।

तर्जुमा—ऐ मेरे परवरदिगार ! मेरा हौसला बढ़ा दीजिए और मेरा (यह) काम (तब्लीग़ का) आसान फ़रमा दीजिए और मेरी ज़बान से गिरह (हकलेपन को) हटा दीजिए, ताकि लोग मेरी बात समझ सकें।

ख़ासियत—इल्म की तरक़्क़ी और ज़ेहन के बढ़ने के लिए हर दिन सुबह की नमाज़ के बाद बीस बार पढ़ा करे, आज़माया हुआ है।

रब्बि ज़िद्नी इल्मा। (पारा १६, रुकूअ १५)

तर्जुमा—ऐ मेरे रब ! मेरा इल्म बढ़ादे !

आखिरत्यवन—इल्म की तरक्क़ी के लिए हर नमाज़ के बाद जिस क़दर हो सके, पढ़ा करे

الٓرٰ كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ خَبِيْرٍ ۙ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنَّنِيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ ۙ وَّاَنِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّيُؤْتِ كُلَّ ذِيْ فَضْلٍ فَضْلَهٗ ؕ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ كَبِيْرٍ ۚ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۚ

[illegible]

२. अलिफ़-लाम-रा किताबुन उह्किमत आयातुहू सुम म फ़ुस्सिलत मिल्लदुन हकीमिन ख़बीर० अल्ला तअ़बुदू इल्ला ह इन्ननी लकुम मिन्हु नज़ीर व व बशीर व अनिस्तग़फ़िरू रब्बकुम सुम म तूबू इलैहि युमत्तिअ़कुम मताअ़न ह स ना इला अ ज लिम मुसम्मंव व युअ्ति कुल ल ज़ी फ़ज़्लिन फ़ज़्लहू व इन तवल्लौ फ़ इन्नी अख़ाफ़ु अलैकुम अज़ा व यौमिनकबीर० इलल्लाहि मर्जिअ़ुकुम व हु व अला कुल्लि शैइन क़दीर०
(पारा ११, रुकूअ़ १७)

तर्जुमा—अलिफ़-लाम-रा। यह (कुरआन) ऐसी किताब है कि इसकी आयतें (दलीलों से) मज़बूत की गयी हैं, फिर साफ़-साफ़ (भी) बयान की गयी है। (वह किताब ऐसी है कि) एक हकीम, बाख़बर (यानी अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से यह (है) कि अल्लाह तआ़ला के सिवा किसी की इबादत मत करो। मैं तुमको अल्लाह की तरफ़ से डराने वाला और ख़ुशख़बरी देने वाला हूं और यह कि तुम लोग अपने गुनाह अपने रब से माफ़ कराओ, फिर उसकी तरफ़ मुतवज्जह रहो। वह तुमको वक़्ते मुक़र्ररा तक (दुनिया में) ख़ुशी-ऐश देगा और (आख़िरत में) हर ज़्यादा अमल करने वाले को ज़्यादा सवाब देगा, और अगर (ईमान लाने से) तुम लोग कतराते रहे तो

[illegible] तुम्हारे लिए एक बड़े दिन के अज़ाब का अंदेशा है। तुम (सब) को अल्लाह ही के पास जाना है और वह हर चीज़ पर पूरी [illegible] रखता है।

[illegible]—हरी अरुवी के पत्तों पर फ़ज्र होने के वक़्त मुश्क [illegible] से लिख कर जिस कुएं से इस अरुवी में पानी दिया जाता [illegible] पानी से धोकर चार दिन तक सुबह व शाम पिए, तालीमे [illegible] व इल्म व हाफ़िज़ा और ज़ेहन में तरक़्क़ी व आसानी हो और [illegible] दिन भूल जाए।

१२ रोज़गार लगना और निकाह का पैग़ाम मंज़ूर होना

१. [illegible] की नौचन्दी जुमेरात को चांदी के नगीने पर यह हर्फ़ [illegible] कर पहने, तो हर डर से अम्न में रहे। अगर हाकिम के पास [illegible], तो उसकी क़द्र हो और सब काम पूरे हों और अगर ग़ज़बनाक [illegible] के सर पर हाथ फेर दे, तो उसका ग़ुस्सा जाता रहे और [illegible] की तेज़ी में उसको चूम ले तो सुकून हो जाए और [illegible] के पानी में उसको रात के वक़्त डाल कर सुबह को [illegible] तो हाफ़िज़ा मज़बूत हो जाए और जो बेकार आदमी [illegible] से लग जाए और मिरगी वाले को पहना दिया जाए तो [illegible] रहे। वे हुरूफ़ ये हैं—

الٓمٓ ۔ الٓمٓصٓ ۔ الٓرٰ ۔ كٓهٰيٰعٓصٓ ۔ طٰهٰ ۔ طٰسٓمٓ ۔ طٰسٓ
[illegible]

अलिफ़-लाम मीम, अलिफ़-लाम-मीम-स्वाद, अलिफ़-लाम-मीम-रा, [illegible]-हा-या-ऐन-स्वाद, त्वा-हा, त्वा-सीन, त्वा-सीम-मीम, या-सीन, स्वाद, हा-मीम, ऐन-सीन-क़ाफ़, क़ाफ़, नून वल क़लमि व मा यस्तुरून।

قُلْ إِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ
عَلِيمٌ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ

२. कुल इन्नल फ़ज़ल बियदिल्लाहि युअ्तीहि मंय्यशाउ वल्ला[illegible] वासिउन अलीम० यख़्तस्सु बिरहमतिही मंय्यशाउ वल्लाहु [illegible] फ़ज़्लिल अज़ीम० —पारा ३, रुकूअ [illegible]

तर्जुमा—आप कह दीजिए कि बेशक फ़ज़्ल तो खुदा [illegible] क़ब्ज़े में है, वह उसको जिसे चाहें अता फ़रमायें और अल्लाह तआ[illegible] बड़ी वुसअत वाले हैं, खूब जानने वाले हैं। ख़ास कर देते हैं अपन[illegible] रहमत व फ़ज़्ल के साथ जिसको चाहें और अल्लाह तआला ब[illegible] फ़ज़्ल वाले हैं।

ख़ासियत—जुमेरात के दिन, वुज़ू करके किसी क़िस्मत[illegible] आदमी के कुर्ते के टुकड़े पर इस आयत को दुकान या मकान [illegible] ख़रीद व फ़रोख़्त की जगह में लटकाये, खूब आमदनी होगी।

३. अल-बदीअ—ईजाद करने वाले।

ख़ासियत—इसको हज़ार बार पढ़े तो हाजत पूरी हो औ[illegible] ख़तरा दूर हो।

४. व क़ाल—और इसको किसी काग़ज़ पर लिख कर कि[illegible] बेकार आदमी के बाज़ू पर बांध दिया जाए, बा कार हो जाए या[illegible] जिसने कहीं निकाह का पैग़ाम भेजा हो, उसके बाज़ू पर बांध दिया जाए, उसका पैग़ाम मंज़ूर हो जाए।

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُونِي بِهِ أَسْتَخْلِصْهُ لِنَفْسِي فَلَمَّا كَلَّمَهُ قَالَ إِنَّكَ
الْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِينٌ أَمِينٌ ۝ قَالَ اجْعَلْنِي عَلَىٰ خَزَائِنِ الْأَرْضِ إِنِّي حَفِيظٌ عَلِيمٌ
وَكَذَٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ يَتَبَوَّأُ مِنْهَا حَيْثُ يَشَاءُ نُصِيبُ بِرَحْمَتِنَا

مَنْ نَشَاءُ وَلَا نُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ۝

(پ۱۳-ع۱)

[illegible] पारा १३ रुकूअ १ से 'व क़ालल मलिकुअ्तूनी—अज्रल मुह्सिनीन०

तर्जुमा—और (सुन कर) बादशाह ने कहा कि उन को [illegible] पास लाओ, मैं उनको ख़ास अपने लिए रखूंगा, पस जब बादशाह [illegible] से बातें कीं तो बादशाह ने कहा कि तुम हमारे नज़दीक आज (से) [illegible] इज़्ज़तदार और एतबारी हो। यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने [illegible] कि मुल्की ख़ज़ानों पर मुझ को लगा दीजिए, मैं हिफ़ाज़त [illegible] और खूब जानकार हूं और हमने ऐसे तौर पर यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) को बा-अख़्तियार बना दिया कि उसमें जहां चाहें, [illegible] हम जिस पर चाहें, अपनी इनायत मुतवज्जह कर दें और [illegible] नेकी करने वालों का अज्र बर्बाद नहीं करते।

ख़ासियत—जिस को रोज़गार न मिलता हो, या रोज़गार [illegible] हो गया हो, महीने में जो अव्वल जुमेरात और जुमा [illegible] रोज़ा रखे और जुमा की रात में बिस्तर पर लेटते वक़्त [illegible] पढ़े, फिर जुमा के दिन ज़ुहर और अस्र के दर्मियान इस [illegible] लिख, फिर इफ़्तार कर के इस सूरः को पढ़े, फिर इशा पढ़ [illegible] सूरः को पढ़े, फिर बिस्तर पर जाकर इस सूरः को पढ़े [illegible] सौ बार 'ला इला ह इल्लल्लाह' कहे और सौ बार अल्लाहु [illegible] और सौ बार अल-हम्दु लिल्लाह और सौ बार सुब्हानल्लाह [illegible] सौ बार इस्तिग़फ़ार और सौ बार दरूद शरीफ़ पढ़ कर सो रहे। [illegible] घर से निकल कर लिखी हुई सूरः को तावीज़ बना कर [illegible] और पक्का इरादा और नीयत करे कि किसी पर कभी ज़ुल्म न करूंगा और अपने हक़ से ज़्यादती न करूंगा, इन्शाअल्लाह

तआला जल्द ही रोज़गार से लग जाए। जो शख़्स पढ़ना जानता हो, वह लिखे हुए को सर तले रख ले, बाक़ी लाइला इल्लल्लाह पहले की तरह कहे।

१४. हमेशा ख़ुश रहना, ग़म का दूर होना

وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى وَلِتَطْمَئِنَّ بِهٖ قُلُوْبُكُمْ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا
مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ

१. व मा ज अ ल हुल्लाहु इल्ला बुश्रा व लि तत्मइन न बिही क़ुलूबुकुम व मन्नस्रु इल्ला मिन इन्दिल्लाहि इन्नल्ला ह अज़ीज़ुन हकीम०

—पारा ६, रुकूअ १५

तर्जुमा— और अल्लाह तआला ने यह मदद सिर्फ़ (इस हिक्मत के लिए की कि ग़लबे की ख़ुशख़बरी हो और ताकि तुम्हारे दिलों को क़रार हो जाए और मदद सिर्फ़ अल्लाह ही की तरफ़ से है, जो कि ज़बरदस्त हिक्मत वाले हैं।

ख़ासियत— रमज़ान की २७ वीं को एक पर्चे पर यह आयत लिख कर अंगूठी के नगीने के नीचे रख ले तो हमेशा महफ़ूज़, ख़ुश और कामियाब रहे।

२. सूरः नूह— (पारा २६)

ख़ासियत—हर क़िस्म की ज़रूरत पूरी करने के लिए और ग़म व वहम के दूर करने के लिए फ़ायदेमंद है।

डर दूर करने के लिए एक और— इब्नुल कल्बी

से नक़ल किया गया है कि किसी ने किसी शख़्स को क़त्ल की धमकी दी। उसको डर हुआ, उसने किसी आलिम से ज़िक्र किया। उन्होंने फ़रमाया कि घर से निकलने से पहले सूरः यासीन पढ़ लिया करो, फिर घर से निकला करो। वह शख़्स ऐसा ही करता था और जब अपने दुश्मन के सामने आता था, उसको हरगिज़ नज़र न आता था।

३. अस्सबूर (सब्र करने वाले)

ख़ासियत—सूरज निकलने से पहले सौ बार पढ़े तो कोई तक्लीफ़ न पहुंचे।

४. अल-बाक़ी (हमेशा रहने वाले)

ख़ासियत—हज़ार बार पढ़े तो ज़रूर ग़म से ख़लासी हो।

५. अल-वारिस (मालिक)

ख़ासियत—मग़रिब इशा के दर्मियान हज़ार बार पढ़े तो परेशानी दूर हो।

१५. मुश्किल आसान होना

अल्लाहु (अल्लाह)

ख़ासियत—जो शख़्स हज़ार बार रोज़ाना पढ़े, अल्लाह तआला उसको कमाल दर्जे का यक़ीन नसीब फ़रमायें और जो आदमी जुमा के दिन जुमा की नमाज़ से पहले पाक व साफ़ हो कर ख़ल्वत (तंहाई) में दो सौ बार पढ़े, उसकी मुश्किल आसान हो और जिस मरीज़ के इलाज से डाक्टर आजिज़ आ गये हों, उस पर पढ़ा जाए तो अच्छा हो जाए, बशर्ते कि मौत का वक़्त न आ गया हो।

१६. मुराद पूरी होना

१. अल मुग़्नी (देने वाले)

ख़ासियत—हर मुराद हासिल होने के लिए फ़ायदेमंद है।

२. अल मानेअ (रोकने वाले)

ख़ासियत—जो अपनी मुराद तक पहुंच न सके, इसको सुबह व शाम पढ़ा करे, मुराद हासिल हो।

३. अल-हफ़ीज़ु (निगहबान)

ख़ासियत—इसका ज़िक्र करने वाला या लिख कर पास रखने वाला ख़ौफ़ से बचा रहे। अगर दरिंदों के दर्मियान सो रहे, तो नुक़सान न पहुंचे।

४. अल-मुक़ीतु (क़ुवत वाली ताक़त देने वाले)

ख़ासियत—अगर रोज़ेदार इसको मिट्टी पर पढ़ कर या लिख कर इसको तर करके सूंघे तो ताक़त व ग़िज़ाइयत (पौष्टिकता) हासिल हो और अगर मुसाफ़िर कूज़े पर सात बार पढ़ कर, फिर उसको लिख कर उससे पानी पिया करे तो सफ़र की वहशत (घबराहट) से बचा रहे।

५. अर-रक़ीबु (निगहबान)

ख़ासियत.—इसके ज़िक्र करने से माल व अयाल महफ़ूज़ रहे और जिसकी कोई चीज़ गुम हो जाए, इसको पढ़े तो वह इन्शाअल्लाहु तआला मिल जाए और अगर हमल के गिरने का अंदेशा हो तो इसको सात बार पढ़े तो न गिरे और सफ़र के वक़्त जिस बाल-बच्चे की तरफ़ से फ़िक्र हो, उसकी गरदन पर हाथ रख कर सात बार पढ़े तो अम्न व चैन से रहे।

१७ हर मुसीबत से बचाव के लिए

آمَنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ وَالْمُؤْمِنُونَ كُلٌّ آمَنَ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْ رُسُلِهِ وَقَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ۝ لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا إِنْ نَسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ وَاعْفُ عَنَّا وَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا أَنْتَ مَوْلَانَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝ (پ ۳ رکوع ۸)

ख़ासियत—जो शख़्स ये सब आयतें पढ़ कर सो रहे तो इन्शाअल्लाहु तआला चोर और हर चीज़ से महफ़ूज़ रहेगा।

२. अबू जाफ़र नुहास ने यह हदीस नक़ल की है कि आयतुल कुर्सी और सूरः आराफ़, सूरः साफ़्फ़ात व सूरः रहमान की ये आयतें—

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُغْشِي اللَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهُ حَثِيثًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُومَ مُسَخَّرَاتٍ بِأَمْرِهِ أَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ تَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝ ادْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ۝ وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا وَادْعُوهُ خَوْفًا وَطَمَعًا إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ قَرِيبٌ مِنَ الْمُحْسِنِينَ (پ ۸ ر ۱۴)

وَالصَّافَّاتِ صَفًّا ۝ فَالزَّاجِرَاتِ زَجْرًا ۝ فَالتَّالِيَاتِ ذِكْرًا ۝ إِنَّ إِلَٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ۝ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ۝ إِنَّا زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِزِينَةٍ الْكَوَاكِبِ ۝ وَحِفْظًا مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ مَارِدٍ ۝ لَا يَسَّمَّعُونَ إِلَى الْمَلَإِ الْأَعْلَىٰ -

سَنَفْرُغُ لَكُمْ أَيُّهَ الثَّقَلَانِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ يَا مَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ إِنِ اسْتَطَعْتُمْ أَنْ تَنْفُذُوا مِنْ أَقْطَارِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ فَانْفُذُوا لَا تَنْفُذُونَ إِلَّا بِسُلْطَانٍ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِنْ نَارٍ وَنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرَانِ ۝ (پ ۲۷ ع ۱۲)

ख़ासियत—ये सब आयतें अगर कोई दिन में पढ़े तो तमाम दिन और अगर रात को पढ़े तो तमाम रात सरकश शैतान, नुक़सान पहुंचाने वाले जादूगर और ज़ालिम हाकिम और तमाम चोरों, डाकुओं और दरिंदों से बचा रहेगा।

३. हुरूफ़े मुक़त्तआत जो सूरतों के शुरू में आते हैं, वे यह हैं—

الٓمٓ. الٓمٓصٓ. الٓرٰ. الٓمٓرٰ. كٓهٰيٰعٓصٓ. طٰهٰ. طٰسٓمٓ. طٰسٓ. يٰسٓ.
صٓ. حٰمٓ. حٰمٓ عٓسٓقٓ. قٓ. نٓ

अलिफ़-लाम-मीम, अलिफ़-लाम-मीम-स्वाद, अलिफ़-लाम-रा, काफ़-हा-या-ऐन-स्वाद, त्वा-हा, त्वा-सीम-मीम, त्वा-सीन, या-सीन, स्वाद, हा-मीम, हाम-मीम, ऐन-सीन-क़ाफ़,क़ाफ़, नून

जिन में ये हुरूफ़ आये हैं—

الف - حا - صاد - سین - کاف - عین - طا - قاف - را - ھا - نون - میم - یا

अलिफ़, हा, स्वाद, सीन, काफ़, ऐन, त्वा क़ाफ़, रा, हा, नून, मीम, या, इन का लक़ब इस्तिलाह में हुरूफ़े नूरानी है और हर एक हर्फ़ के साथ अल्लाह के कुछ नामों को ताल्लुक़ है, मसलन अलिफ़ के साथ अल्लाह, अहद, हे से हय्य, स्वाद से समद, सीन से समीअ, सुब्हू, सलाम, काफ़ से करीम, ऐन से अलीम, अज़ीम, अज़ीज़, त्व से तैयब, क़ाफ़ से क़य्यूम, रे से रहमान रहीम, हे से हादी, नून से नूर, नफ़ेअ, मीम से मालिकि यौमिद्दीन, मालिकुल मुल्क, मुहयी, मुमीत, लाम से लतीफ़ वग़ैरह।

ख़ासियत—हुरूफ़े नूरानी को लिख कर अगर अपने माल व मताअ या खेत या घर वग़ैरह में रखे, तो हर बला से महफ़ूज़ रहे।

४. आयतुल कुर्सी

ख़ासियत—जो शख़्स आयतुल कुर्सी को हर नमाज़ के बाद और सुबह व शाम और घर में जाने के वक़्त और रात को लेटते वक़्त

पढ़ा करे तो फ़क़ीर से ग़नी हो जाए और बे-गुमान रोज़ी मिले, चोरी से बचा रहे, रोज़ी बढ़े, कभी उपवास न हो और जहां पढ़े, वहां चोर न आए।

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ (پ ۱۴ ع ۱)

५. इन्ना नह्नु नज़्ज़लनज़्ज़िक र व इन्ना लहू ल हाफ़िज़ून०

—पारा ४, रुकूअ १

तर्जुमा— हमने क़ुरआन को नाज़िल किया है और हम ही उसकी हिफ़ाज़त करने वाले और निगहबान हैं।

ख़ासियत— चांदी के मुलम्मा के पत्तरे पर इस को लिख कर जुमा की रात को यह आयत चालीस बार उस पर पढ़े, फिर उसको नगदार अंगूठी के नीचे रख कर वह अंगूठी पहन ले। उस का माल व जान और सब हालात हिफ़ाज़त से रहें।

६. सूरः मरयम (अला नबीयिना व अलैहिस्सलाम) (पारा १६)

ख़ासियत— इसको लिख कर शीशे के गिलास में रख कर अपने घरमें रखने से ख़ैर व बरकत हो, ज़्यादा ख़ुशी के सपने दीख पड़ें और जो शख़्स उसके पास सोये, वह भी अच्छे ख़्वाब देखे और जो शख़्स उसे लिख कर मकान की दीवार में लगाये, सब आफ़तों से बचा रहे, और जो डरा हुआ हो और पीले तो डर जाता रहे।

فَإِذَا اسْتَوَيْتَ أَنْتَ وَمَنْ مَعَكَ عَلَى الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي نَجَّانَا
مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ وَقُلْ رَبِّ أَنْزِلْنِي مُنْزَلًا مُبَارَكًا وَأَنْتَ خَيْرُ
الْمُنْزِلِينَ ۝ (پ ۱۸ ع ۲)

७. फ़ इज़स्तवै त अन त व मम म अ क अलल फ़ुल्कि फ़ क़ुलिल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी नज्जाना मिनल क़ौमिज़्ज़ालिमीन ० व क़ुर्रब्बि अन्ज़िल्नी मुन्ज़लम मुबा र कंव व अन त ख़ैरुल मुन्ज़िलीन०

—पारा १८, रुकूअ २

ख़ासियत— इसको पढ़ने से चोर, दुश्मन और जिन्न वग़ैरह से हिफ़ाज़त रहती है।

८. सूरः अल-अस्र (पारा ३०)

ख़ासियत—माल वग़ैरह दफ़न करने के वक़्त इसको पढ़ने से वह हर आफ़त से बचा रहेगा।

१८. दफ़ीने का पता लगाना

وَإِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادّٰرَأْتُمْ فِيهَا ۖ وَاللَّهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنتُمْ تَكْتُمُونَ ۝
فَقُلْنَا اضْرِبُوهُ بِبَعْضِهَا ۚ كَذَٰلِكَ يُحْيِي اللَّهُ الْمَوْتَىٰ وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ
تَعْقِلُونَ ۝ (پ ۱ ع ۹)

१. व इज़ क़तल्तुम नफ़्सन फ़द्दारअ्तुम फ़ीहा वल्लाहु मुख़्रिजुम मा कुन्तुम तक्तुमून० फ़ क़ुल्नज़्रिबूहु, बिबअ्ज़िहा कज़ालि क युह्यिल्लाहुल मौता व युरीकुम आयातिही ल अल्लकुम तअ्क़िलून०

—पारा १, रुकूअ ९

ख़ासियत—कुछ अल्लाह वालों से नक़ल किया गया है कि ये आयतें और सूरः शुअरा काग़ज़ पर लिख कर एक सफ़ेद मुर्ग़ की गरदन में, जिसका ताज शाख़-शाख़ हो, बांध कर जिस जगह दफ़ीने का शुब्हा हो, वहां छोड़ दिया जाए, वह मुर्ग़ वहां जाकर खड़ा हो जाएगा और अगले दिन मर जाएगा। मगर मुझको इसमें शुब्हा है कि हैवान का हलाक करना अमल से ना-जायज़ है।

قُلِ اللَّهُمَّ مَالِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَن تَشَاءُ وَتَنزِعُ الْمُلْكَ مِمَّن تَشَاءُ
وَتُعِزُّ مَن تَشَاءُ وَتُذِلُّ مَن تَشَاءُ ۖ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ۖ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ تُولِجُ
اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ ۖ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ
مِنَ الْحَيِّ ۖ وَتَرْزُقُ مَن تَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ (پ ۳ ع ۱۱)

१. कुलिल्लाहुम म मालिकल मुल्कि तुअ्तिल मुल क मन तशाउ व तन्ज़िउल मुल क मिम्मन तशाउ व तुअिज़्ज़ु मन तशाउ व तुज़िल्लु मन तशाउ बियदिकल ख़ैरु इन न क अला कुल्लि शैइन क़दीर० तूलिजुल्लै ल फ़िन्नहारि व तूलिजुन्नहा र फ़िल्लैलि व तुख़्रिजुल हय्य मिनल मय्यिति व तुख़्रिजुल मय्य त मिनलहय्यि व तर्ज़ुक़ु मन तशाउ बिग़ैरि हिसाब०

—पारा ३, रुकूअ ११

ख़ासियत—जो शख़्स दफ़ीनों व ख़ज़ानों का पता पाना चाहे, तो इन आयतों को तांबे के बर्तन पर मुश्क व ज़ाफ़रान से लिखे, फिर आबे हलैला ज़र्द व आबे तुर्श व आबे मेवा-ए-सब्ज़ से उसको धो कर काली मुर्ग़ी का पित्ता या काली बत्तख का पित्ता और एक मिस्क़ाल सुर्मा अस्फ़हानी लेकर उस पानी में मिला कर ख़ूब बारीक पीसे, यहां तक कि वह बारीक सुर्मा हो जाए और रात के वक़्त पीसा करे ताकि उस पर धूप न पड़े। जब वह सुरमा बन जाए, कांच की शीशी में रख ले और आबनूस की सलाई से उसका इस्तेमाल करे, इस तरह कि अव्वल जुमेरात के दिन रोज़ा रखे, जब आधी रात का वक़्त हो, सत्तर बार दरूद शरीफ़ पढ़े, फिर उसी सलाई से दोनों आंखों में तीन-तीन सलाई उस सुर्मे की लगाये और दाहिनी आंख से पहले लगाये, इसी तरह सात जुमेरात तक करे कि दिन में रोज़ा रखे और रात को दरूद शरीफ़ और इस्तग़फ़ार पढ़े और सुर्मा लगाये। इस अमल से कुछ शख़्स नज़र आएंगे, उनसे जो पूछना हो, वह पूछ लो, वे सवाल का जवाब देंगे।

१९. गुम शुदा की तलाश

إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ۝ (پ ۲ ع ۳)

१. इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन०

—पारा २, रुकूअ ३

तर्जुमा—वे कहते हैं कि हम तो (मय माल व औलाद हक़ीक़तन) अल्लाह तआला ही की मिल्क हैं और हम सब (दुनिया से) अल्लाह तआला के पास जाने वाले हैं।

ख़ासियत—अगर यह आयत पढ़ कर गुम हुई चीज़ तलाश की जाए तो इन्शाअल्लाहु तआला ज़रूर मिल जाएगी, वरना ग़ैब से कोई चीज़ उससे उम्दा मिलेगी।

وَلِكُلٍّ وِجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ ۚ أَيْنَ مَا تَكُونُوا
يَأْتِ بِكُمُ اللَّهُ جَمِيعًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ (پ۲ ع۲)

२. व लि कुल्लि विज्हतुन हु व मुवल्ली हा फ़स्तबिकुल ख़ैरात ऐ न मा तकूनू यअ्ति बिकुमुल्लाहु जमीआ इन्नल्ला ह अला कुल्लि शैइन क़दीर०

—पारा २, रुकूअ २

तर्जुमा—और हर शख़्स (मज़हब वाले) के वास्ते एक क़िब्ला रहा है, जिसकी तरफ़ वह (इबादत में) मुंह करता रहा है, सो तुम नेक कामों में दौड़-भाग करो, तुम चाहे कहीं होगे (लेकिन) अल्लाह तआला तुम सब को हाज़िर कर देंगे। बेशक अल्लाह तआला हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखते हैं।

ख़ासियत—इस आयत को कोरे कपड़े के गोल कटे टुकड़े पर लिख कर चोर या भागे हुए आदमी का नाम लिख कर जिस मकान में चोरी हुई है या जिस मकान से कोई भागा है, उसकी दीवार में खूंटे से गाड़ दिया जाय, इन्शाअल्लाहु तआला चोरी गया या गुम गया माल वापस आ जाएगा।

قُلْ أَنَدْعُو مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلَىٰ
أَعْقَابِنَا بَعْدَ إِذْ هَدَانَا اللَّهُ كَالَّذِي اسْتَهْوَتْهُ الشَّيَاطِينُ فِي
الْأَرْضِ حَيْرَانَ لَهُ أَصْحَابٌ يَدْعُونَهُ إِلَى الْهُدَى ائْتِنَا ۗ قُلْ
إِنَّ هُدَى اللَّهِ هُوَ الْهُدَىٰ ۖ وَأُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝
(پ۷ ع۱۴)

३. कुल अ नद् अू मिन दूनिल्लाहि मा ला यन्फ़अुना व ला यज़ुर्रुना व नुरद्दु अला अअ्क़ाबिना बअ् द इज़ हदानल्लाहु कल्लज़िस्तह्वत्हुश्शयातीनु फ़िल अर्ज़ि हैरा न लहू अस्हाबुन यद्अू न हू इलल हुदअ्तिना कुल इन्न हुदल्लाहि हुवल हुदा व उमिर्ना लिनुस्लि म लि रब्बिल आ ल मीन०

—पारा ७, रुकूअ १४

तर्जुमा—आप कह दीजिए कि क्या हम अल्लाह के सिवा [illegible] चीज़ की इबादत करें कि वह न हमको नफ़ा पहुंचाए और न वह हमको नुक़सान पहुंचाए और क्या हम उलटे फिर जाएं, इसके [illegible] कि हमको अल्लाह तआला ने हिदायत कर दी है, जैसे कोई [illegible] हो कि उसको शैतानों ने कहीं जंगल में बे-राह कर दिया हो और वह भटकता फिरता हो। उसके कुछ साथी भी थे कि वे उसको [illegible] रास्ते की तरफ़ बुला रहे हैं कि हमारे पास आ। आप कह दीजिए कि यक़ीनी बात है कि सीधी राह वह ख़ास अल्लाह ही की [illegible] है और हमको यह हुक्म हुआ है कि हम पूरे मुतीअ (इताअत [illegible]) हो जाएं परवरदिगारे आलम के।

ख़ासियत—यह चोर के वास्ते है। किसी पुरानी मुश्क का [illegible] या सूखी कद्दू का पोस्त लेकर परकार से उस पर गोल [illegible] बनाया जाए और दायरे के अन्दर यह आयत और दायरे [illegible] [illegible] चोर का नाम मय उसकी मां के नाम के लिख कर ऐसी जगह [illegible], जहां कोई न बसता हो। इन्शाअल्लाहु तआला चोर हैरान [illegible] होकर वापस आ जाएगा।

[illegible]

فَثَبَّطَهُمْ وَقِيلَ اقْعُدُوا مَعَ الْقَاعِدِينَ ۝ (پ ۱۰ رکوع ۱۲)

४. लौ अरादुल खुरू ज ल अअद्दू लहू उद्दतु व व ला किन करि हल्लाहुम्बिआ स हुम फ़ सब्ब त हुम व क़ीलक़्अुदू मअल क़ाअिदीन॰

—पारा १०, रुकूअ़ ११

तर्जु मा—और अगर वे लोग (लड़ाई में) चलने का इरादा करते तो उसका फिर कुछ सामान तो दुरुस्त करते, लेकिन (खैर हुई,) अल्लाह तआला ने उनके जाने को पसन्द नहीं किया, इस लिए उनको तौफ़ीक़ नहीं दी और यों कह दिया गया कि अपाहिज लोगों के साथ तुम भी यहां ही धरे रहो।

ख़ासियत—यह आयत चोर के लिए है। कतान के धुले हुए कपड़े के क़ुब्बारे (गोल कटा हुआ चांद) पर शुरू महीने में यह आयत लिखी जाए और उसके चारों तरफ़ उस शख्स का नाम मय मां के नाम लिखें और जिस जगह कोई न देखता हो, जाकर एक खूंटा उस क़ुब्बारे पर ठोंक दें और उसको मिट्टी से छिपा दें। व चोर अल्लाह के हुक्म से वापस आ जाएगा।

५. सूरतुज्जुहा (पारा ३०)

ख़ासियत—जिसकी कोई चीज गुम हो गयी हो या कोई शख्स भाग गया हो, उसको सात बार पढ़ने से वापस आ जाएगा।

६. जाफ़र खालिदी का एक नग दजला में गिर गया। उन्होंने यह दुआ पढ़ी—

اَللّٰهُمَّ يَا جَامِعَ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَا رَيْبَ فِيهِ اجْمَعْ عَلَيَّ ضَالَّتِي

अल्लाहुम म या जामिअन्नासि लि यौ मिल्ला रै ब फ़ीहि इज्मअ अलय्य ज़ाल्लती॰

एक दिन काग़ज़ात देख रहे थे, उन काग़ज़ात में वह नग मिल गया।

७. सूरः वज्जुहा पढ़े और इस आयत को तीन बार पढ़े—

وَوَجَدَكَ ضَالًّا فَهَدَىٰ

व व ज द क ज़ाल्लन फहदा॰

८. यह आयत रोटी या किसी खाने की चीज पर लिख कर, जिस पर शुब्हा चोरी का हो, उसको खिलाए, चोर खा न सकेगा—

وَإِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادَّارَأْتُمْ فِيهَا وَاللَّهُ مُخْرِجٌ مَا كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ ۝

व इज़ क़तल्तुम नफ़्सन फ़द्दारअ्तुम फ़ीहा वल्लाहु मुख्रिजुम मा कुन्तुम तक्तुमून॰

और

يَتَجَرَّعُهُ وَلَا يَكَادُ يُسِيغُهُ وَيَأْتِيهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ۝
وَمِنْ وَرَائِهِ عَذَابٌ غَلِيظٌ ۝

य त जर्रअुहू व ला यकादु युसीग़ुहू व यातीहिल मौतु मिन कुल्लि मकानिव व मा हु व बिमय्यित व मिव व राइही अज़ाबुन ग़लीज़॰

और

أَلَّا يَسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ
مَا تُخْفُونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ۝ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ۝

अल्ला यस्जुदू लिल्लाहिल्लज़ी युख्रिजुल खब्अ फ़िस्समावाति वल अर्ज़ि व यअ्लमु मा तुख्फ़ू न व मा तुअ्लिनून॰ अल्लाहु ला इला ह इल्ला हु व रब्बुल अर्शिल अज़ीम॰

और

وَبِالْحَقِّ أَنْزَلْنَاهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ۗ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۝

व बिल हक़्क़ि अन्ज़ल्नाहु व बिल हक़्क़ि न ज़ल व मा अर्सल्ना क इल्ला मुबश्शिरंव व नज़ीरा॰

और

صَلَّى اللَّهُ عَلَىٰ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَصَحْبِهِ وَسَلَّمَ

सल्लल्लाहु अला सय्यिदिना मुहम्मदिव व आलिही व सहिबही व सल्लम०

९. जिस दरवाजे से चोरी का माल निकला है, उसमें खड़े होकर सूरः वत्तारिक़ पढ़ने से इन्शाअल्लाहु तआला वापस आ जाएगा या उसको ख्वाब वग़ैरह में देख लेगा।

ख़ासियत—इस आयत को एक रोटी के टुकड़े पर लिख कर जिस शख़्स को भागने की आदत हो या जिस औरत को ना-फ़रमानी और सरकशी की आदत हो, उसको खिला देने से वह आदत जाती रहती है।

१०. अपने रूमाल वग़ैरह के कोने पर फ़ातिहा और सूरः इख़्लास और युसव्वउ‍‍ज़तैन और कुल या ऐयुहल काफ़िरून—हर सूरः तीन-तीन बार और सूरः तारिक़ एक बार और सूरः वव्वुहा तीन बार पढ़ कर उसमें गिरह लगायें, इन्शाअल्लाहु तआला चोर न जाने पाएगा।

११. अर्रक़ीबु (निगहबान)

ख़ासियत—इसके ज़िक्र करने से माल व अयाल बचा रहे और जिसकी कोई चीज़ गुम हो जाए, इसको बहुत पढ़ें, तो वह इन्शाअल्लाहु तआला मिल जाए और सफ़र के वक़्त जिस बाल-बच्चे की तरफ़ से फ़िक्र हो, उसकी गरदन पर हाथ रख कर सात बार पढ़े तो वह अम्न से रहे।

१२. अल-जामिअु (जमा करने वाले)

ख़ासियत—इसे बराबर पढ़ने से अपने मक़सदों और दोस्तों से मिला रहे और जिसकी कोई चीज़ गुम हो जाए, इसको पढ़े तो मिल जाए।

२०. भागे हुए की वापसी

فَرَدَدْنٰهُ اِلٰٓى اُمِّهٖ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ وَلِتَعْلَمَ اَنَّ وَعْدَ

اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ (پ ٢٠ ع ٢)

१. फ़ रदद्नाहु इला उम्मिही कै तक़र र ऐनुहा व ला तह्ज़न व लितअ् ल म अन्न वअ्दल्लाहि हक़्क़ु व व ला किन्न अक्स र हुम ला यअ्ल मून० —पारा २०, रुकूअ ४

तर्जुमा—ग़रज़ हमने मूसा को उनकी मां के पास अपने वायदे के मुवाफ़िक़ वापस पहुंचा दिया ताकि उनकी आंखें ठंडी हों और ताकि (जुदाई के) ग़म में न रहें और ताकि इस बात को जान लें कि अल्लाह तआला का वायदा सच्चा (होता) है, लेकिन (अफ़सोस की बात है कि) अक्सर लोग (इसका) यक़ीन नहीं रखते।

ख़ासियत—अगर कोई शख़्स भाग गया हो, तो इस आयत को लिख कर चर्ख़े में बांध कर सात बार हर दिन चालीस दिन तक उलटा घुमाएं। इन्शाअल्लाहु तआ... इस अमल की बरकत से वह शख़्स जल्द वापस आ जाएगा।

२. इन्नल्ल ज़ी फ र ज़ अलैकल क़ुरआ न ल रादुदु क इला म आद० —पारा २०, रुकूअ १२

तर्जुमा—जिस ख़ुदा ने आप पर क़ुरआन (के हुक्मों पर अमल और उसकी तब्लीग़) को फ़र्ज़ किया है, वह आपको (आप के) वतन (यानी मक्का) में फिर पहुंचाएगा।

ख़ासियत—दो रक्अत नफ़्ल पढ़ कर इस आयते करीमा को एक सौ उन्नीस बार चालीस दिन तक पढ़े इसकी बरकत से जो शख़्स भाग गया हो, वापस आ जाएगा।

يٰبُنَيَّ اِنَّهَآ اِنْ تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِيْ صَخْرَةٍ اَوْ فِي السَّمٰوٰتِ
اَوْ فِي الْاَرْضِ يَاْتِ بِهَا اللّٰهُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ۝

२. या बुनय य इन्नहा इन तकु मिस्क़ा ल हब्बतिम मिन ख़र्द लिन फ़ तकुन फ़ी सख़्रतिन औ फ़िस्समावाति औ फ़िल अर्ज़ि यअ्ति

बिहल्लाहु इन्नल्ला ह लतीफ़ुन ख़बीर० —पारा २१, रुकूअ १

तर्जुमा—बेटा ! अगर कोई अमल राई के दाने के बराबर हो, फिर वह किसी पत्थर के अन्दर हो या वह आसमान के अन्दर या वह ज़मीन के अन्दर हो, तब भी उसको अल्लाह तआला हाज़िर कर देगा। बेशक अल्लाह तआला बड़ा बारीकबीं, बा-ख़बर है।

ख़ासियतः—इसकी बरकत से जो शख़्स भाग गया हो, वापस आ जाएगा। ऊपर की तर्कीब के मुताल्लिक़ अमल में लाएं।

बीवी व शौहर से मुताल्लिक़

१. लड़की का निकाह होना

१. शेख़ शर्फ़ुद्दीन रहमतुल्लाहि अलैहि का क़ौल है कि जो शख़्स हिरन की झिल्ली पर चौदहवीं की रात को किसी महीने इशा की नमाज़ के बाद गुलाब व ज़ाफ़रान से ये आयतें लिख कर एक नलकी में रख कर उसका मुंह नये छत्ते के मोम से बन्द करके उसको चमड़े में सिलवा कर अपने दाहिने बाज़ू पर बांधे, उसके दिल में बे-ख़ौफ़ी पैदा हो। दुश्मन के दिल में उसकी हैबत पैदा हो, दुनिया की नज़र में मक़्बूल हो। अगर मुहताज हो, ग़नी हो जाए और डरा हुआ हो, तो अम्न में हो जाए और अगर जादू या जेल या जुनून में मुब्तला हो तो उससे ख़लासी हासिल हो। अगर क़र्ज़दार हो, तो अल्लाह तआला उसका क़र्ज़ अदा कर दे। अगर किसी फ़िक्र में मुब्तला हो, वह फ़िक्र दूर हो जाए, और अगर मुसाफ़िर हो, सही व सालिम अपने घर आ जाए। जो किसी औरत का निकाह न होता हो तो उस के पास रखने से लोगों को उसके निकाह से चाव पैदा हो। अगर किसी दुकान में रखा जाए तो ख़ूब नफ़ा हो, अगर बच्चों के बांधा जाए तो तमाम आफ़तों से बचे रहें और जिस के पास रहे, वह शख़्स जो हाजत अल्लाह तआला से मांगे, पूरी हो, वे आयतें यह हैं—

الٓمٓ ۚ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ فِيْهِ ۚ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ۙ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۙ اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ۙ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ (پ۱ ع۱)

१. अलिफ़-लाम-मीम० ज़ालिकल किताबु ला रै ब फ़ीहि हुदल्लिल-मुत्तक़ीनल्ल ज़ी न युअ्मिनून बिल ग़ैबि व युक़ीमूनस्सला त व मिम्मा रज़क़नाहुम युन्फ़िक़ून वल्लज़ी न युअ्मिनू न बमा उन्ज़ि ल इलै क व मा उन्ज़ि ल मिन क़ब्लि क व बिल आख़िरति हुम यूक़िनून० उलाइ क अला हुदम मिर रब्बिहिम व उलाइ क हुमुल मुफ़्लिहून०

—पारा १, रुकूअ १

तर्जुमा—अलिफ़-लाम-मीम। यह किताब ऐसी है, जिसमें कोई शुब्हा नहीं, राह बतलाने वाली है, ख़ुदा से डरने वालों को। वे ख़ुदा से डरने वाले लोग ऐसे हैं कि यक़ीन लाते हैं छिपी हुई चीज़ों पर और क़ायम रखते हैं नमाज़ को और जो कुछ दिया है, हम ने उनको, उसमें से ख़र्च करते हैं और वे लोग ऐसे हैं कि यक़ीन रखते हैं उस किताब पर भी जो आपकी तरफ़ उतारी गयी है और उन किताबों पर भी जो आपसे पहले उतारी जा चुकी हैं और आख़िरत पर भी वे लोग यक़ीन रखते हैं। पस ये लोग हैं ठीक राह पर जो उन के परवरदिगार की तरफ़ से मिली है और ये लोग हैं पूरे कामियाब

الٓمٓ ۙ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۙ نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَاَنْزَلَ التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ۙ مِنْ قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَاَنْزَلَ الْفُرْقَانَ

(پ۳ ع۱۰)

२. अलिफ़-लाम-मीम० ल्लाहु ला इला ह इल्ला हुवल हय्युल क़य्यूम नज़ ज़ ल अलैकल किता ब बिल हक़्क़ि मुसद्दिक़ल्लिमा बै न यदैहि व अनज़ ल त्तौरा त वल इं जी ल मिन क़ब्लु हुदल्लिन्नासि व अन्ज़लल फ़ुर्क़ा न०

—पारा ३, रुकूअ ६

तर्जुमा—अलिफ़-लाम-मीम। अल्लाह तआला ऐसे हैं कि उन के सिवा माबूद बनाने के क़ाबिल, कोई नहीं और वह ज़िंदा हैं। सब चीज़ों के संभालने वाले हैं। अल्लाह तआला ने आपके पास कुरआन भेजा है हक़ के साथ, इस तरह कि वह तस्दीक़ करता है उन किताबों की, जो इससे पहले हो चुकी हैं और भेजा था तौरात और इंजील को इससे पहले लोगों की हिदायत के वास्ते और अल्लाह तआला ने भेजे मोजज़े।

الٓمّٓصٓ ۝ كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِيْ صَدْرِكَ حَرَجٌ مِّنْهُ لِتُنْذِرَ
بِهٖ وَذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۝ (پ ۸ ع ۸)

३. अलिफ़-लाम-मीम-स्वाद० किता बुन उन्ज़ि ल इलै क फ़ ला यकुन फ़ी सद्रि क ह र जुम मिन्हु लि तुन्ज़ि र बिही व ज़िकरा लिल मुअ्मिनीन०

—पारा ८, रुकूअ ८

तर्जुमा—अलिफ़-लाम-मीम-स्वाद। यह एक किताब है जो आपके पास इस लिए भेजी गयी है कि आप इसके ज़रिए से डराएं, पस आपके दिल में इससे बिल्कुल तंगी न होना चाहिए और यह नसीहत है ईमान वालों के लिए।

الٓمّٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ ۚ وَالَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ وَلٰكِنَّ
اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ (پ ۱۳ ع ۷)

४. अलिफ़-लाम-मीम-रा० तिल क आयातुलकि ताबि वल्लज़ी उन्ज़ि ल इलै क मिर्रब्बि कलहक़्क़ु वला किन न अक्सरन्नासि ला युअ्मिनून०

—पारा १३, रुकूअ ७

तर्जुमा—अलिफ़-लाम-मीम-रा। ये आयतें हैं एक बड़ी किताब की और जो कुछ आप पर आपके रब की तरफ़ से नाज़िल किया जाता है, यह बिल्कुल सच है और लेकिन बहुत से आदमी ईमान नहीं लाते।

كٓهٰيٰعٓصٓ ۝ ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا ۝ (پ ۱۶ ع ۱)

५. काफ़-हा-या-ऐन-स्वाद० ज़िक्रु रहमति रब्बि क अब्द हू ज़ क रीया०

—पारा १६, रुकूअ १

तर्जुमा—काफ़-हा-या-ऐन-स्वाद, यह तज़्किरा है आपके परवरदिगार के मेहरबानी फ़रमाने का अपने बन्दे ज़करीया पर।

طٰهٰ ۝ مَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰٓى ۝ (پ ۱۶ ع ۱)

६. त्वा-हा० मा अन्ज़लना अलैकल कुरआ न लि तश्क़ा०

—पारा १६, रुकूअ १

तर्जुमा—त्वा-हा। हमने आप पर कुरआन मजीद इस लिए नहीं उतारा कि आप तक्लीफ़ उठाएं।

طٰسٓمّٓ ۝ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝ (پ ۱۹ ع ۵)

७. त्वा-सीम-मीम० तिल क आयातुल किताबिल मुबीन०

—पारा ६, रुकूअ ५

तर्जुमा—त्वा-सीम-मीम। यह किताबे वाज़ेह (यानी कुरआन) की आयतें हैं। طٰسٓ ۝ تِلْكَ اٰيٰتُ الْقُرْاٰنِ وَكِتَابٍ مُّبِيْنٍ ۝ (پ ۱۹ ع ۱۶)

८. त्वा-सीन० तिल क अयातुल कुरआनि व किताबिम मुबीन०

—पारा १६, रुकूअ १६

तर्जुमा—त्वा-सीन। ये आयतें हैं कुरआन की और एक वाज़ेह किताब की।

يٰسٓ ۚ وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ۙ

९. या सी न० वल कुरआनिल हकीम० —पारा २२, रुकूअ १८
तर्जु मा—यासीन । क़सम है हिक्मत वाले कुरआन की।

صٓ وَالْقُرْاٰنِ ذِى الذِّكْرِ ۭ بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ عِزَّةٍ وَّشِقَاقٍ

१०. स्वाद०वल् कुरआनि ज़िज़्ज़िक्रि बलिल्लज़ी न क फ़ रू फ़ी इज़्ज़तिव व शिक़ाक़० —पारा २३, रुकूअ १०
तर्जु मा—स्वाद । क़सम है क़ुरआन की जो हिक्मत से भरा हुआ है, बल्कि (खुद) ये कुफ़्फ़ार (ही) तास्सुब और मुख़ालफ़त में हैं।

حٰمٓ ۚ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۙ غَافِرِ الذَّنْۢبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِى الطَّوْلِ ۭ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ

११. हा-मीम० तंज़ीलुल किताबि मिनल्लाहिल अज़ीज़िल अलीम० ग़ाफ़िरिज़्ज़म्बि व क़ाबिलित्तौबि शदीदिल अिक़ाबि ज़ित्तौलि ला इला ह इल्लाहु व इलैहिल मसीर० —पारा २४, रुकूअ ६
तर्जु मा—हा-मीम । यह किताब उतारी गयी है अल्लाह की तरफ़ से जो ज़बरदस्त है, हर चीज़ का जानने वाला है, गुनाह का बख़्शने वाला है और तौबा का क़ुबूल करने वाला है, सख़्त सज़ा देने वाला है, क़ुदरत वाला है, उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। उसके पास जाना है।

حٰمٓ ۚ عٓسٓقٓ ۚ كَذٰلِكَ يُوْحِيْٓ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۙ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ

१२. हा-मीम० ऐन-सीन-क़ाफ़० कज़ालि क यूहा इलै क व इल-ल्लज़ी न मिन क़ब्लि क अल्लाहुल अज़ीज़ुल हकीम० —पारा २५, रुकूअ २
तर्जु मा—हा-मीम । ऐन-सीन-क़ाफ़ । इसी तरह आप पर और जो आप से पहले हो चुके हैं, उन पर अल्लाह तआला, जो ज़बरदस्त हिक्मत वाला है, वह्य भेजता रहा है।

قٓ ۚ وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ

१३. क़ाफ़० वल कुरआनिल मजीद० —पारा २६, रुकूअ १५
तर्जु मा—क़ाफ़ । क़सम है कुरआन मजीद की।

نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ

१४. नून० वल् क़ ल मि व मा यस्तुरून०—पारा २९, रुकूअ ३
तर्जु मा—नून । क़सम है क़लम की और उनके लिखने की।

१५. सूर: ताहा (पारा १६)
ख़ासियत—इसको लिख कर हरीर के हरे कपड़े में लपेट कर पास रखे । अगर निकाह का पैग़ाम भेजे, कामियाबी हो। अगर दो शख़्सों में या दो लश्करों में सुलह कराना चाहे, इन्कार न करें और बादशाह से मतलब हासिल हो और जिस औरत की शादी न हो तो उसको इसके पानी से ग़ुस्ल दे तो निकाह आसान हो।

وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ڏ لِنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ۭ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ۝ وَاْمُرْ اَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا ۭ لَا نَسْــَٔــلُكَ رِزْقًا ۭ نَحْنُ نَرْزُقُكَ ۭ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوٰى

१६. व ला तमुद्दुन न ऐने क इला मा मत्तअ्ना बिही अज़्वाजन मिन हुम ज़हरतल हयातिद्दुन्या लि नफ़्ति न हुम फ़ीहि व रिज़्क़ु रब्बि क ख़ैरुं व-व अब्क़ा वअ्मुर अह्ल क बिस्सलाति वस्तबिर अलैहा ला नस्अलु क रिज़्क़न नह्नु नर्ज़ु कु क वल आक़िबतु लित्तक़्वा० —पारा १६, रुकूअ १७

तर्जुमा—और हरगिज उन चीजों की तरफ़ आप आंख उठा कर न देखें, जिनसे हमने कुफ़्फ़ार के मुख्तलिफ़ गिरोहों को उनकी आज़माइश के लिए मुतमत्तअ कर रखा है कि वे सिर्फ़ दुनिया की ज़िंदगी की रौनक है और आपके रब का अतीया कई दर्जे बेह-तर है और देर तक क़ायम रहने वाला है और अपने मुताल्लिक़ लोगों को नमाज का हुक्म करते रहिए और खुद भी उसके पाबन्द रहिए। हम आप से रोज़ी (कमवाना) नहीं चाहते। मआश तो आप को हम देंगे। आखिरत तक़्वा वालों के लिए है।

खासियत—इसको लिख कर बाज़ू पर बांधे तो अगर बे-शादी है, शादी हो जाए, भूल का मर्ज़ हो तो खत्म हो जाए, मरीज़ हो तो शिफ़ा हो, फ़क़ीर हो तो तवंगर हो जाए।

१७. सूरः अहज़ाब (पारा २१)

खासियत—लड़कियों के पैग़ाम ज़्यादा से ज़्यादा आएं, इसके लिए इसे हिरन की झिल्ली या कागज पर लिख कर एक डिब्बे में बन्द करके घर में रख दे।

२. शौहर को मेहरबान बनाना

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَتَّخِذُ مِن دُونِ اللّٰهِ أَندَادًا يُحِبُّونَهُمْ كَحُبِّ اللّٰهِ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ وَلَوْ يَرَى الَّذِينَ ظَلَمُوا إِذْ يَرَوْنَ الْعَذَابَ أَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِيعًا وَأَنَّ اللّٰهَ شَدِيدُ الْعَذَابِ [illegible]

१. व मिनन्नासि मंय्यत्तख़िज़ु मिन दूनिल्लाहि अन्दादा य्युहिब्बूनहुम क हुब्बिल्लाहि वल्लज़ी न आमनू अशद्दु हुब्बल्लिल्लाहि व लौ यरल्लज़ी न ज़ लमू इज़ यरौनल अज़ा ब अन्नल क़ू व त लिल्लाहि जमीअन व अन्नल्ला ह शदीदुल अज़ाब० —पारा २, रुकूअ ४

खासियत—जिसका शौहर नाराज़ हो, इस आयत को मिठाई पर पढ़ कर खिलाये, इन्शाअल्लाह तआला मेहरबान हो जाएगा, मगर वाज़ेह रहे कि ना-जायज़ महल में असर न होगा।

३. बीवी का मुहब्बत करना

१. सूरः यूसुफ़ को अगर लिख कर और तावीज़ बना कर बाज़ू पर बांधे तो उसकी बीवी उसको बहुत चाहने लगे।

२. अल-मुग़्नी (तवंगर करने वाले)

खासियत—हज़ार बार पढ़े तो तवंगरी हासिल हो और अगर जिमाअ के वक़्त ख़्याल से पढ़े तो बीवी उस से मुहब्बत करने लगे।

४. औलाद वाला होना

رَبِّ هَبْ لِي مِن لَّدُنكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ [illegible]

१. रब्बि हब ली मिल्लदुन क ज़ुर्रीयतन तय्यिबतन इन्न क समीउद्दुआ इ० —पारा ३, रुकूअ १२

तर्जुमा—(हज़रत ज़करीया ने अर्ज़ किया) ऐ मेरे रब! इनायत कीजिए मुझको खास अपने पास से कोई अच्छी औलाद। बेशक आप दुआ के सुनने वाले हैं।

खासियत—जिसको औलाद से मायूसी हो गयी हो, इस आयत को पढ़ा करे, अल्लाह इस आयत की बरकत से नेक लड़का अता फ़रमायेगा, इन्शाअल्लाहु तआला।

رَبِّ لَا تَذَرْنِي فَرْدًا وَأَنتَ خَيْرُ الْوَارِثِينَ [illegible]

२. रब्बि ला तज़र्नी फ़र्दं व व अन त खैरुल वारिसीन० (पारा १७, रुकूअ ६)

तर्जु मा—ऐ मेरे परवरदिगार ! मुझको ला-वारिस मत रखियो (यानी मुझे फ़रज़ंद दीजिए कि मेरा वारिस हो) और सब वारिसों से बेहतर आप ही हैं।

ख़ासियत—जिसको औलाद से मायूसी हो, हर नमाज़ के बाद तीन बार पढ़ा करे, इन्शाअल्लाहु तआला औलाद वाला हो जाएगा। यह दुआ हज़रत ज़करीया अलैहिस्सलाम की है।

والسماء بنيناها بأيد وإنا لموسعون ۝ والأرض فرشناها فنعم

الماهدون ۝ (پ ٢٧ ع ٢)

३. वस्समा अ बनैना हा बिऐ दिव व इन्ना ल मूसिऊन वल् अर्ज़ फ़रश्नाहा फ़ नि अमल माहिदून० (पारा २७, रुकूअ २)

तर्जु मा—और हमने आसमानों को (अपनी) क़ुदरत से बनाया और हम बड़ी क़ुदरत वाले हैं और हमने ज़मीन को फ़र्श बनाया, सो हम (कैसे) अच्छे बिछाने वाले हैं।

ख़ासियत—जिसको औलाद से मायूसी हो, तो वह दो अंडे रोज जोश करके और पोस्त दूर करके एक पर 'वस्समा अ बनैना हा बिऐ दिव व इन्ना ल मूसिऊन और दूसरे पर 'वल् अर्ज़ फ़रश्नाहा फ़निअमल माहिदून०' लिखे। पहला अंडा मर्द और दूसरा अंडा औरत खाये। इसी तरह चालीस दिन तक यह तर्कीब करे और इस दर्मियान में क़ुर्बत भी करता जाए, इन्शाअल्लाहु तआला हमल ठहर जाएगा।

فقلت استغفروا ربكم إنه كان غفارا ۝ يرسل السماء عليكم مدرارا

ويمددكم بأموال وبنين ويجعل لكم جنات ويجعل لكم أنهارا ۝ (پ ٢٩ ع ٩)

४. फ़क़ुल्तुस्तग़्फ़िरू रब्ब कुम इन्नहू का न ग़फ़्फ़ारंय्युर्सिलिस्समा अ अलैकुम मिदरारंव व युम्दिदकुम बिअम्वालिंव व बनी न व यज्अलकुम जन्नातिंव व यज्अलकुम अन्हारा०

तर्जु मा—और मैंने कहा कि तुम अपने परवरदिगार से गुनाह बख़्शवाओ, बेशक वह बड़ा बख़्शने वाला है। तुम पर बहुत ज़्यादा बारिश भेजेगा और तुम्हारे माल और औलाद में तरक़्क़ी देगा और तुम्हारे लिए बाग़ लगा देगा और तुम्हारे लिए नहरें बहा देगा।

ख़ासियत—कुछ लोग हज़रत हसन बसरी रह० के पास आये। किसी ने पानी न बरसने की शिकायत की और किसी ने औलाद न होने की शिकायत की और किसी ने दूसरी ज़रूरत के लिए कहा। आपने सबके जवाब में फ़रमाया कि 'इस्तग़फ़ार' किया करो। एक आदमी ने पूछा कि या हज़रत ! इसकी क्या वजह कि आपने सबको इस्तग़फ़ार ही के लिए फ़रमाया है। आपने जवाब में इन ही आयतों को पढ़ा और फ़रमाया कि देखो अल्लाह तआला ने अपने कलाम पाक में इसी को इर्शाद फ़रमाया है।

५. बांझपन ख़त्म होना

وإني خفت الموالي من ورائي وكانت امرأتي عاقرا فهب لي من لدنك

وليا ۝ يرثني ويرث من آل يعقوب واجعله رب رضيا ۝ يا زكريا إنا نبشرك

بغلام اسمه يحيى لم نجعل له من قبل سميا ۝ قال رب أنى يكون لي غلام

وكانت امرأتي عاقرا وقد بلغت من الكبر عتيا ۝ قال كذلك قال ربك هو

علي هين وقد خلقتك من قبل ولم تك شيئا ۝ قال رب اجعل لي آية

قال آيتك ألا تكلم الناس ثلاث ليال سويا ۝ فخرج على قومه من المحراب

فأوحى إليهم أن سبحوا بكرة وعشيا ۝ يا يحيى خذ الكتاب بقوة وآتيناه

الحكم صبيا ۝ وحنانا من لدنا وزكاة وكان تقيا ۝ وبرا بوالديه

ولم يكن جبارا عصيا ۝ وسلام عليه يوم ولد ويوم يموت ويوم يبعث

१. व इन्नी ख़िफ़्तु से व यौ म युब्असु हय्यन॰

(पारा १६, रुकूअ ४)

ख़ास्सियत—जिस औरत को हमल न रहता हो, दोनों मियां-बीवी जुमा के दिन रोज़ा रखें, और शकर और बादाम और रोटी से इफ़्तार करें और पानी बिल्कुल न पिएं और ये आयतें शीशे के जाम पर शहद से, जिसको आग न पहुंची हो, लिख कर पाक मीठे पानी से धोकर सफ़ेद नख़ुद दो सौ चालीस दाने पर ये आयतें पढ़ कर इस पानी को हंडिया में डाल कर वह नख़ुद उसमें डाल दें और ख़ूब तेज़ आंच कर दें, फिर इशा की नमाज़ पढ़ कर सूरः मरयम पढ़ें। जब नख़ुद ख़ूब पक जाएं, पानी से निकाल लें और उसमें थोड़ा अंगूर के पानी को बढ़ाकर आधा-आधा दोनों मियां-बीवी पिएं और थोड़ी देर सो रहें, फिर उठ कर मुबाशरत करें। इन्शाअल्लाहु तआला उसी रोज़ हमल रह जाएगा और तीन रात तक खाना खाने से पहले इसी तरह करें तो औलाद बहुत अच्छी हो।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ مِن سُلَالَةٍ مِّن طِينٍ ثُمَّ جَعَلْنَاهُ نُطْفَةً فِي قَرَارٍ مَّكِينٍ ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظَامًا فَكَسَوْنَا الْعِظَامَ لَحْمًا ثُمَّ أَنشَأْنَاهُ خَلْقًا آخَرَ فَتَبَارَكَ اللَّهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ

२. व ल क़द ख़लक़्नल इंसा न मिन सुलालतिम मिन तीन सुम म जअल्नाहु नुत्फ़तन फ़ी क़रारिम मकीन॰ सुम म ख़लक़्नल नुत्फ़ त ल क़तन फ़ ख़लक़्नल अ ल क़ त मुज़्ग़तन फ़ख़लक़्नल मुज़्ग़ त अ़िज़ामन फ़कसौनल अ़िज़ा म लह्मन सुम म अन्शअ्नाहु ख़ल्क़न आख़र फ़ तबा रकल्लाहु अह्सनुल ख़ालिक़ीन॰

—पारा १८, रुकूअ १

ख़ास्सियत—औरत के हामिला होने के वास्ते ये तीन आयतें रैहान अतर्जी के सात पत्तों पर लिख कर औरत उनको एक-एक पत्ता करके निगल जाए और हर पत्ते पर पीले रंग की गाय का दूध एक घूंट पी जाए। इन्शाअल्लाहु तआला उसको हमल पाए।

३. जिस दिन औरत हैज़ से पाक होकर ग़ुस्ल करे, एक बकरी का बच्चा फ़रबा ज़िब्ह करके एक देगचे में थोड़े पानी में यख़नी के तौर पर पकाया जाए और वह पानी औरत को पिला दिया जाए और एक बर्तन में सूरः फ़ातिहा, दरूद शरीफ़ और अबजद से क़रशत तक लिख कर और दूसरे बर्तन में—

قَالَ إِنَّمَا أَنَا رَسُولُ رَبِّكِ لِأَهَبَ لَكِ غُلَامًا زَكِيًّا قَالَتْ أَنَّىٰ يَكُونُ لِي غُلَامٌ وَلَمْ يَمْسَسْنِي بَشَرٌ وَلَمْ أَكُ بَغِيًّا قَالَ كَذَٰلِكِ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ وَلِنَجْعَلَهُ آيَةً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا وَكَانَ أَمْرًا مَّقْضِيًّا فَحَمَلَتْهُ بِصَوْتِ اللَّهِ فَجَعَلَهُ بِلُطْفِ اللَّهِ فَحَمَلَتْهُ بِلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ فَانتَبَذَتْ بِهِ مَكَانًا قَصِيًّا إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَن يَقُولَ لَهُ كُن فَيَكُونُ

क़ा ल इन्नमा अना रसूलु रब्बि क लि अ ह ब ल कि ग़ुलामन ज़कीया॰ क़ालत अन्ना यकूनु ली ग़ुलामुन व लम् यम्सस्नी ब-श-रुं व लम अकु बग़ीया॰ क़ा ल कज़ालि क क़ा ल रब्बुकि हु व अ़लय्य हय्यिनुं व व लि न जअ लहु आयातल्लिन्नासि व रहमतम्मिन्ना व का न अम्रम मक़्ज़ीया॰ फ़ ह म लतहु बिसौतिल्लाहि फ़ जअलहु बिलु-त्फ़िल्लाहि फ़ हम लतहु बि ला हौल वला क़ू व त इल्ला बिल्लाहि फ़न्त ब ज़त बिही मकानन क़सीया॰ इन्नमा अम्रुहू इज़ा अरा द शैअन अंय्यकू ल लहू कुन फ़ यकून॰

लिख कर पानी में हल करके शौहर से क़ुर्बत के वक़्त पी ले, इन्शाअल्लाहु तआला हमल रह जाएगा।

४. बांझ के लिए—

बांझ औरत के वास्ते हिरन की झिल्ली पर गुलाब और जाफ़रान से यह आयत लिखे—

وَلَوْ أَنَّ قُرْآنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ أَوْ قُطِّعَتْ بِهِ الْأَرْضُ أَوْ كُلِّمَ بِهِ الْمَوْتَىٰ
بَل لِّلَّهِ الْأَمْرُ جَمِيعًا ۝

व लौ अन् न क़ुरआनन सुय्यिरत बिहिल जिबालु अव क़ुत्तिअत बिहिल अर ज़ु औ कुल्लि म बिहिल मौता बल-लिल्लाहिल अम्र जमीअन—

फिर उस तावीज़ को गरदन में बांधे।

५. बांझ के लिए—

चालीस लौंगों पर सात बार इस आयत को पढ़े—

أَوْ كَظُلُمَاتٍ فِي بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَغْشَاهُ مَوْجٌ مِّن فَوْقِهِ مَوْجٌ مِّن فَوْقِهِ سَحَابٌ ظُلُمَاتٌ بَعْضُهَا
فَوْقَ بَعْضٍ إِذَا أَخْرَجَ يَدَهُ لَمْ يَكَدْ يَرَاهَا وَمَن لَّمْ يَجْعَلِ اللَّهُ لَهُ نُورًا فَمَا لَهُ
مِن نُّورٍ ۝

औ क ज़ुलुमातिन फ़ी बहिरल्लुज्जीयिन यग़शाहु मौजुम मिन फ़ौक़िही सहाबुन ज़ुलुमातुम बअ़ज़ुहा फ़ौ क़ बअ़ज़िन इज़ा अख़् र ज य द हू लम यकद यराहा व मल्लम यज्अ़लिल्लाहु लहू नूरन फ़मा लहू मिन नूर०

और एक लौंग को हर दिन खाये और शुरू करे हैज़ के ग़ुस्ल होने से और उन दिनों में उसका ज़ौज (जोड़ा) उस से सोहबत करता रहे।

फ़ायदा—मौलाना ने फ़रमाया और शर्त इस अमल की यह भी है कि लौंग रात को खाये और उस पर पानी न पिए।

الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ

६. अल-बारिउल मुसव्विर (बनाने वाले, सूरत बनाने वाले)

ख़ासियत—ज़्यादा से ज़्यादा ज़िक्र करने से नयी-नयी सन्अतों का ईजाद आसान हो। अगर बांझ औरत सात रोज़ तक रोज़ा रखे और पानी से इफ़्तार करे और इफ़्तार के बाद २१ बार पढ़े तो इन्शाअल्लाहु तआला हमल क़रार पा ले और औलाद हो।

६. हमल की हिफ़ाज़त

اللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ أُنثَىٰ وَمَا تَغِيضُ الْأَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ وَكُلُّ
شَيْءٍ عِندَهُ بِمِقْدَارٍ ۝

१. अल्लाहु यअ़लमु मा तह्मिलु कुल्लु उन्सा व मा तग़ीज़ुल अर्हामु व मा तज़्दादु व कुल्लु शैइन अिन्दहू बिमिक़्दारिन०

—पारा १३, रुकूअ ८

तर्जुमा—अल्लाह तआला को सब ख़बर रहती है, जो कुछ किसी औरत को हमल रहता है (लड़का या लड़की) और जो कुछ रहम में कमी-बेशी होती है और हर चीज़ अल्लाह के नज़दीक एक ख़ास अन्दाज़े से है।

ख़ासियत—अगर हम्ल गिर जाने का डर हो या हमल न ठहरता हो, तो यह आयत और ऊपर वाली आयत इन दोनों को लिख कर औरत के रहम पर बांधे, इन्शाअल्लाहु तआला हमल महफ़ूज़ रहेगा और अगर न ठहरा होगा, तो क़रार पायेगा।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمْ إِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيمٌ ۝

२. या ऐयुहन्नासुत्त क़ू रब्बकुम इन न ज़ल्ज़ लतस्सा अति शैउन अज़ीम०

—पारा १७, रुकूअ ८

तर्जुमा—ए लोगो! अपने रब से डरो (क्योंकि) यक़ीनन क़ियामत (के दिन का) ज़लज़ला बड़ी भारी चीज़ होगी।

ख़ासियत—हमल की हिफ़ाज़त के लिए फ़ायदेमंद है हर नमाज़ के बाद तीन बार पढ़ा करे।

إِذْ قَالَتِ امْرَأَتُ عِمْرَانَ رَبِّ إِنِّي نَذَرْتُ لَكَ مَا فِي بَطْنِي مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ
مِنِّي إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ○ فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ إِنِّي وَضَعْتُهَا أُنْثَىٰ
وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْ ○ وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالْأُنْثَىٰ ○ وَإِنِّي سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَإِنِّي
أُعِيذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ○ فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُولٍ حَسَنٍ وَأَنْبَتَهَا
نَبَاتًا حَسَنًا وَكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ○ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ وَجَدَ عِنْدَهَا
رِزْقًا ○ قَالَ يَا مَرْيَمُ أَنَّىٰ لَكِ هَٰذَا ○ قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَرْزُقُ مَنْ
يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ○ [illegible]

३. पारा ३, रुकूअ १२ से इज़ क़ालतिम र अ तु……बिग़ैरि हिसाब०

ख़ासियत—यह आयत हमल की हिफ़ाज़त और बच्चों को आफ़तों और तब्दीलियों और दूसरे ऐबों और बुरी नज़र से बचाये रखने के लिए है। इन आयतों को गुलाब और ज़ाफ़रान से हिरन की झिल्ली पर लिख कर हामिला औरत की दाहिनी कोख पर बांध दे, बच्चा होने तक बंधा रहे। इन्शाअल्लाहु तआला तमाम आफ़तों से बची रहेगी।

وَالَّتِي أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيهَا مِنْ رُوحِنَا وَجَعَلْنَاهَا وَابْنَهَا
آيَةً لِلْعَالَمِينَ ○ إِنَّ هَٰذِهِ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَأَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُونِ ○ وَتَقَطَّعُوا
أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ كُلٌّ إِلَيْنَا رَاجِعُونَ ○ [illegible]

४. वल्लती अह्सनत फ़र्जहा फ़ न फ़ख़्ना फ़ीहा मिर्रूहिना व जअल्नाहा वब्नहा आयतल्लिल आलमीन० इन न हाज़िही उम्मतुकुम उम्मतंव वाहिदतन व अना रब्बुकुम फ़अ्बुदूनि० व तक़त्तअू अम्रहुम बैनहुम कुल्लुन इलैना राजिऊन० —पारा १७, रुकूअ ६

ख़ासियत—हमल की हिफ़ाज़त और बच्चा सही व सालिम पैदा होने के लिए ये आयतें लिख कर शुरू हमल में चालीस दिन तक हामिला औरत के बांध दें, फिर खोल कर नवें महीने फिर बांधें, फिर पैदाइश के बाद तावीज़ खोल कर बच्चे के बांध दें।

५. सूरतुल हुजुरात (पारा २६)

ख़ासियत—काग़ज़ पर लिख कर दीवारों पर चस्पां कर दे तो आसेब न आए। लिख कर पिलाने से दूध बढ़े और हमल की हिफ़ाज़त रहे।

६. सूरः अल-हाक़्क़ा (पारा २९)

ख़ासियत—हामिला के बांधने से बच्चा हर आफ़त से बचा रहे। अगर बच्चा होने के वक़्त उसका पढ़ा हुआ पानी मुंह में लगाएं, तो उसको अक़्लमंदी हासिल हो और हर मर्ज़ और हर आफ़त से, जिसमें बच्चे मुब्तला हो जाते हैं, बचा रहे और अगर रोग़ने ज़ैतून पढ़ कर बच्चे को मल दें तो बहुत फ़ायदा बख़्शे और सब कीड़े-मकोड़े और मूज़ी जानवरों से बचा रहे और यह तेल तमाम जिस्मानी दर्दों को नफ़ा देता है।

७. हमल या फलों के गिरने से बचाने के लिए यह लिख कर बांध दिया जाए—

إِنَّ اللَّهَ يُمْسِكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ أَنْ تَزُولَا ○
وَلَئِنْ زَالَتَا إِنْ أَمْسَكَهُمَا مِنْ أَحَدٍ مِنْ بَعْدِهِ ○ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ○ وَلَهُ
مَا سَكَنَ فِي اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ○ [illegible]
[illegible] لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ ○

इन्नल्लाह युम्सिकुस्समावाति वल् अर्ज़ अन् तज़ूला व लइन ज़ा- ल ता इन अम्स क हुमा मिन अ ह दिम मिन बअ्दिही इन्नहू का न

हलीमन गफ़ूरा० व लहू मा स क न फ़िल्लैलि वन्नहारि व हुवस्समी
उल अलीम व ल बिसू की कहि़फ़हिम सला स मि अतिन सिनी
वज्दादू तिस् अन व लाहौ ल व ला कु व त इल्ला बिल्लाहिल अली
यिल अज़ीम०

८. या इसे किसी बर्तन पर लिख कर पिलाया जाए—

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ° اَوَلَمْ
يَرَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا وَجَعَلْنَا
مِنَ الْمَآءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ° وَلَقَدْ اٰتَيْنَآ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا
بِهٖ عٰلِمِيْنَ ° وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ نَافِلَةً ° وَكُلًّا جَعَلْنَا صٰلِحِيْنَ °
وَاَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ اَنِّيْ مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ° وَزَكَرِيَّآ
اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ رَبِّ لَا تَذَرْنِيْ فَرْدًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ ° وَالَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا
فَنَفَخْنَا فِيْهَا مِنْ رُّوْحِنَا وَجَعَلْنٰهَا وَابْنَهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ °

९. अल-मुब्दी उ (पैदा करने वाले) يَا مُبْدِئُ

ख़ासियत—हामिला क पेट पर रात के आख़िरी हिस्से में पढ़ें तो हमल महफ़ूज़ रहे और गिरे नहीं।

७. विलादत में आसानी

اِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ ° وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ° وَاِذَا الْاَرْضُ مُدَّتْ °
وَاَلْقَتْ مَا فِيْهَا وَتَخَلَّتْ ° (پ ٣٠ ع ٩)

इज़स्समाउन शक़्क़त० व अज़िनत लिर ब्बिहा व हुक़्क़त० व इज़ल अर्ज़ु मुद्दत व अल्क़त मा फ़ीहा व तख़ल्लत०

(पारा ३०, रुकूअ ६)

तर्जुमा—जब आसमान फट जाएगा और अपने रब का हुक्म सुन लेगा और वह (आसमान) इसी लायक़ है और जब ज़मीन खींच कर बढ़ा दी जाएगी और वह (ज़मीन) अपने अन्दर की चीज़ों को (यानी मुर्दों को) बाहर उगल देगी और खाली हो जाएगी।

ख़ासियत—इन आयतों को लिख कर विलादत की आसानी के लिए बायीं रान में बांध दे। इन्शाअल्लाहु तआला बहुत आसानी से विलादत होगी, मगर विलादत के बाद तावीज़ को फ़ौरन खोल देना चाहिए और उसी औरत के सर के बाल की धूनी मक़ामे ख़ास पर देना विलादत में फ़ायदेमंद है।

قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اَمَّنْ يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ
وَمَنْ يُّخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُّدَبِّرُ الْاَمْرَ فَسَيَقُوْلُوْنَ
اللّٰهُ فَقُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ° (پ ١١ ع ٩)

२. क़ुल मय्यर्ज़ुक़ुकुम मिनस्समाइ वल अर्ज़ि अम्मंय्यम्लिकुस्सम अ वल अब्सा र व मंय्युख़्रिजुल हय य मिनल मय्यिति व युख़्रिजुल मय्य त मिनल हय्यि व मंय्युदब्बिरुल अम् र फ़ स यक़ूलूनल्लाहु फ़क़ुल अ फ़ ला तत्तक़ून

—पारा ११, रुकूअ ६

ख़ासियत—यह आयत विलादत में आसानी के लिए और कान के दर्द और रिज़्क़ (रोज़ी) की आसानी के लिए है मोटे कद्दू के पोस्त पर स्याही से लिख कर बच्चा जनने के दर्द वाली औरत के दाहिने बाज़ू पर बांध देने से विलादत में आसानी होती है और क़लईदार तांबे की तश्तरी पर अर्क़ गुदना से लिख कर साफ़ शहद से धोकर आग पर पका कर, जिसके कान में दर्द हो, तीन बूंद छोड़ दे। इन्शाअल्लाहु तआला नफ़ा हो और जो काग़ज़ पर लिख कर सीने कपड़े में तावीज़ बना कर दाहिने बाज़ू पर बांधे, रोज़ी मिलने में उसके लिए आसानी हो।

اَوَلَمْ يَرَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا

وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَاءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ۖ أَفَلَا يُؤْمِنُونَ ۝ (پ۱۷ع۳)

३. अ व लम यरल्लजी न क फ़ रू अन्नस्समावाति वल अर ज कानता र त क़न फ़ फ़तक़नाहुमा व जअलना मिनल माइ कुल ल शैइन हय्यिन अ फ़ ला युमिनून०

—पारा १७, रुकूअ ३

खासियत—जो औरत बच्चा जनने के दर्द में मुब्तला हो, उसके पेट या कमर पर उसको दम कर दे या लिख कर बांध दे तो विलादत आसानी से हो।

४. बच्चा जनने के दर्द को दूर करने के लिए—जिस औरत को **बच्चा जनने का दर्द** तकलीफ़ दे तो पर्चा काग़ज़ में यह आयत लिखे—

وَأَلْقَتْ مَا فِيهَا وَتَخَلَّتْ ۝ وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۝

व अल्क़त माफ़ीहा व तख़ल्लत व अज़िनत लिर ब्बिहा व हुक़्क़त अय्यन असरा अहय्यन०

और पर्चे को कपड़े में लपेटे और उसकी बायीं रान में बांध दे तो वह जल्दी जनेगी।

५. अगर अव्वल सूरः इन्शिक़ाक़ से हुक़्क़त तक मीठी चीज़ पर पढ़े और हामिला को खिलाए तो भी जल्दी जने।

८. दूध बढ़ना

१. सूरतुल हिज्र (पारा १३)

खासियत—जो शख़्स उसको ज़ाफ़रान से लिख कर किसी औरत को पिलाए उसका दूध बढ़ जाए। सूरः को लिख कर पिलाने से दूध पिलाने वाली औरत का दूध बढ़ जाए।

२. सूरतुल हुजुरात (पारा २६)

खासियत—काग़ज़ पर लिख कर दीवार पर चस्पां कर दे तो आसेब न आए, लिख कर पिलाने से दूध बढ़े और हमल महफ़ूज़ रहेगा, इन्शाअल्लाहु तआला।

९. दूध छुड़ाना

१. सूरः बुरूज (पारा ३०)

खासियत—जिसका दूध छुड़ाना मंज़ूर हो, उसके बांध दे, वह आसानी से दूध छोड़ दे।

१०. औलाद (लड़कों) का नेक होना

१. सूरः अअ्ला (पारा ३०)

खासियत—शुरू महीने हमल में अगर औरत की दाहिनी पसली पर यह सूरः लिख दे तो इन्शाअल्लाहु तआला लड़का पैदा हो।

२. ऐसी औरत के लिए जो लड़का न जनती हो—जो औरत सिवाए लड़की के लड़का न जनती हो, तो हमल पर तीन महीने गुज़रने से पहले हिरन की झिल्ली पर ज़ाफ़रान और गुलाब से इस आयत को लिखे—

اللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ أُنْثَىٰ وَمَا تَغِيضُ الْأَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ۖ وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ بِمِقْدَارٍ ۝ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيرُ الْمُتَعَالِ

अल्लाहु यअलमु मा तह्मिलु कुल्लु उन्सा व मा तग़ीज़ुल अर्हामु व मा तज़्दादु व कुल्लु शैइन अिन्दहू बिमिक़्दारिन आलिमुल ग़ैबि वश्शहादतिल कबीरुल मुतआलि०

और इस आयत को लिखे—

يَا زَكَرِيَّا إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ اسْمُهُ يَحْيَىٰ لَمْ نَجْعَلْ لَهُ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ۝

या ज़ क रीया इन्ना नुबश्शिरु क बिगुलामि-नि-स्मुहू यह्या लम नज्अल लहू मिन क़ब्लु समीया०

फिर यह लिखे—

بحق مريم وعيسى ابنا صالحا طفل امي بحق محمد وآله

बिहक्किक मर य म व ग्रीसा इब्नन सालिहन तफ़्लुन उम्मि बिहक्क़ि मुहम्मदिव व ग्रालिही०

फिर इस तावीज को हामिला बांधे रहे।

३. लड़का पैदा होने के लिए—ग्रौर यह भी उसी एतमाद वाले शख्स ने मुझको खबर दी है कि जो ग्रौरत सिवाए लड़की के लड़का न जनती हो, उसके पेट पर गोल लकीर खींचे ग्रौर सत्तर बार उंगली फेरने के साथ 'या मतीनु' कहे।

४. नेक लड़का पैदा होने के लिए—पूरी सूरः यूसुफ़ लिख कर हामिला के तावीज बांध दे, लड़का, नेक ग्रौर दीनदार पैदा हो।

५. ग्रल-मुतकब्बिरु (तकब्बुर करने वाले)

खासियत—बहुत ज्यादा पढ़ने से बुजुर्गी में बरकत हो ग्रौर मिलन की रात में बीवी के पास जाकर मुबाशरत से पहले दस बार जिक्र करे तो लड़का, नेक पैदा हो।

६. सूरः फ़ज्र (पारा ३०)

खासियत—ग्राधी रात में पढ़ कर जिमाग्र करने से ग्रौलाद नेक-बख्त पैदा हो।

७. ग्रल-बर्रु (नेक कार)

खासियत—ग्रगर सात बार पढ़ कर बच्चे पर दम किया करे तो नेक-बख्त उठे।

११. बच्चों की हिफ़ाज़त

१. इज क़ा ल तिम र ग्र तु ग्रिम रा न से बिग़ैरि हिसाब तक

—पारा ३, रुकूग्र १२

खासियत—ग्रगर मुश्क व ज़ाफ़रान से लिख कर तांबे या लोहे की नलकी में रख कर बच्चे के गले में लटका दिया जाए तो रोने ग्रौर डरने ग्रौर बुरे ख्वाब देखने से बचा रहे ग्रौर मां के थोड़े दूध से पेट भर जाए ग्रौर ग्रगर दूध कम हो तो बढ़ जाए ग्रौर बच्चा खूब पले-बढ़े।

२. सूरः जासिया (पारा २५)

खासियत—बच्चे की पैदाइश के वक्त इसको लिख कर बांधने से तमाम ग्रासेब व तक्लीफ़ देने वाले जानवरों से बचा रहेगा।

३. इन्नी तवक्कल्तु ग्रलल्लाहि से ग्रला कुल्लि शैइन हफ़ीज़०

(पारा १२, रुकूग्र ५)

खासियत—तावीज बना कर बच्चे के गले में डालने से जितने मर्ज बच्चों को हो जाते हैं, सबसे हिफ़ाज़त रहती है।

४. सूरः इब्राहीम ग्रला नबीयिना व ग्रलैहिस्सलामु०

(पारा १३)

खासियत—सफ़ेद रेशम के टुकड़े पर इसको वुज़ू करके लिख कर लड़के के गले में बांध दे तो रोना-डरना ग्रौर बुरी नज़र, सब दूर हो जाए ग्रौर दूध छोड़ना ग्रासान हो।

५. सूरः बलद (पारा ३०)

खासियत—पैदाइश के वक्त लिख कर बच्चे के बांध देने से सब तक्लीफ़ देने वाले जानवर ग्रौर दहशत से महफ़ूज रहे।

१२. बच्चों का पलना-बढ़ना

الَّذِي أَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهُ وَبَدَأَ خَلْقَ الْإِنسَانِ مِن طِينٍ ثُمَّ جَعَلَ
نَسْلَهُ مِن سُلَالَةٍ مِّن مَّاءٍ مَّهِينٍ ثُمَّ سَوَّاهُ وَنَفَخَ فِيهِ مِن رُّوحِهِ وَجَعَلَ لَكُمُ

...السمع والأبصار والأفئدة لعلكم تشكرون ۝ [illegible]

१. अल्ल ाहु अख़्र ज कुम मिम बुतू नि उम्महातिकुम ला तअ़्लमू न शैअंव व ज अ़ ल लकुमुस्स म अ़ वल् अब्सा र वल्अफ़्इ द त क़लीलम मा तश्कुरून०

—पारा २, रुकूअ़ १४

ख़ासियत—जब बच्चे को पैदा हुए सत्तर दिन गुजर जाएं, उसको शीशे के बर्तन में लिख कर बारिश के पानी से धोकर दो हिस्से करे। एक हिस्सा उस बच्चे के खाने की चीज में मिलाये और एक हिस्सा बोतल से रख छोड़ें और सात दिन तक उसमें से बच्चे को पिलाये और उसके मुंह को मले। इन्शाअल्लाहु तआला खूब पले-बढ़े।

१३. जिमाअ़ की ताक़त

१. जिमाअ़ की ताक़त पाने के लिए—हसन बसरी रहमतुल्लाह अलैहि से जिक्र किया गया कि फ़्लां शख़्स ने निकाह किया, मगर औरत पर क़ादिर न हुआ। आपने दो अंडे जोश दिए हुए मंगाये और छिल्का उतार कर एक पर यह आयत लिखी—

والسماء بنيناها بأيد وإنا لموسعون ۝

वस्समा अ बनैनाहा बिऐदिंव व इन्ना ल मूसिअ़ून०

और मर्द को खाने के लिए दे दिया और दूसरे पर यह आयत लिखी—

والأرض فرشناها فنعم الماهدون ۝

वल अर ज़ फ़रश्नाहा फ़ निअ़ मल माहिदून०

और वह औरत को खाने के लिए दे दिया और कहा कि अब मतलब हासिल करो चुनांचे वह कामियाब रहा।

१४. लड़के का ज़िन्दा न रहना

१. उस औरत के लिए जिसका लड़का न ज़िंदा रहे—और उस शख़्स ने, जिस पर एतमाद है, ख़बर दी है कि जिस औरत का लड़का ज़िंदा न रहता हो, तो अजवाइन और काली मिर्च ले, दोनों चीज़ों पर दोशंबा की दोपहर को चालीस बार 'सूर: वश्शम्स' पढ़े और हर बार दरूद शरीफ़ पढ़ कर शुरू करे और उसी पर ख़त्म करे, उसको हर दिन औरत खाया करे, हमल के दिन से लड़के के दूध छुड़ाने तक।

१५. छिपी बातों का मालूम करना

१. अल्लाहु यअ़्लमु मा तह्‌मिलु कुल्लु उन्सा से अल-कबीरुल मुतआल तक

—पारा १३, रुकूअ़ ५

तर्जुमा—अल्लाह तआला को सब ख़बर रहती है, जो कुछ किसी औरत को हमल रहता है (लड़का या लड़की) और जो कुछ रहम में कमी-बेशी होती है और हर चीज़ अल्लाह के नज़दीक एक ख़ास अन्दाज़े से है। वह तमाम छिपी और ज़ाहिर चीज़ों का जानने वाला है, सबसे बड़ा आलीशान है।

ख़ासियत—जो शख़्स किसी छिपी बात को मालूम करना चाहे, जैसे हामिला के पेट में क्या है या दफ़्न किया हुआ ख़ज़ाना कहां है या कोई चीज़ दफ़्न करके भूल गया, उसकी जगह मालूम करनी है या ग़ायब कब तक आयेगा या मरीज़ कब तक अच्छा हो जाएगा तो वुज़ू करके इत्र लगाये और पीर के दिन रोज़ा रखे और रात को वुज़ू करके सोए और मंगल के दिन सूरज निकलने से पहले

इन आयतों को एक हरे कपड़े पर जाफ़रान और गुलाब खालिस से लिखे, फिर उस कपड़े को मूंग व कंकर ने भूसी देकर उसको एक डिब्बे के अन्दर बन्द कर दे, इस तरह कि न कोई आदमी उसको देखे और न चांद, सूरज का सामना हो। जब बुध की रात हो तो इशा की नमाज पढ़कर उस डिब्बे को हाथ में लेकर यों कहे—

يَا عَالِمَ الْخَفِيَّاتِ فِي الْأَرْضِ يَا مَنْ هُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ [illegible]
أَوْ يَزِيدَ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

या आलिमल खफ़ीयाति फ़िल उमूरि या मन हु व अला कुल्लि शैइन क़दीर इत्तलिअनी अला कुल्लि मा उरीदु इन्न क अला कुल्लि शैइन क़दीर०

फिर अल्लाह का ज़िक्र करता हुआ सो जाए। ख्वाब में कोई चाही बात बतला जाएगा। अगर उस रात को नज़र न आए तो जुमेरात को रोज़ा रख कर जुमा की रात में इसी तरह करे, इन्शा-अल्लाहु तआला ज़रूर कोई न कोई ख्वाब में उसको ख़बर देगा।

रोज़ी और क़र्ज़ का अदा करना

१ क़र्ज़ का अदा करना

قُلِ اللَّهُمَّ مَالِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَاءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَاءُ
وَتُعِزُّ مَنْ تَشَاءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَاءُ بِيَدِكَ الْخَيْرُ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ (پ٣ ع١١)

१. कुलिल्लाहुम म मालिकलमुल्कि तुअ्तिल मुल्क मन तशाउ व तन्ज़िउल मुल्क मिम्मन तशाउ व तुइज़्ज़ु मन तशाउ व तुज़िल्लु मन तशाउ बियदिकल ख़ैरु इन न क अला कुल्लि शैइन क़दीर०

—पारा ३, रुकूअ ११

तर्जुमा—(ऐ मुहम्मद!) आप यों कहिए कि ऐ अल्लाह! मालिक तमाम मुल्क के, आप मुल्क जिसको चाहें दे देते हैं और जिस से चाहें आप मुल्क ले लेते हैं और जिसको चाहें बा-इज़्ज़त कर देते हैं, और जिसको आप चाहें, ज़लील कर देते हैं। आप ही के अख्तियार में सब भलाई है। बेशक आप हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखने वाले हैं।

खासियत—क़र्ज़ अदा करने के लिए सात बार सुबह व शाम पढ़ लिया करे तो इन्शाअल्लाहु तआला क़र्ज़ अदा हो जाएगा।

ثُمَّ أَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ بَعْدِ الْغَمِّ أَمَنَةً نُعَاسًا يَغْشَىٰ طَائِفَةً مِنْكُمْ وَطَائِفَةٌ
قَدْ أَهَمَّتْهُمْ أَنْفُسُهُمْ يَظُنُّونَ بِاللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ يَقُولُونَ هَلْ لَنَا مِنَ
الْأَمْرِ مِنْ شَيْءٍ قُلْ إِنَّ الْأَمْرَ كُلَّهُ لِلَّهِ يُخْفُونَ فِي أَنْفُسِهِمْ مَا لَا يُبْدُونَ لَكَ
يَقُولُونَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ مَا قُتِلْنَا هَاهُنَا قُلْ لَوْ كُنْتُمْ فِي بُيُوتِكُمْ لَبَرَزَ
الَّذِينَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ إِلَىٰ مَضَاجِعِهِمْ وَلِيَبْتَلِيَ اللَّهُ مَا فِي صُدُورِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ
مَا فِي قُلُوبِكُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ (پ٤ ع٧)

२. पारा ४, रुकूअ ७ में सुम म अन् ज ल अलैकुम मिम् बअ्दिल ग़म्मि से वल्लाहु अलीमुम बिज़ातिस्सुदूर०

तर्जुमा—फिर अल्लाह तआला ने इस ग़म के बाद तुम पर चैन भेजी यानी ऊंघ कि तुममें से एक जमाअत पर तो उसका ग़लबा हो रहा था और एक जमाअत वह थी कि उनको अपनी जान ही की फ़िक्र पड़ रही थी। वे लोग अल्लाह तआला के साथ सच्चाई के खिलाफ़ सोचने लगे थे, जो कि सिर्फ़ बेवकूफ़ी का ख्याल था। वे यों कह रहे थे कि हमारा कुछ अख्तियार चलता है? (यानी कुछ नहीं चलता)। आप फ़रमा दीजिए कि अख्तियार तो सब अल्लाह ही का

है। वे लोग अपने दिलों में ऐसी बात छिपाये रखते हैं, जिसको आप के सामने (खुल कर) जाहिर नहीं करते। कहते हैं कि अगर हमारा कुछ अख्तियार चलता (यानी हमारी राय पर अमल होता) तो हम (में जो मक़्तूल हुए, वे) यहां मक़्तूल न होते। आप फ़रमा दीजिए कि अगर तुम लोग अपने घरों में भी रहते, तब भी जिन लोगों के लिए क़त्ल मुक़द्दर हो चुका था, वे लोग उन जगहों की तरफ़ निकल पड़ते, जहां वे (क़त्ल हो-हो कर) गिरे हैं और जो कुछ हुआ, इस लिए हुआ ताकि अल्लाह तआला तुम्हारे बातिन की बात (यानी ईमान) की आजमाइश करे और ताकि तुम्हारे दिलों की बात को साफ़ कर दे और अल्लाह तआला बातिन की सब बातों को खूब जानते हैं और बेशक हमने तुमको ज़मीन पर रहने की जगह दी और हमने तुम्हारे लिए उसमें जिंदगी का सामान पैदा किया। तुम लोग बहुत ही कम शुक्र करते हो।

खासियत—रोज़ी बढ़ाने के लिए इन आयतों को शुरू महीने के जुमा से चालीस जुमा तक मरिरब के बाद ग्यारह बार पढ़े और इस दूसरी आयत यानी—

وَلَقَدْ مَكَّنَّاكُمْ فِي الْأَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ قَلِيلًا مَا تَشْكُرُونَ

व ल क़द मक्कन्नाकुम फ़िल अर्ज़ि व जअल्ना लकुम फ़ीहा मआइ श क़लीलम मा तश्कुरून० —पारा ८, रुकूअ ८

को हर जुमा के बाद काग़ज पर लिख कर कुएं में डालता जाए। पूरी उम्मीद है कि इन्शाअल्लाह तआला इस अमल से ग़नी व मालदार हो जाएगा। अगर क़र्ज़ा हो तो अदा हो जाएगा।

३ सूरः कह्फ़ (पारा १५)

खासियत—इसको लिख कर एक बोतल में रख कर घर में रखने से मुहताजी और क़र्ज़े से बे-खौफ़ रहे और उसके घर वालों को कोई तक्लीफ़ न दे सके और जो अनाज की कोठी में रख दे

तो ख़तरों से बचा रहे।

४. सूरः तहरीम (पारा २८)

खासियत—मरीज़ पर दम करने से दर्द को सुकून और मिर्गी वाले को फ़ाइदा हो और जिसको नींद न आती हो, नींद आ जाए और मुद्दतों का क़र्ज़ अदा हो।

२. बरकत होना

१. और जो शख्स सूरः अल-हिज्र को जेब में रखे, उसकी कमाई में बरकत हो और मामलों में कोई शख्स उसकी मर्ज़ी के खिलाफ़ न करे।

३. ज़्यादा से ज़्यादा सुख-चैन

१. सूरः 'इज़ा जा-अ नस्रुल्लाहि' और सूरः 'कुल या ऐयुहल काफ़िरून' और सूरः 'कुल हुवल्लाहु अ हद' ग्यारह-ग्यारह बार पाक पानी पर दम करके नये कपड़े पर छिड़क दे, तो उसके इस्तेमाल तक सुख-चैन में रहे।

२. मालिकल मुल्कि (बादशाही का मालिक)

खासियत—इसे हमेशा पढ़े तो माल व तवंगरी हासिल हो।

३. अल-मुग्नी (तवंगर करने वाले)

खासियत—हज़ार बार पढ़े तो तवंगरी हासिल हो।

४. भूख-प्यास खत्म करने के लिए

१. सूरः इख्लास (पारा ३०)

खासियत—जो शख्स हमेशा इसको पढ़ा करे, हर क़िस्म

की भलाई हासिल हो और हर क़िस्म की बुराई से बचा रहे और भूख में पढ़े तो पेट भर जाए, और जो प्यास में पढ़े, प्यास मि… जाए।

और अगर ख़रगोश की झिल्ली पर लिख कर अपने पास रखे … कोई इन्सान व जिन्न व तक्लीफ़ पहुंचाने वाला जानवर उसके पा… न आए।

२. पूरी सूरः वाक़िअः (पारा २७, रुकूअ ११)

ख़ासियत—हदीस में है कि जो शख़्स इस सूरः को रात … वक़्त एक बार पढ़ लिया करे, वह कभी भूखा न रहेगा।

وَإِذِ اسْتَسْقَىٰ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ فَقُلْنَا اضْرِب بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ فَانفَجَرَتْ مِنْهُ
…اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ كُلُوا وَاشْرَبُوا مِن رِّزْقِ
…وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ

३. व इज़िस्तस्क़ा मूसा लिक़ौमिही फ़क़ुल्नज़्रिब बिअसाक… ह ज र फ़न्फ़ ज र त मिन्हुस्नता अशर त ऐना क़द अलि म कुल्लु उना… सिम मश्र ब हुम कुलू वश्रबू मिर्रिज़्क़िल्लाहि व ला तअ्सौ फ़िल… अर्ज़ि मुफ़्सिदीन०
—पारा १, रुकूअ …

तर्जुमा—और जब (हज़रत) मूसा ने पानी की दुआ मांगी… अपनी क़ौम के वास्ते, उस पर हमने हुक्म दिया कि अपने इस असा… (डंडा-लाठी) को फ़्लां पत्थर पर मारो. पस फ़ौरन उससे फूट निकले… बारह चश्मे। मालूम कर लिया हर शख़्स ने अपने पानी पीने की… जगह, खाओ और पियो अल्लाह तआला की रोज़ी से और हद से मत… निकलो फ़साद करते हुए ज़मीन में।

ख़ासियत—जिसको सफ़र में पानी न मिले या ऐसे मर्ज़ में… मुब्तला हो, जिसमें पानी ज़्यादा पिए और प्यास न बुझे तो इ…

…आयतों को मिट्टी के किसी चिकने बरतन में जो तेल या घी से चिकना हो गया हो या कांच या पत्थर के बर्तन पर लिख कर रखी के बारिश के पानी से धोकर- एक शीशी में भर कर तीन दिन रहने दे। फिर उसमें लाल बकरी का दूध मिला कर आंच पर उसको गाढ़ा करे। प्यास में सुबह के वक़्त दो दिरहम और मरीज़ सोते वक़्त उतना ही पिया करे।

وَلَهُ مَا سَكَنَ فِي اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

४. व लहू मा स क न फ़िल्लैलि वन्नहारि व हुवस्समीउल अलीम०
—पारा ७, रुकूअ ८

तर्जुमा—और अल्लाह ही की मिल्क है सब कुछ, जो रात में और दिन में रहते हैं और वही है बड़ा सुनने वाला, बड़ा जानने वाला।

ख़ासियत—यह आयत गुस्से को ठंडा करने और प्यास बुझाने और रंज दूर करने के लिए है और अगर खड़ा हो तो बैठ जाए और अगर बैठा हो तो खड़ा हो जाए और यह आयत ज़्यादा से ज़्यादा पढ़े।

५. अस्समदु (बे-नियाज़),

ख़ासियत—रात के आख़िर में एक सौ पच्चीस बार पढ़े, तो सिद्क़ और सिद्दीक़ियत की निशानियां ज़ाहिर हों और जब तक इस को ज़िक्र करता रहे, भूख का असर न हो।

५. बे-मेहनत रोज़ी

१. सूरः फ़ातिहा एक सौ ग्यारह बार पढ़ कर बेड़ी-हथकड़ी पर दम करने से क़ैदी जल्दी रिहाई पाये। रात के आख़िर में ४१ बार पढ़ने से बे-मेहनत रोज़ी मिले।

२. सूरः यासीन

ख़ासियत—जिस ज़रूरत के लिए ४१ बार पढ़ें, वह पूरी हो, डरा हुआ हो, अम्न में हो जाए या बीमार हो, चंगा हो जाए या भूखा हो, पेट-भरा हो जाए।

६. रोज़ी बढ़ाने के लिए

ثُمَّ أَنزَلَ عَلَيْكُم مِّن بَعْدِ الْغَمِّ أَمَنَةً نُّعَاسًا يَغْشَىٰ طَائِفَةً مِّنكُمْ ۖ وَطَائِفَةٌ قَدْ أَهَمَّتْهُمْ أَنفُسُهُمْ يَظُنُّونَ بِاللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ۖ يَقُولُونَ هَل لَّنَا مِنَ الْأَمْرِ مِن شَيْءٍ ۗ قُلْ إِنَّ الْأَمْرَ كُلَّهُ لِلَّهِ ۗ يُخْفُونَ فِي أَنفُسِهِم مَّا لَا يُبْدُونَ لَكَ ۖ يَقُولُونَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ مَّا قُتِلْنَا هَاهُنَا ۗ قُل لَّوْ كُنتُمْ فِي بُيُوتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِينَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ إِلَىٰ مَضَاجِعِهِمْ ۖ وَلِيَبْتَلِيَ اللَّهُ مَا فِي صُدُورِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا فِي قُلُوبِكُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝

१. सुम म अन ज ल अलै कुम से वल्लाहु अलीमुम बिज़ातिस्सुदूर० तक —पारा ४, रुकूअ ७

ख़ासियत—रोज़ी बढ़ाने के लिए इन आयतों को शुरू महीने के जुमा से चालीस जुमा तक, मग़रिब के बाद ग्यारह बार पढ़े और इस दूसरी आयत यानी—

وَلَقَدْ مَكَّنَّاكُمْ فِي الْأَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ ۗ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ۝

व लक़द मक्कन्नाकुम फ़िल अर्ज़ि व जअल्ना लकुम फ़ीहा मआयि श क़लीलम मा तश्कुरून० —पारा १८, रुकूअ ८

को हर जुमा को काग़ज़ पर लिख कर कुएं में डालता जाए। पूरी उम्मीद है कि इन्शाअल्लाहु तआला इस अमल से ग़नी और तवंगर हो जाएगा।

اللَّهُ لَطِيفٌ بِعِبَادِهِ يَرْزُقُ مَن يَشَاءُ ۖ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ۝

२. अल्लाहु लतीफ़ुम बि इ बादि ही यर्ज़ु क़ु मंय्यशाउ व हुवल क़वीयुल अज़ीज़० —पारा २०, रुकूअ ३०

तर्जुमा—अल्लाह तआला अपने बन्दों पर मेहरबान है, जिस को चाहता है, रोज़ी देता है और वह ताक़त वाला ज़बर्दस्त है।

ख़ासियत—रोज़ी बढ़ाने के लिए नमाज़ के बाद ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ा करे।

وَمَن يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ بَالِغُ أَمْرِهِ ۚ قَدْ جَعَلَ اللَّهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ۝

३. व मंय्य त वक्कल अलल्लाहि फ़ हु व हस्बुहू इन्नल्ला ह बालिग़ु अम्रिही क़द ज अ ल ल्लाहु लिकुल्लि शैइन क़द्रा० —पारा २८, रुकूअ १७

तर्जुमा—और जो शख़्स अल्लाह पर तवक्कुल करेगा तो अल्लाह तआला उसके लिए काफ़ी है। अल्लाह तआला अपना काम पूरा करके रहता है। अल्लाह तआला ने हर चीज़ का अन्दाज़ा (अपने इल्म में) मुक़र्रर कर रखा है।

ख़ासियत—रोज़ी की ज़्यादती के लिए और जिस मुहिम में चाहे उसको पढ़े, इन्शाअल्लाहु तआला तंगदस्ती दूर हो जाएगी और मुहिम आसान होगी।

४. पूरी सूरः मुज़्ज़म्मिल (पारा २९, रुकूअ १३)

ख़ासियत—रोज़ी बढ़ाने के लिए बहुत ही फ़ायदेमंद है। इसकी तर्कीब यह है कि एक चिल्ले तक हर दिन तैशुदा वक़्त पर ११ बार दरूद शरीफ़ पढ़ें, फिर ग्यारह मर्तबा 'या मुग़्नी' पढ़ें। इस के बाद ग्यारह मर्तबा सूरः मुज़्ज़म्मिल शरीफ़ पढ़ें और फिर आख़िर में भी ग्यारह बार दरूद शरीफ़ पढ़ लें।

जो इस अमल को करेगा, अल्लाह तआला ग़ैब से उसकी तरह-तरह की मदद फ़रमाएगा।

५. आयतुल कुर्सी मय बिस्मिल्लाह-खालिदून तक, पूरी सूर फ़लक़ मय बिस्मिल्लाह और पूरी सूरः नास और यह आयत—

قل لن يصيبنا إلا ما كتب الله لنا هو مولانا وعلى الله فليتوكل المؤمنون ٥

कुल लंय युसी बना इल्ला मा क त बल्लाहु लना, हुसे मौलाना व अलल्लाहि फ़ल य त वक्कलिल मुअ्मिनून०

—पारा १०, रुकूअ १२

तर्जुमा—फ़रमा दीजिए हमको कोई हादसा नहीं पेश आ सकता, मगर वही जो अल्लाह तआला ने हमारे लिए मुक़र्रर फ़रमाया है। वह हमारा मालिक है और अल्लाह के तो सब मुसलमानों को अपने काम सुपुर्द रखने चाहिए।

ख़ासियतें—जो शख़्स आयतुल कुर्सी को हर नमाज़ के बाद पढ़ा करे, शैतान के वस्वसे और सरकश शैतानों की चालों व तक्लीफ़ों से बचा रहे और फ़क़ीर से ग़नी हो जाए और ऐसे तरीक़े से रोज़ी मिले कि उसको गुमान भी न हो। और जो उसको सुबह व शाम और घर में जाने के वक़्त और बिस्तर पर लेटने के वक़्त हमेशा पढ़ा करे तो चोरी और डूबने और जलने से अम्न में रहे और सेहत नसीब हो और हर क़िस्म के ख़ौफ़ और अन्देशे से बचा रहे और इसको ठीकरियों पर लिखकर ग़ल्ले में रख दे तो ग़ल्ला चोरी और घुन से बचा रहे और इसमें बरकत हो और जो इसको अपनी दुकान या मकान में किसी ऊंची जगह रख दे तो रोज़ी बढ़े और कभी फ़ाक़ा न हो और वहां चोर न आए और अगर सफ़र या किसी भयानक जगह रहने का इत्तिफ़ाक़ हो तो यह आयतुल कुर्सी मय सूरः इख़्लास और मुअव्वज़तैन और "कुल लंय युसीब ना" (आख़िर तक) पढ़कर अपने गिर्द दायरा खींच लिया जाए, इन शाअल्लाहु तआला कोई तक्लीफ़ देने वाला जानवर न पहुंच सकेगा।

قل اللهم مالك الملك تؤتي الملك من تشاء وتنزع الملك ممن تشاء وتعز من تشاء وتذل من تشاء بيدك الخير إنك على كل شيء قدير ٥ تولج الليل في النهار وتولج النهار في الليل وتخرج الحي من الميت وتخرج الميت من الحي وترزق من تشاء بغير حساب ٥

६. क़ुलिल्लाहुम म से बिग़ैरि हिसाब तक (पारा ३, रुकूअ ११)

ख़ासियतें—जो शख़्स ज़्यादा से ज़्यादा इन आयतों को फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद और नफ़्लों के बाद और सोते वक़्त पढ़ा करे, उस की रोज़ी और वुसअत नसीब हो, उसके माल में तरक़्क़ी हो और तंगदस्ती दूर हो।

إذ قال الحواريون يا عيسى ابن مريم هل يستطيع ربك أن ينزل علينا مائدة من السماء قال اتقوا الله إن كنتم مؤمنين ٥ قالوا نريد أن نأكل منها وتطمئن قلوبنا ونعلم أن قد صدقتنا ونكون عليها من الشاهدين ٥ قال عيسى ابن مريم اللهم ربنا أنزل علينا مائدة من السماء تكون لنا عيدا لأولنا وآخرنا وآية منك وارزقنا وأنت خير الرازقين ٥

७. इज़ क़ालल हवारीयून या ईसब न मर य म हल यस्ततीउ रब्बु क अंय्युनज़्ज़िल अलैना माइदतम मिनस्समाइ क़ालत्तक़ुल्ला ह इन कुन्तुम मुअ्मिनीन० क़ालू नुरीदु अन नाकु ल मिन्हा व ततमइन्न क़ुलूबुना व न अ़ल म अन् क़द सदक़्तना व नकू न अलैहा मिनश्शाहिदीन क़ा ल ईसब्नु मरयम अल्लाहुम म रब्बना अन्ज़िल अलैना माइदतम मिनस्समाइ तकूनुलना ईदल लिअव्वलिना व आख़िरिना व आयतम मिन क व रज़ुक़्ना व अन्त ख़ैरुर्राज़िक़ीन०

—पारा ७, रुकूअ ५

तर्जुमा—यह वक़्त याद के क़ाबिल है, जबकि हवारियों ने

अर्ज़ किया कि ऐ ईसा बिन मरयम (अलैहिस्सलाम) ! क्या आपके परवरदिगार ऐसा कर सकते हैं कि हम पर आसमान से कुछ खाना नाज़िल फ़रमाएं। आपने फ़रमाया कि ख़ुदासे डरो अगर तुम ईमानदार हो। वे बोले कि हम यह चाहते हैं कि इसमें से खाएं और हमारे दिलों को पूरा इत्मीनान हो जाए और हमारा यक़ीन और बढ़ जाए कि आपने हमसे सच बोला है और हम गवाही देने वालों में से हो जायें। ईसा बिन मरयम ने दुआ की कि ऐ अल्लाह ! ऐ हमारे परवरदिगार ! हम पर आसमान से खाना नाज़िल फ़रमाइए कि वह हमारे लिए यानी हम में जो अव्वल हैं और बाद में हैं, सबके लिए एक खुशी की बात हो जाए और आप की तरफ़ से एक निशानी हो जाए और आप हम को अता फ़रमाइए और आप सब अता करने वालों से अच्छे हैं।

ख़ासियतत—ये आयतें रोज़ी के बढ़ाने और तंगी को दूर करने के लिए हैं। झाऊ के लकड़ी के बरतन में उनको वुज़ू करके लिखे, अपने पास रखे। जब ज़रूरत हो, उसमें पानी भरकर घर या खेत या बाग़ में छिड़के और अगर दिल चाहे तो तीन हफ़्ते लगातार वह पानी पिए। इन्शाअल्लाहु तआला जान व माल में बरकत होगी।

وَلَقَدْ مَكَّنَّاكُمْ فِي الْأَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ قَلِيلًا مَا تَشْكُرُونَ

८. व लक़द मक्कन्नाकुम फ़िल अर्ज़ि व जअल्ना लकुम फ़ीहा मआइश क़लीलम मा तश्कुरुन० —पारा ८, रुकूअ ८

तर्जुमा—और बेशक हमने तुमको ज़मीन पर रहने की जगह दी और हमने तुम्हारे लिए उसमें जिंदगी का सामान पैदा किया। तुम लोग बहुत ही कम शुक्र करने वाले हो।

ख़ासियतत—रोज़ी की ज़्यादती के लिए जुमा के दिन जब नमाज़ से फ़ारिग़ हो जायें, लिखकर दुकान या मकान में रखने से रोज़ी बढ़ती है।

قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أَمَّنْ يَمْلِكُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَمَنْ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ فَسَيَقُولُونَ اللَّهُ فَقُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ

९. क़ुल मंय्यर्ज़ुक़ुकुम मिनस्समाइ वल अर्ज़ि अम्मंय्यम्लिकुस्सम व वल अब्सार व मंय्युख़्रिजुल हय्य मिनल मय्यिति व युख़्रिजु ल मय्यि त मिनल हय्यि व मंय्युदब्बिरुल अम्र फ़ स यक़ूलूनल्लाहु फ़क़ुल अ फ़ ला तत्तक़ून० —पारा ११, रुकूअ ९

तर्जुमा—आप कहिए कि वह कौन है जो तुमको आसमान और ज़मीन से रोज़ी पहुंचाता है या वह कौन है जो कानों और आंखों पर पूरा अख़्तियार रखता है और वह कौन है जो जानदार को बे-जान से निकालता है और बे-जान को जानदार से निकालता है और वह कौन है जो तमाम कामों की तद्बीर करता है, सो ज़रूर वे यही कहेंगे कि अल्लाह (है) तो उनसे कहिए कि फिर (शिर्क से) क्यों नहीं परहेज़ करते।

ख़ासियतत—यह आयत विलादत की आसानी और कान के दर्द और रोज़ी की आसानी के लिए है। मीठे कद्दू के पोस्त पर स्याही से लिखकर बच्चा जनने वाली के दाहिने बाज़ू पर बांध देने से विलादत में आसानी होती है और क़लईदार तांबे की तश्तरी पर अर्क़ गुदना से लिखकर साफ़ शहद से धोकर आग पर पका कर जिसके कान में दर्द हो, तीन क़तरे छोड़ दे। इनशाअल्लाहु तआला नफ़ा हो और जो काग़ज़ पर लिखकर नीले कपड़े में तावीज़ बनाकर दाहिने बाज़ू पर बांधे, रोज़ी की चीज़ें उसके लिए आसान हों।

१० सूरः यूसुफ़ अला नबीयिना व अलैहिस्सलाम

(पारा १२, रुकूअ ५)

ख़ासियतत—जो शख़्स इस को लिखकर पिए, उसकी रोज़ी बढ़े और हर आदमी के नज़दीक क़द्र के क़ाबिल हो।

११. सूरः नम्ल (पारा १९)

ख़ासियत—जो शख़्स उसको हिरन की झिल्ली पर लिख कर बनाये चमड़े में रखकर अपने पास रखे कोई नेमत उसकी ख़त्म न हो और अगर संदूक़ में रख दे, तो उस घर में सांप-बिच्छू, दरिंदा और कोई तक्लीफ़ देने वाला जानवर न आए।

१२. सूरः फ़त्ह (पारा २६)

ख़ासियत—रमज़ान शरीफ़ के चांद को देखते वक़्त तीन बार पढ़ने से तमाम साल रोज़ी बढ़े, लिखकर जंग के वक़्त पास रखने में अम्न में रहे और जीत हो जाए। कश्ती में सवार होकर पढ़ने से डूबने से बचा रहे।

१३. सूरः क़ाफ़ (पारा २६)

ख़ासियत—जिस घर में पढ़ी जाए, उसकी दौलत क़ायम रहे।

१४. सूरः वाक़िआ (पारा २७)

ख़ासियत—लिखकर बांधने से बच्चा आसानी से पैदा हो। वुज़ू के साथ सुबह व शाम पढ़ने से तंगी न प्यास दूर हो।

وَمَن قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهُ فَلْيُنفِقْ مِمَّا آتَاهُ اللَّهُ لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا مَا آتَاهَا

سَيَجْعَلُ اللَّهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُسْرًا

१५. व मन क़ुदि र अलैहि रिज़्क़ुहू फ़ल्युन्फ़िक़ मिम्मा आताहुल्लाहु ला युकल्लिफ़ुल्लाहु नफ़्सन इल्ला मा आताहा स यज अलुल्लाहु बअ् द अुसरिन युसरा० —पारा २८, रुकूअ १७

तर्जुमा—और जिसकी आमदनी कम हो, उसको चाहिए कि अल्लाह तआला ने जितना उसको दिया है, उसमें से ख़र्च करे। अल्लाह तआला किसी शख़्स को इससे ज़्यादा तक्लीफ़ नहीं देता, जितना उसको दिया है। अल्लाह तआला तंगी के बाद जल्दी फ़रा-

ग़त भी देगा (जो ज़रूरत के मुताबिक़ सही)।

ख़ासियत—जिसकी रोज़ी तंग हो, गुनाहों से तौबा करे और नेक कामों का इरादा करे और जुमा की रात की आधी रात को उठ कर इस्तग़फ़ार सौ बार और दरूद शरीफ़ सौ बार और यह आयत सौ बार, फिर दरूद शरीफ़ सौ बार पढ़ कर सो रहे। ख़्वाब में मालूम हो जाएगा कि क्या तद्बीर करे कि रोज़ी की तंगी दूर हो।

१६. सूरः नून (पारा २९)

ख़ासियत—नमाज़ में पढ़ने से फ़क़्र व फ़ाक़ा दूर हो।

१७. सूरः मुज़्ज़म्मिल (पारा २९)

ख़ासियत—इसको पढ़ने से रोज़ी बढ़े।

१८. सूरः आदियात (पारा ३०)

ख़ासियत—लिखकर पास रखना रोज़ी की आसानी और अम्न व ख़ौफ़ के लिए फ़ायदामंद है।

१९. सूरः क़ारिअः (पारा ३०)

ख़ासियत—इसका ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ना रोज़ी को बढ़ाता है।

२०. आयतुल कुर्सी

ख़ासियत—जो शख़्स इसको तीन सौ तेरह बार पढ़े, अनगिनत भलाई उस को हासिल हो।

२१. सूरः वाक़िअः (पारा २७)

ख़ासियत—एक मज्लिस में ४१ बार पढ़ने से ज़रूरत पूरी हो, ख़ास तौर से जो रोज़ी के बारे में हो।

२२. सूरः ताहा

ख़ासियत—सुबह सादिक़ के वक़्त इसके पढ़ने से रोज़ी मिले और सब ज़रूरतें पूरी हों और लोगों के दिल क़ाबू में हों और दुश्मनों पर ग़लबा हो।

२३. या मुग़्नी

ख़ासियत—मेरे मुर्शिद क़द्दस सिर्रहू ने मुझको वसीयत की 'या मुग़नी' हमेशा पढ़ते रहने की, हर दिन ग्यारह सौ बार और सूर मुज़म्मिल पढ़ने को चालीस बार। सो अगर न हो सके तो ग्यारह बार और फ़रमाया कि दोनों अमल दिली और ज़ाहिरी दोनों ग़िना के वास्ते मुजर्रब (तजुर्बा किए हुए) हैं और मुझको दरूद के हमेशा पढ़ते रहने की वसीयत की और फ़रमाया कि इसी की वजह से हमने पाया जो पाया।

२४. अल-मलिकु (बादशाह)

ख़ासियत—जो शख़्स ज़वाल के वक़्त एक सौ तीस बार पढ़ा करे, अल्लाह तआला उसको दिल की सफ़ाई और ग़िना अता फ़रमायें।

२५. अल-अज़ीज़ु (सब से ग़ालिब)

ख़ासियत—चालीस दिन तक हर दिन ४१ बार पढ़े तो ज़ाहिरी व बातिनी ग़िना हासिल हो और किसी मख़्लूक़ का मुहताज न हो।

२६. अल-ग़फ़्फ़ारु (बख़्शने वाले)

ख़ासियत—जुमा की नमाज़ के बाद सौ बार पढ़े तो मग़फ़िरत की निशानियां पैदा हों और तंगी दूर हो और बे-गुमान रोज़ी मिले।

२७. अल-वह्हाबु (बड़े देने वाले)

ख़ासियत—ज़्यादा से ज़्यादा ज़िक्र करने से ग़िना और क़ुबूलियत और हैबत व बुज़ुर्गी पैदा हो।

२८. अर्रज़्ज़ाक़ु (रिज़्क़ देने वाले)

ख़ासियत—फ़ज्र की नमाज़ से पहले घर के सब कोनों में दस-दस बार कहे और जो कोना क़िब्ले की दिशा की दाहिनी तरफ़ हो, उससे शुरू करे तो रिज़्क़ में ज़्यादती पैदा हो।

२९. अल-फ़त्ताहु (खोलने वाले)

ख़ासियत—फ़ज्र की नमाज़ के बाद सीने पर हाथ रख कर ७१ बार पढ़े तो तमाम मामलों में आसानी हो और दिल में तहारत व नूरानियत हो और रोज़ी में आसानी हो।

३०. अल-क़ाबिज़ु (बन्द करने वाले)

ख़ासियत—चालीस दिन तक रोटी के लुक़्मे पर इसको लिख कर खाए तो भूख से तक्लीफ़ न हो।

३१. अल-बासितु (खोलने वाले)

ख़ासियत—नमाज़ चाश्त के बाद दस बार पढ़ने से रिज़्क़ में फैलाव हो।

३२. अल-लतीफ़ु (मेहरबान)

ख़ासियत—एक सौ तैंतीस बार पढ़ने से रोज़ी में फैलाव हो, तमाम काम मज़े से पूरे हों।

३३. अल-अलीयु (बुलंद सब से)

ख़ासियत—अगर लिख कर मुसाफ़िर अपने पास रखे तो जल्द ही अपने अज़ीज़ों से आ मिले। अगर मुहताज रखे तो ग़नी हो जाए।

३४. अल-वासिअु (फैलाव वाले)

ख़ासियत—ज़्यादा से ज़्यादा ज़िक्र करने से ज़ाहिरी व बातिनी ग़िना हासिल हो और काफ़ी हौसला और बुर्दबारी पैदा हो।

o

मुहब्बत और क़ाबू में रखने की बात

१. हाकिम का नाराज़ होना

فَسَيَكْفِيكَهُمُ اللَّهُ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ (پ۱ ع۱۶)

१. फ़ स यक्फ़ी क हुमु ल्लाहु व हु वस्समी अुल अलीमु०

—पारा १, रुकूअ १६

तर्जुमा—तो (समझ लो कि) तुम्हारी तरफ़ से जल्द ही निमट लेंगे। अल्लाह तआला सुनते हैं जानते हैं।

खासियत—जिससे हाकिम नाराज़ व ख़फ़ा हो, वह इस आयत को पढ़ा करे या लिख कर बाज़ू पर बांध ले। इन्शाअल्लाहु तआला हाकिम मेहरबान हो जाएगा।

كَمْ آتَيْنَاهُم مِّنْ آيَةٍ بَيِّنَةٍ ۗ وَمَن يُبَدِّلْ نِعْمَةَ اللَّهِ مِن بَعْدِ مَا جَاءَتْهُ
فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ (پ۲ ع۱۰)

२. कम आतैना हुम मिन आयतिन बय्यिनतिन व मंय्युबद्दिल निअ़मतल्लाहि मिम् बअ़्दि मा जाअत हु फ़ इन्नल्ला ह शदीदुल अ़िक़ाब०

—पारा २, रुकूअ १०

तर्जुमा—हमने उनको कितनी वाज़ेह दलीलें दी थीं और जो अल्लाह तआला की नेमत को बदलता है, उसके पास पहुंचने के बाद तो यक़ीनन हक़ तआला सख़्त सज़ा देने वाले हैं।

खासियत—जिससे हाकिम सख़्त ख़फ़ा व नाराज़ हो, इन आयतों को तीन बार पढ़ कर अपने ऊपर दम करके उसके सामने जाए, इन्शाअल्लाहु तआला मेहरबान हो जाएगा।

३. काफ़-हा-या-ऐन-स्वाद (पारा १६, रुकूअ ४), हा-मीम, ऐन-सीन-काफ़०

—पारा २५, रुकूअ २

खासियत—अगर हाकिम ख़फ़ा हो तो पहले तीन बार बिस्मिल्लाह पढ़े। उसके बाद काफ़-हा-या-ऐन-स्वाद के हर हर्फ़ को पढ़ता जाए और दाहिने हाथ की उंगली को हर हर्फ़ पर बन्द करता जाए। इसी तरह हा-मीम, ऐन-सीन-क़ाफ़ के हर हर्फ़ को पढ़ता जाए और बाएं हाथ की उंगली को बन्द करता जाए। फिर काफ़-हा-या-ऐन-स्वाद के हर हर्फ़ को पढ़ता जाए और दाहिने हाथ की उंगली खोलता जाए। इसी तरह हा-मीम, ऐन-सीन-क़ाफ़ के हर हर्फ़ को पढ़ता जाए और बाएं हाथ की उंगली खोलता जाए। इस तर्कीब के बाद नज़र बचा कर हाकिम की तरफ़ दम करे। इन्शाअल्लाहु तआला मेहरबान हो जाएगा।

ثُمَّ قَسَتْ قُلُوبُكُم مِّن بَعْدِ ذَٰلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ أَوْ أَشَدُّ قَسْوَةً ۚ
وَإِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْأَنْهَارُ ۚ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ
الْمَاءُ ۚ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ ۗ
وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ۝ (پ۱ ع۹)

४. सुम म क़ सत क़ुलूबुकुम मिम बअ़्दि ज़ालि क फ़हि य कल हिजारति औ अशद्दु क़स्वतन व इन् न मिनल हिजारति लमा य त फ़ज्जरु मिन्हुल अन्हारु व इन् न मिन्हा ल मा यश्शक़्क़क़ु फ़ यख़्रुजु मिन्हुल माउ व इन न मिन्हा लमा यह्बितु मिन ख़श्यतिल्लाहि व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन अ़म्मा तअ़्मलून०

—पारा १, रुकूअ ९

तर्जुमा—ऐसे-ऐसे वाक़िआत के बाद तुम्हारे दिल भी सख़्त ही रहे। तो उनकी मिसाल पत्थर की-सी है, बल्कि सख़्ती में

भी पत्थर से भी ज़्यादा सख़्त और कुछ पत्थर तो ऐसे हैं जिनसे (बड़ी-बड़ी) नहरें फूट कर चलती हैं और इन ही पत्थरों में कि जो फट जाते हैं, फिर उनसे पानी निकल आता है और इन्हीं पत्थरों में कुछ ऐसे हैं जो अल्लाह के ख़ौफ़ से ऊपर से नीचे लुढ़क आते हैं और अल्लाह तुम्हारे आमाल से बे-ख़बर नहीं है।

ख़ासियत—जिस आदमी का दिल किसी से सख़्त हो जाए या अपने घर वालों से तंगी करे और मिज़ाज बिगड़ जाए तो एक कोरी पाक ठीकरी लेकर घास की लकड़ी से उस शख़्स का नाम उस ठीकरी पर लिखे और कुछ शहद, जिसको आंच न लगी हो और अंगूरी सिरका लेकर उससे यह आयत उस नाम के गिर्द लिखे और उस ठीकरी को कुएं या नहर में डाल दे, जिससे वह शख़्स पानी पीता हो। इसी तरह अगर कोई बादशाह रियाया से बिगड़ जाए, तो इस आयत को काग़ज़ पर मय नाम बादशाह और उसकी मां के लिखकर पहाड़ में किसी ऊंची जगह रख दे। इन्शाअल्लाह तआला उसकी हालत दुरुस्त हो जाएगी।

५. आयते हिज़्बे चहल क़ाफ़—

أَلَمْ تَرَ إِلَى الْمَلَإِ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ مِنْ بَعْدِ مُوسَىٰ إِذْ قَالُوا لِنَبِيٍّ لَهُمُ ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ أَلَّا تُقَاتِلُوا ۖ قَالُوا وَمَا لَنَا أَلَّا نُقَاتِلَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَدْ أُخْرِجْنَا مِنْ دِيَارِنَا وَأَبْنَائِنَا ۖ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا إِلَّا قَلِيلًا مِنْهُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ○ [illegible]

لَقَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ فَقِيرٌ وَنَحْنُ أَغْنِيَاءُ ۘ سَنَكْتُبُ مَا قَالُوا وَقَتْلَهُمُ الْأَنْبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَنَقُولُ ذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ○ [illegible]

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ قِيلَ لَهُمْ كُفُّوا أَيْدِيَكُمْ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ إِذَا فَرِيقٌ مِنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللَّهِ أَوْ أَشَدَّ خَشْيَةً ۚ وَقَالُوا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ عَلَيْنَا الْقِتَالَ لَوْلَا أَخَّرْتَنَا إِلَىٰ أَجَلٍ قَرِيبٍ ۗ قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيلٌ وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ لِمَنِ اتَّقَىٰ وَلَا تُظْلَمُونَ فَتِيلًا [illegible]

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ ابْنَيْ آدَمَ بِالْحَقِّ إِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ أَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْآخَرِ قَالَ لَأَقْتُلَنَّكَ ۖ قَالَ إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللَّهُ مِنَ الْمُتَّقِينَ ○ [illegible]

ख़ासियत—उनकी ख़ासियत दुश्मनों के मुक़ाबले में इज़्ज़त व ग़लबा मिलता है। अगर परचम पर लिख लिया जाए तो मुक़ाबले में हरगिज़ हार न हो और दुश्मनों पर फ़त्ह व कामियाबी हासिल हो और अगर काग़ज़ पर लिख कर सरदारों और हाकिमों के पास जाए, तो उसकी क़द्र व मनज़िलत उनकी आंख में हो।

الَّذِينَ يُنْفِقُونَ فِي السَّرَّاءِ وَالضَّرَّاءِ وَالْكَاظِمِينَ الْغَيْظَ وَالْعَافِينَ عَنِ النَّاسِ ۗ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ○ وَالَّذِينَ إِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً أَوْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللَّهَ فَاسْتَغْفَرُوا لِذُنُوبِهِمْ وَمَنْ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا اللَّهُ وَلَمْ يُصِرُّوا عَلَىٰ مَا فَعَلُوا وَهُمْ يَعْلَمُونَ ○ أُولَٰئِكَ جَزَاؤُهُمْ مَغْفِرَةٌ مِنْ رَبِّهِمْ وَجَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَنِعْمَ أَجْرُ الْعَامِلِينَ ○ [illegible]

६. अल्लज़ी न युन्फ़िक़ू न ··· अज्रुल आमिलीन०

—पारा ४, रुकूअ ५

तर्जुमा—जो कि ख़र्च करते हैं फ़राग़त में और तंगी में भी और ग़ुस्से के ज़ब्त करने वाले और लोगों से दरगुज़र करने वाले हैं,

तो अल्लाह तआला ऐसे नेक लोगों को महबूब रखता है और (कुछ) ऐसे लोग कि जब कोई ऐसा काम कर गुजरते हैं, जिसमें ज्यादती हो या अपनी जात पर नुक़सान उठाते हैं तो अल्लाह तआला को याद कर लेते हैं। फिर अपने गुनाहों की माफ़ी चाहने लगते हैं और अल्लाह तआला के सिवा और है कौन जो गुनाहों को बख्शता है और वे लोग अपने (बुरे) काम पर हठ नहीं करते और वे जानते हैं कि उन लोगों की जज़ा बख्शिश है, उनके रब की तरफ़ से और ऐसे बाग़ हैं कि उनके नीचे से नहरें चलती होंगी, वह हमेशा इन ही में रहेंगे और यह बहुत अच्छा हक़्कुन ख़िदमत (ख़िदमत का हक़) है, उन काम करने वालों का।

ख़ासिय्यत—ये आयतें सुकून, नफ़्स व ग़ज़ब और ज़ालिम सुल्तान और जाहिल दुश्मन के लिए है। जुमा की रात में इशा की नमाज़ के बाद काग़ज़ पर लिख कर बांध ले और सुबह को उन लोगों के पास जाए, इन्शाअल्लाहु तआला उनकी बुराई से बचा रहे।

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَتَعَالٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ○ وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ○ وَهُوَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ لَهُ الْحَمْدُ فِى الْاُوْلٰى وَالْاٰخِرَةِ وَلَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ○ (پارہ ۲۰ رکوع ۱۰)

७. सुब्हानल्लाहि व तआला अम्मा युश्रिकून० व रब्बु क यअ्लमु मा तुकिन्नु सुदूरु हुम व मा युअ्लिनून० वहुवल्लाहु ला इला ह इल्ला हु व लहुल हम्दु फ़िल ऊला वल् आख़िरति व लहुल हुक्मु व इलैहि तुर्जअून०
—पारा २०, रुकूअ १०

तर्जुमा—अल्लाह तआला उनके शिर्क से पाक और बरतर है और आप का रब सब चीज़ों की ख़बर रखता है, जो उनके दिलों में पोशीदा रहता है और जिसको ये ज़ाहिर करते हैं और वही है उसके सिवा कोई माबूद (होने के क़ाबिल) नहीं। हम्द (सना) के लायक़ दुनिया व आख़िरत में वही है और क़ियामत में हुकूमत भी उसी की होगी और तुम सब उसी के पास लौट कर जाओगे।

ख़ासिय्यत—अगर किसी को झूठी गवाही या हाकिम के ग़लत फ़ैसले और ज़ुल्म से अंदेशा हो तो मुक़दमे की पेशी के वक़्त ये आयतें सात बार पढ़े और तीन बार यह कहे— وَاللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰى اَمْرِهٖ

वल्लाहु ग़ालिबुन अला अम्रिही०

इन्शाअल्लाहु तआला सब बुराइयों से महफ़ूज़ रहेगा।

८. सूरतुन्नबा (पारा ३०)

ख़ासिय्यत—इसको पढ़कर या बांध कर हाकिम के पास जाने से उसकी बुराई से बचा रहे।

९. सूरतुल मुअव्वज़तैन (पारा ३०)

ख़ासिय्यत—हर क़िस्म के दर्द व बीमारी व जादू व बुरी नज़र वग़ैरह के लिए पढ़ना और दम करना और लिख कर बांधना मुफ़ीद है और सोते वक़्त बांधने से हर क़िस्म की आफ़त से बचा रहे और अगर इसको लिख कर बच्चों के बांध दे तो 'उम्मुस्सिबयान' वग़ैरह से हिफ़ाज़त रहे और अगर हाकिम के सामने जाने के वक़्त पढ़ ले तो उसकी बुराई से बचा रहे।

२. ज़ालिम के लिए

وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمٰنَ وَاَلْقَيْنَا عَلٰى كُرْسِيِّهٖ جَسَدًا ثُمَّ اَنَابَ ○ (پارہ ۲۳ رکوع ۱۲)

१. व लक़द फ़तन्ना सुलैमा न व अल्क़ैना अला कुर्सी यि ही ज स दन सुम म अनाब०
—पारा २३, रुकूअ १२

तर्जुमा—और हमने सुलैमान अलै० को (एक और तरह भी) इम्तिहान में डाला और हमने उनके तख़्त पर एक (अधूरा) धड़ डाला। फिर उन्होंने (ख़ुदा की तरफ़) रुजूअ किया।

ख़ासिय्यत—अगर किसी शरीर ज़ालिम को शहर से निका-

सना हो, तो हर रोज़ सात सुर्ख़ घू घची पर एक बार सात दिन त
पढ़े और हर दिन उस घू घची को कुएं में डालता जाए, इन्शाअल्ला
तआला वह शख़्स जल्द चला जाएगा। इस अमल में हैवानात
छोड़ना लाज़िम है, मगर उसको नाजायज़ जगह पर अमल न क
वरना नुक़्सान उठाएगा।

२. अबू जाफ़र नुहास रज़ि० ने हदीस नक़ल की है कि आयतु
कुर्सी पारा ३ रुकूअ २ और सूरः आराफ़ की तीन आयतें—

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُغْشِي اللَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهُ حَثِيثًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُومَ مُسَخَّرَاتٍ بِأَمْرِهِ ۗ أَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ ۗ تَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝ ادْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ۝ وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا وَادْعُوهُ خَوْفًا وَطَمَعًا ۚ إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ قَرِيبٌ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ۝

इन् न रब्बकुमुल्लाहु ल्लज़ी···क़रीबुम मिनल मुह्सिनीन०

—पारा ८, रुकूअ १

और

وَالصَّافَّاتِ صَفًّا ۝ فَالزَّاجِرَاتِ زَجْرًا ۝ فَالتَّالِيَاتِ ذِكْرًا ۝ إِنَّ إِلَٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ۝ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ۝ إِنَّا زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِزِينَةٍ الْكَوَاكِبِ ۝ وَحِفْظًا مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ مَارِدٍ ۝ لَا يَسَّمَّعُونَ إِلَى الْمَلَإِ الْأَعْلَىٰ وَيُقْذَفُونَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ۝ دُحُورًا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ وَاصِبٌ ۝ إِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَأَتْبَعَهُ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ۝

वस्साफ़्फ़ाति सफ़्फ़न०···फ़ अत् ब अ हू शिहाबुन साक़िब०

—पारा २३, रुकूअ

और सूरः रहमान की ये आयतें—

سَنَفْرُغُ لَكُمْ أَيُّهَ الثَّقَلَانِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ يَا مَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ إِنِ اسْتَطَعْتُمْ أَنْ تَنْفُذُوا مِنْ أَقْطَارِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ فَانْفُذُوا ۚ لَا تَنْفُذُونَ إِلَّا بِسُلْطَانٍ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِنْ نَارٍ وَنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرَانِ ۝

सनफ़्रुग़ु लकुम···नुहासुन फ़ ला तन्तसिरान०

—पारा २७, रुकूअ १२

ख़ासियत—ये सब आयतें अगर कोई शख़्स दिन में पढ़े तो तमाम दिन और रात सरकश शैतान, नुक़्सान पहुंचाने वाला जादूगर और ज़ालिम हाकिम और तमाम चोरों और दरिंदों से बचा रहेगा।

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ وَاسْمَعُوا ۖ قَالُوا سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَأُشْرِبُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ ۚ قُلْ بِئْسَمَا يَأْمُرُكُمْ بِهِ إِيمَانُكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝

३. व इज़ अख़ज़्ना मीसा क़ कुम व र फ़अ़ना फ़ौ क़ कुमु त्
त्तूर ख़ुज़ू मा आतैनाकुम बिक़ुव्वतिंव वस्मअ़ू क़ालू समिअ़ना व अ़सैना व
उश्रिबू फ़ी क़ुलूबिहिमुल अ़िज्ल बिकुफ़्रिहिम क़ुल बिअ्स मा यअ्
मुरु कुम बिही ईमानु कुम इन कुन्तुम मुअ्मिनीन०

—पारा १, रुकूअ ११

तर्जुमा—और जब हमने तुम्हारा क़ौल व क़रार लिया था और तूर को तुम्हारे (सरों के) ऊपर ला खड़ा किया था, तो जो कुछ (अह्काम) हमने तुमको दिए हैं, हिम्मत (और पुख़्तगी) के साथ पकड़ो और सुनो। उस वक़्त उन्होंने ज़ुबान से कह दिया कि हमने सुन लिया और हम से अमल न होगा (और वजह उसकी यह है कि) उनके दिलों में वही गोशाला सा-बस गया था। उनके कुफ़्र (पिछले) की वजह से आप फ़रमा दीजिए कि ये काम बहुत बुरे हैं,

जिनकी तालीम तुम्हारा ईमान तुमको कर रहा है, अगर तुम ईमान वाले हो।

खासियत—जो शख्स अपनी जेहानत से जुल्म के तरीके ईजाद करके लोगों को तक्लीफ़ देता हो और उसकी समझ को खत्म करना हो तो यह आयत हफ़्ते के दिन मिठाई पर लिख कर उसको नहार मुंह खिलाये। इन्शाअल्लाहु तआला फिर कोई बात उसकी समझ में न आएगी।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُبْطِلُوا صَدَقَاتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْأَذَىٰ كَالَّذِي يُنْفِقُ
مَالَهُ رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۖ فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ
فَأَصَابَهُ وَابِلٌ فَتَرَكَهُ صَلْدًا ۖ لَا يَقْدِرُونَ عَلَىٰ شَيْءٍ مِمَّا كَسَبُوا ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي
الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ

४. या ऐयुहल्लज़ी न आ म नू ला तुब्तिलू स द क़ातिकुम बिल मन्नि वल अज़ा कल्लज़ी युन्फ़िक़ु मा ल हू रिआअन्नासि व ला युअ्मिनु बिल्लाहि वल यौमिल आखिरि फ़ म स लु हू क म स लि सफ़्वानिन अलैहि तुराबुन फ़ अ सा ब हू वाबिलुन फ़ त र क हू सल्दा ला यक़्दिरू न अला शैइम मिम्मा क स बू वल्लाहु ला यह्दिल क़ौमल काफ़िरीन०

—पारा ३, रुकूअ ४

तर्जुमा—ऐ ईमान वालो! तुम एहसान जता कर या तक्लीफ़ पहुंचा कर अपनी खैरात को बर्बाद मत करो, जिस तरह वह शख्स, जो अपना माल खर्च करता है, लोगों को दिखलाने की ग़रज़ से और ईमान नहीं रखता अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर, सो उस शख्स की हालत ऐसी है, जैसे एक चिकना पत्थर, जिस पर कुछ मिट्टी हो, फिर उस पर जोर की बारिश पड़ जाए, सो उसको बिल्कुल साफ़ कर दे, ऐसे लोगों को अपनी कमाई भी हाथ न लगेगी और अल्लाह तआला काफ़िर लोगों को रास्ता न बताएंगे।

खासियत—अगर कोई ज़ालिम दुश्मन हो और उसको वीरान करना मंज़ूर हो तो शरअी फ़त्वा मालूम करने के बाद हफ़्ते के दिन एक ठीकरी पक्की तैयार करो और किसी पुराने क़ब्रस्तान की थोड़ी मिट्टी हफ़्ते के दिन लो और थोड़ी सी वीरान घर की लो और थोड़ी मिट्टी किसी खाली घर की लो, जिसके रहने वाले मर गए हों और इन आयतों को इस ठीकरी पर लिखो और खूब बारीक पीस लो, दूसरी मिट्टियों के साथ मिलाओ, फिर इन सब को मिला कर उसके घर में हफ़्ते के दिन पहली साइत में बिखेर दो।

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ هَلْ تَنْقِمُونَ مِنَّا إِلَّا أَنْ آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَمَا
أُنْزِلَ مِنْ قَبْلُ وَأَنَّ أَكْثَرَكُمْ فَاسِقُونَ ۝ قُلْ هَلْ أُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِنْ ذَٰلِكَ مَثُوبَةً
عِنْدَ اللَّهِ مَنْ لَعَنَهُ اللَّهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيرَ وَ
عَبَدَ الطَّاغُوتَ ۚ أُولَٰئِكَ شَرٌّ مَكَانًا وَأَضَلُّ عَنْ سَوَاءِ السَّبِيلِ ۝

५. क़ुल या अह्लल किताबि हल तन्क़िमू न मिन्ना इल्ला अन आमन्ना बिल्लाहि व मा उन्ज़ि ल इलैना व मा उन्ज़ि ल मिन क़ब्लु व अन् न अक स र कुम फ़ासिक़ून० क़ुल हल उनब्बिउकुम बिशर्रिम मिन ज़ालि क मसूबतन अिन्दल्लाहि मन ल अ नहुल्लाहु व ग़ज़ि ब अलैहि व ज अ ल मिन्हुमुल क़ि र द त वल् खनाज़ी र व अ ब दत्ता ग़ू त उलाइ क शर्रुम मकानंव व अज़ल्लु अन सवाइस्सबील०

—पारा ६, रुकूअ १३

तर्जुमा—आप कहिए कि ऐ अह्ले किताब! तुम हम में कौन-सी बात ऐबदार पाते हो, इसके अलावा कि हम ईमान लाए हैं अल्लाह पर और उस पर जो हमारे पास भेजी गयी है और उस पर जो पहले भेजी जा चुकी है, बावजूद इसके कि तुममें अक्सर लोग ईमान से निकले हुए हैं। आप कहिए कि क्या मैं तुमको ऐसा तरीक़ा बताऊं जो इससे भी खुदा के यहां बदला मिलने में ज़्यादा बुरा हो,

वह उन लोगों का तरीक़ा है जिनको अल्लाह ने दूर कर दिया हो और उन पर ग़ज़ब फ़रमाया हो और उनको बन्दर और सुअर बना दिया हो और उन्होंने शैतान की पूजा की हो। ऐसे लोग मकान के एतबार से भी बहुत बुरे हैं और सीधे रास्ते से भी बहुत दूर हैं।

ख़ासियत—जो शख़्स ना-हक़ तक्लीफ़ देता हो और ज़ुल्म करता हो, तो जुमेरात का रोज़ा रखो और नमाज़ इशा की पढ़ कर इन आयतों को किसी वक़्फ़ी घर की एक मुट्ठी मिट्टी लेकर तीस बार पढ़ कर उस शख़्स के घर में वह मिट्टी छोड़ दो, फिर उसकी जान व माल का तमाशा देख लो।

[illegible]

६. इन्नी तवक्कल्तु अलल्लाहि रब्बी व रब्बिकुम मा मिन दाब्बतिन इल्ला हु व आख़िज़ुम बिनासि य ति हा इन् न रब्बी अला सिरातिम मुस्तक़ीम० फ़ इन तवल्लौ फ़ क़द अब्लग़्तुकुम मा उर्सिल्तु बिही इलैकुम व यस्तख़्लिफ़ु रब्बी क़ौमन ग़ै र कुम व ला तज़ुर् रू न हू शैआ इन् न रब्बी अला कुल्लि शैइन हफ़ीज़० —पारा १२, रुकूअ ५

तर्जुमा—मैंने अल्लाह पर तवक्कुल कर लिया है जो मेरा भी मालिक है और तुम्हारा भी मालिक है। जितने धरती पर चलने वाले हैं, सब की चोटी उसने पकड़ रखी है, यक़ीनन मेरा रब सीधे रास्ते पर (चलने से मिलता) है, फिर अगर (इस बयान के बाद भी) तुम (हक़ के रास्ते से) फिरे रहोगे, तो मैं (तो मजबूर समझा जाऊंगा, क्यों कि) जो पैग़ाम देकर मुझको भेजा गया था, वह तुमको पहुंचा चुका हूं और तुम्हारी जगह मेरा रब दूसरे लोगों को ज़मीन में आबाद कर देगा और उसका तुम कुछ नुक़्सान नहीं कर रहे। बेशक मेरा रब हर चीज़ की निगहदाश्त करता है।

ख़ासियत—जिसको किसी ज़ालिम आदमी या तक्लीफ़ पहुंचाने वाले जानवर का डर हो, उसको ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ा करे जब बिस्तर पर लेटे, जब सोये, जब जागे, सुबह के वक़्त, शाम के वक़्त, इन्शा अल्लाहु तआला महफ़ूज़ रहेगा।

७. सूरः रअद (पारा १३)

ख़ासियत—इसको किसी बड़ी नयी रिकाबी पर अंधेरी रात में जिसमें गरज-चमक हो, लिख कर बारिश के पानी से धोकर अंधेरी रात में उस पानी को ज़ालिम हाकिम के दरवाज़े पर छिड़क दे। इन्शाअल्लाहु तआला उसी दिन निकाल दिया जाएगा। इमाम का क़ौल है, जो शख़्स उसको इशा के बाद अंधेरी रात में आग की रोशनी में लिख कर उसी वक़्त ज़ालिम बादशाह या ज़ालिम हाकिम के दरवाज़े पर डाल दे, उसकी रियाया और लश्कर उससे दूर हो जाएं और कोई उसका कहना न माने और उसका दिल ख़ूब तंग हो।

[illegible]

८. फ़ स तज़्कुरू न मा अक़ूलु लकुम व उफ़व्विज़ु अम्री इलल्लाहि इन्नल्ला ह बसीरुम बिल अिबादि० —पारा २४, रुकूअ १०

तर्जुमा—आगे चल कर तुम मेरी बात को याद करोगे और मैं अपना मामला अल्लाह के सुपुर्द करता हूं। अल्लाह तआला सब बन्दों का निगरां है।

ख़ासियत—ज़ालिम के सामने पढ़ने से उसके नुक़्सान से बचा रहेगा।

९. सूरः तग़ाबुन (पारा २८)

ख़ासियत—इस सूरः पढ़ कर किसी ज़ालिम के पास चला जाए तो उसकी बुराई से बचा रहेगा।

१०. अल-जब्बार (दुरुस्त करने वाले)

ख़ासियत—सुबह व शाम २१६ बार पढ़े तो ज़ालिमों की बुराई से बचा रहेगा।

११. अलरक़ीबु (बुलंद करने वाले)

ख़ासियत—सत्तर बार पढ़ने से ज़ालिमों से अम्न हो।

१२. अलख़बीरु (ख़बर रखने वाले)

ख़ासियत—सात दिन तक ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ने से छिपी ख़बरें मालूम होने लगेंगी और जो किसी ज़ालिम, तक्लीफ़ पहुंचाने वाले के पंजे में गिरफ़्तार हो, उसको ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ने से हालत दुरुस्त हो जाए।

१३. अल-क़वीयु (तवाना)

ख़ासियत—अगर कम हिम्मत पढ़े, हिम्मत वाला हो जाए, अगर कमज़ोर पढ़े, ताक़त वाला हो और अगर मज़्लूम अपने ज़ालिम के मग़्लूब करने को पढ़े, वह मग़्लूब हो जाए।

३. कुफ़्ल कुशा

سورۃ آل عمران ۔ الٓمّٓ ۚ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ۝ نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَأَنزَلَ التَّوْرَاةَ وَالْإِنجِيلَ ۝ مِن قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَأَنزَلَ الْفُرْقَانَ ۝ (پ۳ ع۹)

१. सूरः आले इम्रान—'अलिफ़-लाम-मीम० अल्लाहु ला इला ह इल्ला हु वल हय्युल क़य्यूम नज़्ज़ ल अलै कल किता ब बिल हक़्क़ि मुसद्दिक़ल्लिमा बै न यदैहि व अन ज़ लत्तौरा त वल इंजी ल मिन क़ब्लु हुदल्लिन्नासि व अन ज़ लल फ़ुर्क़ान० —पारा ३, रुकूअ ९

तर्जुमा—अलिफ़-लाम-मीम० अल्लाह तआला ऐसे हैं कि उनके सिवा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं। वह ज़िंदा (हमेशा-हमेशा) हैं, सब चीज़ों के संभालने वाले हैं। अल्लाह तआला ने आपके पास कुरआन भेजा है, सच्चाई के साथ, इस तरह कि वह तस्दीक़ करता है उन (आसमानी) किताबों की, जो इससे पहले नाज़िल हो चुकी हैं और इसी तरह भेजा था तौरेत और इंजील को इससे पहले, लोगों की हिदायत के वास्ते और अल्लाह तआला ने मोजज़े भेजे हैं।

ख़ासियत—हिरन की झिल्ली पर बारीक क़लम से लिख कर अंगूठी के नग के नीचे रख दिया जाए, जो शख़्स वुज़ू करके पहने, जाह व क़ुबूलियत हासिल हो जाए और दुश्मन से बचा रहे।

يُرِيدُونَ أَن يُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَيَأْبَى اللَّهُ إِلَّا أَن يُتِمَّ نُورَهُ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ۝ هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ۝ (پ۱۰ ع۱۱)

२. युरीदू न अंय्युत् फ़िऊ नूरल्लाहि बिअफ़्वाहिहिम व याबल्लाहु इल्ला अंयु युतिम म नू र हू व लौ करिहल काफ़िरून० हुवल्लज़ी अर्स ल रसू ल हू बिल हुदा व दीनिल हक़्क़ि लियुज़्हि र हू अलद्दीनि कुल्लिही व लौ करिहल मुश्रिकून० —पारा १०, रुकूअ ११

तर्जुमा—वे लोग यों चाहते हैं कि अल्लाह के नूर (यानी दीने इस्लाम) को अपने मुंह से बुझा दें, हालांकि अल्लाह तआला इसके अलावा कि अपने नूर को कमाल तक पहुंचा दे, मानेगा नहीं, गो काफ़िर लोग कैसे ही ना-ख़ुश हों। (चुनांचे) वह अल्लाह ऐसा है कि उसने अपने रसूल को हिदायत (का सामान यानी कुरआन मजीद) और सच्चा दीन देकर भेजा है, ताकि उसको बाक़ी तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दे, गो मुश्रिक कैसे ही ना-ख़ुश हों।

ख़ासियत—आबगीना के आब ना रसीदा बरतन में ज़ाफ़-

रान व गुलाब से इस आयत को लिख कर ऊद की धूनी देकर रोग़न चंबेली ख़ालिस से उसको धोकर हरी शीशी में उठा रखे। जब किसी के पास जाने की ज़रूरत हो, थोड़ा तेल अपने भवों पर मल कर जाए, इन्शाअल्लाहु तआला क़ुबूलियत व मुहब्बत और इज़्ज़त व जाह लोगों के दिलों में पैदा हो।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتَابِ إِدْرِيسَ إِنَّهُ كَانَ صِدِّيقًا نَبِيًّا ۝ وَرَفَعْنَاهُ مَكَانًا عَلِيًّا ۝

(پاره ۱۶ رکوع ۷)

३. वज़्कुर्‌ फ़िल किताबि इद्‌रीस इन्नहू का न सि द्दीक़न नबीया व रफ़अ्‌नाहु मका नन अलीया० —पारा १६, रुकूअ ७

तर्जुमा—और इस किताब में इद्रीस का भी ज़िक्र कीजिए, बेशक वह बड़े दोस्ती वाले नबी थे और हमने उनको (कमालात में) बुलंद रुत्बे तक पहुंचाया।

ख़ासियत—रुत्बे और शान बढ़ने के लिए पीले रेशम के टुकड़े पर ज़ाफ़रान से, जो शहद में हल की गयी हो, लिख कर तावीज़ बना लें और मोम को कन्दुर में गूंध कर उससे तावीज़ को धूनी दें, और बांध लें, हर जगह इज़्ज़त व आबरू हो।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۝ وَدَاعِيًا إِلَى اللَّهِ
بِإِذْنِهِ وَسِرَاجًا مُنِيرًا ۝ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ بِأَنَّ لَهُمْ مِنَ اللَّهِ فَضْلًا كَبِيرًا ۝ وَلَا
تُطِعِ الْكَافِرِينَ وَالْمُنَافِقِينَ وَدَعْ أَذَاهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ۝

(پاره ۲۲ رکوع ۳)

४. या ऐयुहन्नबीयु इन्ना अर्सल्ना क शाहिदंव व मुबश्शिरंव व नज़ीरं० व दाअियन इलल्लाहि बिइज़्निही व सिराजम मुनीरा० व बश्शिरिल मुअ्‌ मिनी न बि अन न लहुम मिनल्लाहि फ़ज़्लन कबीरा० व ला तुतिअिल काफ़ि री न वल मुनाफ़िक़ी न व दअ्‌ अज़ा-

हुम व त वक्कल अलल्लाहि व कफ़ा बिल्लाहि वकीला०

—पारा २२, रुकूअ ३

तर्जुमा—ऐ नबी! हमने बेशक आपको इस शान का रसूल बना कर भेजा है कि आप गवाह होंगे और आप (मोमिनों के) ख़ुश-ख़बरी देने वाले हैं और (काफ़िरों के) डराने वाले हैं और (सब को अल्लाह की तरफ़ उसके हुक्म से बुलाने वाले हैं) और आप एक रोशन चिराग़ हैं और मोमिनों को बशारत दीजिए कि उन पर अल्लाह की तरफ़ से बड़ा फ़ज़्ल होने वाला है और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों का कहना न कीजिए और उनकी तरफ़ से जो तक्लीफ़ पहुंचे, उसका ख़्याल न कीजिए और अल्लाह पर भरोसा कीजिए। अल्लाह काफ़ी कारसाज़ है।

ख़ासियत—रोग़न चंबेली में मुश्क व ज़ाफ़रान हल करके सुबह की नमाज़ के बाद इन आयतों को सात दिन तक इस पर दम करके शीशी में रख छोड़, भवों और गालों को लगा कर जिसके सामने जाए, वह उसकी इज़्ज़त करे और इज़्ज़त और भले तरीक़े से पेश आए, जो मांगे वह दे और सब पर उसका रौब हो।

५. अल-अज़ीमु (बुज़ुर्ग)

ख़ासियत—ज़्यादा से ज़्यादा ज़िक्र करने से इज़्ज़त और हर मर्ज़ से शिफ़ा हो।

६. अल-जलीलु (बुज़ुर्ग)

ख़ासियत—इसको ज़्यादा से ज़्यादा ज़िक्र करने से या मुश्क व ज़ाफ़रान से लिख कर पास रखने से क़द्र व मंज़िलत ज़्यादा हो।

७. ज़ुल जलालि वल इक्‌रामि (बुज़ुर्गी और इनाम वाला)

ख़ासियत—इसके ज़िक्र करने से इज़्ज़त व बुज़ुर्गी हासिल हो।

९. मुहब्बत के लिए

يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّونَهُۥٓ أَذِلَّةٍ عَلَى ٱلْمُؤْمِنِينَ أَعِزَّةٍ عَلَى ٱلْكَٰفِرِينَ (پ ٦ ع ١٢)

१. युहिब्बुहुम व युहिब्बू न हू अज़िल्लति न अलल मुअ् मि नी न अ अ़िज्ज तिन अल ल काफ़िरीन० —पारा ६, रुकूअ १२

तर्जुमा—जिनसे अल्लाह तआला को मुहब्बत होगी और उनको अल्लाह तआला से मुहब्बत होगी, मेहरबान होंगे वे मुसलमानों पर, तेज होंगे काफ़िर पर।

खासियत—इस आयत को मिठाई पर दम करके खिलाए जिसको खिलाए, इन्शाअल्लाहु तआला उससे मुहब्बत हो जाएगी।

(هُوَ ٱلَّذِىٓ أَيَّدَكَ بِنَصْرِهِۦ وَبِٱلْمُؤْمِنِينَ ۝ وَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ ۚ لَوْ أَنفَقْتَ مَا فِى ٱلْأَرْضِ جَمِيعًا مَّآ أَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ وَلَٰكِنَّ ٱللَّهَ أَلَّفَ بَيْنَهُمْ ۚ إِنَّهُۥ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝ (پ ١ع ٤))

२. हुवल्लज़ी अय्य द क बि नस्रि ही बिल् मुअ्मिनी न व अल ल फ़ बैं न क़ुलूबिहिम लौ अन्फ़क़ त मा फ़िल अर्ज़ि जमीअम मा अल्लफ़ त बैं न क़ुलू बिहिम व लाकिन्नल्ला ह अल्ल फ़ बैं न हुम इन्नहू अज़ीज़ुम हकीम० —पारा १, रुकूअ ४

तर्जुमा—और वही है जिसने आपको अपनी (ग़ैबी) मदद (फ़रिश्तों) से और (ज़ाहिरी मदद) मुसलमानों से ताक़त दी और उनके दिलों में एकता पैदा कर दी और अगर आप दुनिया भर का माल खर्च करते, तब भी उनके दिलों में एकता पैदा न कर सकते। लेकिन अल्लाह ही ने उनमें आपसी एकता पैदा कर दी। बेशक वह ज़बरदस्त हिक्मत वाला है।

खासियत—मुहब्बत के लिए मिठाई पर दम करके खिलाये, दिली मुहब्बत इन्शाअल्लाहु तआला हो जाएगी।

يُوسُفُ أَعْرِضْ عَنْ هَٰذَا ۚ وَٱسْتَغْفِرِى لِذَنۢبِكِ ۖ إِنَّكِ كُنتِ مِنَ ٱلْخَاطِـِٔينَ ۝ وَقَالَ نِسْوَةٌ فِى ٱلْمَدِينَةِ ٱمْرَأَتُ ٱلْعَزِيزِ تُرَٰوِدُ فَتَىٰهَا عَن نَّفْسِهِۦ ۖ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ۖ إِنَّا لَنَرَىٰهَا فِى ضَلَٰلٍ مُّبِينٍ ۝ (پ ١٢ ع ١٣)

३. यूसुफ़ु अअ्रिज़ अन हाज़ा वस्तग़्फ़िरी लि ज़म्बि कि इन्नकि कुन्ति मिनल ख़ातिईन० व क़ा ल निस्वतुन फ़िल मदी न ति म र अ तुल अ़ज़ीज़ि तुराविदु फ़ता हा अन नफ़्सि ही क़द श ग़ फ़ हा हुब्बन इन्ना ल न राहा फ़ी ज़लालिम मुबीन० —पारा १२, रुकूअ १३

तर्जुमा—ऐ यूसुफ़! इस बात को जाने दो (औरत से कहा) ऐ औरत! तू (यूसुफ़) से अपने क़ुसूर की माफ़ी मांग। बेशक सर ता सर तूही क़ुसूरवार है और कुछ औरतों ने जो कि शहर में रहती थीं, यह बात कही कि अज़ीज़ की बीवी अपने ग़ुलाम को उससे ना-जायज़ मतलब हासिल करने के लिए फुसलाती है। इस ग़ुलाम का इश्क़ उसके दिल में जगह कर गया है। हम तो उसको खुली ग़लती में देखते हैं।

खासियत—यह मुहब्बत की आयतों में से है, जिसकी तर्कीब ऊपर दो जगह गुज़र चुकी है।

إِنِّىٓ أَحْبَبْتُ حُبَّ ٱلْخَيْرِ عَن ذِكْرِ رَبِّى حَتَّىٰ تَوَارَتْ بِٱلْحِجَابِ ۝ رُدُّوهَا عَلَىَّ ۖ فَطَفِقَ مَسْحًۢا بِٱلسُّوقِ وَٱلْأَعْنَاقِ ۝ (پ ٢٣ ع ١٢)

४. इन्नी अह्बब्तु हुब्बल ख़ै रि अन ज़िक्रि रब्बी हत्ता तवारत बिल हिजाबि रुद्दूहा अलय य फ़ तफ़ि क़ मस्हम बिस्सूक़ि वल अअ्-नाक़ि० —पारा २३, रुकूअ १२

तर्जुमा—मैं उस माल की मुहब्बत में अपने रब की याद से ग़ाफ़िल हो गया, यहां तक कि सूरज (पश्चिम) के पर्दे में छिप गया।

(फिर नौकरों-चाकरों को हुक्म दिया कि इन घोड़ों को जरा फेर कर मेरे सामने लाओ। उन्होंने उनकी पिंडलियों और गरदनों पर (तलवार से) हाथ साफ़ करना शुरू कर दिया।

ख़ासियत—मुहब्बत की आयतों में से है। तर्कीब ऊपर गुज़र चुकी है।

واعتصموا بحبل الله جميعا ولا تفرقوا واذكروا نعمت
الله عليكم اذ كنتم اعداء فالف بين قلوبكم فاصبحتم بنعمته اخوانا وكنتم
على شفا حفرة من النار فانقذكم منها كذلك يبين الله لكم آياته لعلكم
تهتدون ۝ ولتكن منكم امة يدعون الى الخير ويامرون بالمعروف وينهون
عن المنكر واولئك هم المفلحون ۝

५. वअ़्त सिमू बिहब्लिल्लाहि······व उलाइ क हुमुल मुफ़्लिहून० —पारा ४, रुकूअ़ ८

तर्जुमा—और मजबूत पकड़े रहो अल्लाह तआ़ला के सिलसिले को इस तौर पर कि आपस में सब मिल कर रहो और बाहम ना-इत्तिफ़ाक़ी मत करो और तुम पर जो अल्लाह तआ़ला का इनाम है, उसको याद करो, जब कि तुम (आपस में) दुश्मन थे। पस अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे दिलों में मुहब्बत डाल दी, सो तुम अल्लाह तआ़ला के इनाम से आपस में भाई-भाई हो गये और तुम लोग दोजख़ के गढ़े के किनारे पर थे, सो उससे अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारी जान बचा दी। इसी तरह अल्लाह तआ़ला तुम लोगों को अपने अह्काम बयान करके बतलाते रहते हैं ताकि तुम लोग राह पर रहो और तुम में एक जमाअ़त ऐसा होना ज़रूरी है कि जो ख़ैर की तरफ़ बुलाया करें और नेक कामों के करने को कहा करें और बुरे कामों से रोका करें और ऐसे लोग (आख़िरत में) पूरे कामियाब होंगे।

ख़ासियत—अगर बढ़ते महीने में पीर के दिन हिरन की झिल्ली पर तूत के अ़र्क़ से लिख कर आख़िर में 'या मुअ़ल्लिफ़ल क़ुलूबि अल्लिफ़ बै न फ़्ला निन व फ़्लानिन, लिखे और फ़्लां-फ़्लां की जगह उन दोनों शख़्सों के नाम लिखे, जिनमें मुहब्बत पैदा करना मंज़ूर हो और तालिब के बाज़ू वग़ैरह पर बांध दे, मतलूब मेहरबान हो जाएगा, अगर दुश्मनी हुई, दोस्ती में बदल जाएगी, अगर ग़ज़बनाक होगा, मेहरबान हो जाएगा और इक़बाल व जाह मयस्सर होगा और अगर उसको बाइज़ अपने पास रखे, उसका वाज़ मक़बूल व असर वाला हो।

ونزعنا ما في صدورهم من غل تجري من تحتهم الانهار وقالوا الحمد لله الذي
هدانا لهذا وما كنا لنهتدي لولا ان هدانا الله لقد جاءت رسل ربنا
بالحق ونودوا ان تلكم الجنة اورثتموها بما كنتم تعملون ۝

६. व नज़अ़्ना मा······कुन्तुम तअ़्मलून०—पारा ८, रुकूअ़ १२

तर्जुमा—और जो कुछ उनके दिलों में ग़ुबार था, हम उसको दूर कर देंगे, उनके नीचे नहरें जारी होंगी और वे लोग कहेंगे कि अल्लाह का लाख-लाख एहसान है, जिसने हमको इस मक़ाम तक पहुंचाया और कभी पहुंच (यहां तक) न होती, अगर अल्लाह तआ़ला हमको न पहुंचाते। वाक़ई हमारे रब के पैग़म्बर सच्ची बातें लेकर आए थे और उनसे पुकार कर कहा जाएगा कि यह जन्नत तुम को दी गयी है तुम्हारे अमलों के बदले।

ख़ासियत—नये तराशे क़लम से मिठाई पर लिख कर जिन लोगों में दुश्मनी और अदावत और ना-इत्तिफ़ाक़ी हो, उनको खिलाने से मुहब्बत व इत्तिफ़ाक़ पैदा हो जाए। इसी तरह ख़ुरमा या इंजीर या बेरी पर लिख कर खिलाने से भी असर होता है।

७. सुरतुल क़द्र (पारा ३०)

ख़ासियत—जिससे मुहब्बत हो, उसके सर के बाल ······

कर यह सूर: पढ़े तो कोई ना-गवार बात उससे न हो।

८. 'श्ररहमानिर्रहीम' लिख कर पानी से धोकर वह पानी कि[सी] पेड़ की जड़ में डाल दें, उसके फल में बरकत पैदा हो और अगर कि[सी] को घोल कर पिलाए, उसके दिल में लिखने वाले की मुहब्बत पैदा हो[,] इसी तरह अगर तालिब और मतलूब का नाम मय वालिदा के लिखे[,] उसकी मुहब्बत में परेशान हो, बशर्ते कि जायज़ मुहब्बत हो।

९. अल-क़वीउ (बड़े)

ख़ास्सियत—ज़्यादा से ज़्यादा ज़िक्र करने से इल्म व मारफ़[त] का दरवाज़ा खुले और अगर खाने की चीज़ पर पढ़ कर मियां-बीवी को खिलाया जाए तो आपस में मुहब्बत हो।

१०. अल-वदूदु (दोस्तदार)

ख़ास्सियत—अगर खाने पर एक हज़ार बार पढ़ कर बीवी के साथ खाये तो मुहब्बत करने लगे और फ़रमांबरदार हो जाए।

११. अल-वलीयु (मदद करने वाले)

ख़ास्सियत—जो ज़्यादा से ज़्यादा पढ़े, महबूब हो जाए और जिसको कोई मुश्किल पेश आये, जुमा की रात में हज़ार बार पढ़े, मुश्किल आसान हो जाए।

५. अपना हक़ वसूल करने के लिए

१. अल-मुज़िल्लु (ज़िल्लत देने वाले)

ख़ास्सियत—७५ बार पढ़ कर सज्दा में चला जाए, फि[र] दुआ करे तो जलने वाले की जलन से बचा रहे और जिसका हक़ दूसरे के ज़िम्मे आता हो, वह उसमें टाल-मटोल करता हो, तो उस को ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ने से वह उसका हक़ अदा कर दे।

६. सब का प्रिय बनने के लिए

فالق الإصباح ۚ وجعل الليل سكنا والشمس والقمر حسبانا

تقدير العزيز العليم ۝ وهو الذي جعل لكم النجوم لتهتدوا بها في
ظلمات البر والبحر ۗ قد فصلنا الآيات لقوم يعلمون ۝

१. फ़ालिक़ुल इस्बाहि व ज अ लल्लै ल स क नंव्व श्शम स वल क़ म र हुस्बाना ज़ालि क तक़्दीरुल अज़ीज़िल अलीम॰ व हुव-ल्लज़ी ज अ ल लकुमुन्नुजू म लि तह त दू बिहा फ़ी ज़ुलु मा तिल बर्रि व ल बह्रि क़द फ़ स्सल् नल आयाति लि क़ौमिंय्यअ्लमून॰

—पारा ७, रुकूअ १८

तर्जुमा—अल्लाह तआला सुबह का निकालने वाला है और उसने रात को राहत की चीज़ बनायी है और सूरज और चांद (की रफ़्तार) को हिसाब से रखा है, यह ठहराई हुई बात है, ऐसी ज़ात जो कि क़ादिर है, बड़े इल्म वाला है और वह (अल्लाह) ऐसा है जिसने तुम्हारे (फ़ायदे के) लिए सितारों को पैदा किया ताकि तुम उनके ज़रिए से अंधेरों में और ख़ुश्की में भी और दरिया में भी रास्ता मालूम कर सको। बेशक हमने (ये) दलीलें ख़ूब खोल-खोल कर बयान कर दी, उन लोगों के लिए जो ख़बर रखते हैं।

ख़ास्सियत—अगर लाजवरद के नगीं पर बुध के दिन खुदवा करके अंगूठी पहने, हर तरह की ज़रूरत पूरी हो और क़ुबूलियत और मुहब्बत और डर लोगों की नज़र में पैदा हो।

وإن يريدوا أن يخدعوك فإن حسبك الله ۚ هو الذي أيدك
بنصره وبالمؤمنين ۝ وألف بين قلوبهم ۚ لو أنفقت ما في الأرض جميعا
ما ألفت بين قلوبهم ولكن الله ألف بينهم ۚ إنه عزيز حكيم ۝

२. व इं य्युरीदू अंय्यख़्दऊ क फ़ इन्न हस्ब क ल्लाहु हुवल्लज़ी अय्य द क बिनस्रिही व बिल् मुअ् मिनी न॰ व अल ल फ़ बै न क़ुलू-बिहिम लौ अन्फ़क़्त मा फ़िल अर्ज़ि जमीअन मा अल्लफ़्त बै न क़ुलू-

बिहिम व ला किन्ना ह अल्ल फ़ बैनहुम इन्नहू अज़ीज़ुन हकीम०

—पारा १०, रुकूम ४

तर्जुमा—अगर वे लोग आपको धोखा देना चाहें, तो अल्लाह तआला आपके लिए काफ़ी हैं और वही है जिसने आपको अपनी मदद से और मुसलमानों से ताक़त दी और उनके दिलों में एका पैदा कर दिया और अगर आप दुनिया भर का माल खर्च करते, तब भी उनके दिलों में इत्तिफ़ाक़ पैदा न कर सकते, लेकिन अल्लाह ही ने उनमें एका पैदा कर दिया। बेशक वह ज़बरदस्त हिक्मत वाले हैं।

(ख़ासियत—जो शख़्स रमज़ान के पहले जुमा में ज़ुहर व अस्र के दर्मियान इस आयत को वुज़ू करके तीन रंग यानी हरे, पीले और लाल टुकड़ों पर लिख कर वे टुकड़े टोपी की गोट में लगा कर एहतियात से रख दे, ज़रूरत के वक़्त पहन कर जहां जाए, इज़्ज़त व हैबत व मुहब्बत से लोग पेश आएं।)

وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَزَيَّنَّاهَا لِلنَّاظِرِينَ ○ وَحَفِظْنَاهَا مِن
كُلِّ شَيْطَانٍ رَّجِيمٍ ○ (پ ١٤ ع ٢)

३. व ल क़ द जअ़ल्ना फ़िस्समा इ बुरूजंव व ज़य्यन्नाहा लिन्ना-ज़िरील० व हफ़िज़्ना हा मिन कुल्लि शैतानिर्रजीम०

—पारा १४, रुकूम २

तर्जुमा—और बेशक हमने आसमान में बड़े बड़े सितारे पैदा किए और देखने वालों के लिए उसको सजाया और उसको हर शैताने मरदूद से महफ़ूज़ फ़रमाया—

ख़ासियत—नगीं पर खुदवा करके या हिरन की झिल्ली पर लिख कर पहनने से जाह व क़ुबूलियत के लिए बहुत असर रखती है।

طٰهٰ ○ مَا أَنزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لِتَشْقَىٰ ○ إِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَن يَخْشَىٰ ○
تَنزِيلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْأَرْضَ وَالسَّمَاوَاتِ الْعُلَى ○ الرَّحْمَٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَىٰ ○

لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرَىٰ ○ وَإِن تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ
فَإِنَّهُ يَعْلَمُ السِّرَّ وَأَخْفَى ○ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ ○ (پ ١٦ ع ١٠)

४. त्वाहा—अस्माउल हुस्ना०

—पारा १६, रुकूम १०

तर्जुमा—त्वाहा! हमने आप पर क़ुरआन मजीद इस लिए नहीं उतारा कि आप तक्लीफ़ उठाएं बल्कि ऐसे शख़्स की नसीहत के लिए जो (अल्लाह से) डरता हो। यह उसकी तरफ़ से नाज़िल किया गया है, जिसने ज़मीन को और बुलंद आसमान को पैदा किया है (और) वह बड़ी रहमत वाला अर्श पर क़ायम है। उसी की मिल्क है, जो चीज़ें ज़मीन पर हैं और जो चीज़ें इन दोनों के दर्मियान हैं और जो चीज़ें तहतस्सरा में हैं। (उसके इल्म की यह शान है कि) अगर तुम पुकार कर बात कहो तो वह चुपके से कही हुई बात को और उससे ज़्यादा खफ़ी को जानता है, (वह अल्लाह ऐसा है कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं, उसके अच्छे-अच्छे नाम हैं।

(ख़ासियत—संग मरमर या चीनी या बिल्लौर के बर्तन में मुश्क व काफ़ूर व गुलाब से लिख कर रोग़न बान से धोकर उसमें थोड़ा अंबर व काफ़ूर को बढ़ा करके खुश्बू बना लें, पेशानी और भवों पर मल कर जिसके सामने होगा, वह उसकी इज़्ज़त व आदर करे।)

اللَّهُ نُورُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ مَثَلُ نُورِهِ كَمِشْكَاةٍ فِيهَا مِصْبَاحٌ ۖ
الْمِصْبَاحُ فِي زُجَاجَةٍ ۖ الزُّجَاجَةُ كَأَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُوقَدُ مِن شَجَرَةٍ مُّبَارَكَةٍ
زَيْتُونَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَلَا غَرْبِيَّةٍ يَكَادُ زَيْتُهَا يُضِيءُ وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ ۚ نُّورٌ
عَلَىٰ نُورٍ ۗ يَهْدِي اللَّهُ لِنُورِهِ مَن يَشَاءُ ۚ وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ ۗ وَ
اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ○ فِي بُيُوتٍ أَذِنَ اللَّهُ أَن تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ فِيهَا اسْمُهُ
يُسَبِّحُ لَهُ فِيهَا بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ ○ رِجَالٌ لَّا تُلْهِيهِمْ تِجَارَةٌ وَلَا بَيْعٌ عَن ذِكْرِ

اللّٰهِ وَإِقَامِ الصَّلٰوةِ وَإِيْتَآءِ الزَّكٰوةِ يَخَافُوْنَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيْهِ الْقُلُوْبُ وَ
الْأَبْصَارُ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهِ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ
مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

५. अल्लाहु नूरुस्समावाति—मंय्य शाउ बिग़ैरि हिसाब०

—पारा १८, रुकूअ ११

ख़ासियत—सब के क़ुबूल करने के लिए नहा कर जुमेरात व जुमा का रोज़ा रखे और जुमा के दिन अस्र से पहले क़िब्ले की तरफ़ मुंह करके पहले सूरः यासीन पढ़े, फिर ये आयतें हिरन की झिल्ली पर दीनदार आलिम की दावात की स्याही से लिख कर उस को लपेट कर अस्र की नमाज़ पढ़ो और तावीज़ हाथ में लेकर सूरः कह्फ़ पढ़े और तावीज़ हिफ़ाज़त से उठा रखे, जो शख्स अपने पास रखेगा, आम मक़्बूलियत उसे हासिल होगी।

६. सूरः मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) (पारा २६)

ख़ासियत—लिखकर ज़मज़म के पानी से धोकर पीने से लोगों के नज़र में महबूब हो जाए, जो बात सुने, याद रहे। उसके पानी से ग़ुस्ल करना तमाम मर्ज़ों को दूर करता है।

७. अल-अद्लु (इन्साफ़ करने वाले)

ख़ासियत—जुमा की रात में रोटी के तीस टुकड़ों पर उस को लिखकर खाने से लोगों के दिल क़ाबू में आ जायं।

८. अल-करीम (बख्शिश करने वाले)

ख़ासियत—सोते वक़्त ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ा करे तो लोगों के दिलों में उसकी इज़्ज़त पैदा हो।

الٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ۝ أَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا أَنْ أَوْحَيْنَآ إِلٰى
رَجُلٍ مِّنْهُمْ أَنْ أَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا أَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ

رَبِّهِمْ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ إِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ مُّبِيْنٌ ۝ إِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضَ فِيْ سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ مَا مِنْ شَفِيْعٍ إِلَّا
مِنْ بَعْدِ إِذْنِهِ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ أَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝

९. अलिफ़-लाम-रा—अ फ़ ला तज़क्करून०

—पारा ११, रुकूअ ६

ख़ासियत—जो चाहे कि लोग मेरे क़ाबू में आ जाएं तो शाबान के महीने में अय्यामे बीज़ (१३-१४-१५) के रोज़े रखे। आख़िरी रोज़ा सिरका व साग और जौ की रोटी और नमक से इफ़्तार करे और मग़रिब से इशा तक अल्लाह के ज़िक्र और दरूद शरीफ़ में मश्ग़ूल रहे और इशा पढ़कर भी तस्बीह व तक़्दीस में जब तक चाहे, लगा रहे। फिर ये आयतें आस के पानी और ज़ाफ़रान से एक काग़ज़ पर लिखकर सर के नीचे रखकर सो रहे। सुबह को नमाज़ पढ़कर उस पर्चे को लेकर जिसके पास जाएगा, उसकी क़द्र व मंज़िलत करेगा और जो बात कहेगा, वह दुरुस्त होगी।

१०. अल-मुह्सी (घेरने वाले)

ख़ासियत—अगर रोटी के बीस टुकड़ों पर बीस बार पढ़े तो लोग क़ाबू में आयें।

७. आल-औलाद का फ़रमांबरदार होना

وَأَصْلِحْ لِيْ فِيْ ذُرِّيَّتِيْ إِنِّيْ تُبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝

१. वस्लिह ली फ़ी ज़ुर्रीयती इन्नी तुब्तु इलै क व इन्नी मिनल मुस्लिमीन०

—पारा २६, रुकूअ २

तर्जुमा—और मेरी औलाद में भी मेरे लिए सलाहियत पैदा कर दीजिए। मैं आपकी जनाब में तौबा करता हूं और मैं आप

का फ़रमांबरदार हूं।

खासियत—जिसकी औलाद नाफ़रमान हो, वह इस आयत को हर नमाज़ के बाद पढ़ा करे। इन्शाअल्लाहु तआला सालेह हो जाएगी। पढ़ने के वक़्त 'जुर्रीयती' के लफ़्ज़ पर अपनी औलाद का ख़्याल रखे।

२. अश्शहीदु (बड़े मौजूद)

खासियत—अगर ना-फ़रमान औलाद या बीवी की पेशानी पकड़कर उसको पढ़े या हज़ार बार पढ़कर दम कर दे, वे फ़रमांबरदार हो जायेंगे।

८. राज़ मालूम करने के लिए

يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ اذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَوْفُوا بِعَهْدِي أُوفِ بِعَهْدِكُمْ وَإِيَّايَ فَارْهَبُونِ ○ وَآمِنُوا بِمَا أَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُونُوا أَوَّلَ كَافِرٍ بِهِ وَلَا تَشْتَرُوا بِآيَاتِي ثَمَنًا قَلِيلًا وَإِيَّايَ فَاتَّقُونِ ○ وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ○

१. या बनी इस्राईल लज़कुरू······व अन्तुम तअलमून०

—पारा १, रुकूअ ५

खासियत—नाबालिग लड़की के बदन के कपड़े पर पीर की रात में जब पांच घंटे रात गुज़र जाए, इन आयतों को लिखकर सोई हुई औरत के सीने पर रख दें तो जो कुछ उसने किया होगा सब बतला देगी, मगर यह उसी जगह जायज़ है जहां शरओ तौर पर तजस्सुस (इन्क्वायरी) जायज़ हो, वरना हराम है।

وَإِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادَّارَأْتُمْ فِيهَا وَاللَّهُ مُخْرِجٌ مَا كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ ○ فَقُلْنَا اضْرِبُوهُ بِبَعْضِهَا كَذَٰلِكَ يُحْيِي اللَّهُ الْمَوْتَىٰ وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ○

२. व इज़ क़तल्तुम नफ़्सन फ़द्दारअतुम फ़ीहा वल्लाहु मुख्रिजुम मा कुन्तुम तक्तुमून० फ़कुल्नज़्रिबूहु बिबअ्ज़िहा कज़ालि क युह्यिल्लाहुल मौता व युरीकुम आयातिही लअल्लकुम तअ्क़िलून०

—पारा १, रुकूअ ६

तर्जुमा—और जब तुमने एक आदमी का ख़ून कर दिया, फिर एक दूसरे पर उसको डालने लगे और अल्लाह तआला के इस अम्र का ज़ाहिर करना मंज़ूर था, जिसको तुम छिपाना चाहते थे। इसलिए हमने हुक्म दिया कि इसको उसके किसी टुकड़े से छिपा दो। इसी तरह हक़ तआला (क़ियामत में) मुर्दों को ज़िंदा कर देंगे और अल्लाह तआला अपनी (क़ुदरत की) नज़ीरें तुमको दिखलाते हैं, इस उम्मीद पर कि तुम अक़्ल से काम करो।

खासियत—सोते आदमी से राज़ मालूम करने के लिए, मगर जिस जगह मालूम करना शरअन जायज़ हो।

९. जुदाई से बचने के लिए

१. अल-मुह्यी (ज़िंदा करने वाले)

खासियत—जिसको किसी से जुदाई का डर या क़ैद का ख़तरा हो, इसको ज़्यादा से ज़्यादा पढ़े।

१०. सरकश ग़ुलाम के लिए

إِنِّي تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ رَبِّي وَرَبِّكُمْ مَا مِنْ دَابَّةٍ إِلَّا هُوَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا إِنَّ رَبِّي عَلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ○

१. इन्नी तवक्कल्तु अलल्लाहि रब्बी व रब्बिकुम मा मिन दाब्बतिन इल्ला हु व आख़िज़ुम बिनासि यतिहा इन न रब्बी अला सिरातिम मुस्तक़ीम०

—पारा १२, रुकूअ ५

तर्जुमा—मैंने अल्लाह पर तवक्कुल कर लिया है, जो मेरा भी मालिक है और तुम्हारा भी मालिक है, जितने धरती पर चलने वाले हैं, सब की चोटी उसने पकड़ रखी है। यक़ीनन मेरा रब सीधे रास्ते पर (चलने से मिलता) है।

ख़ासियत—अगर कोई लौंडी या गुलाम सरकश हो तो बाल पेशानी के पकड़कर तीन बार इसको पढ़ें और उस पर दम करे, इन शाअल्लाहु तआला फ़रमांबरदार और क़ाबू में हो जाएगा।

११. खाना वीरानी के लिए

فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ اَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ ۭ حَتّٰۗي اِذَا فَرِحُوْا بِمَاۤ اُوْتُوْۤا اَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً فَاِذَا هُمْ مُّبْلِسُوْنَ ۝ فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۭ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

१. फ लम्मा नसू मा……वल् हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन०

—पारा ७, रुकूअ ११

तर्जुमा—फिर जब वे लोग इन चीज़ों को भूले रहे, जिनकी उनको नसीहत की जाती थी, तो हमने उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिए, यहां तक कि जब उन चीज़ों पर जो कि उनको मिली थीं वे खूब इतरा गए, हमने उनको यकायकी पकड़ लिया, फिर तो बिल्कुल हैरतज़दा रह गये, फिर ज़ालिम (काफ़िर) लोगों की जड़ (तक) कट गई और अल्लाह का शुक्र है, जो तमाम आलम का परवरदिगार है।

○

जादू, जिन्न, आसेब और तक्लीफ़ देने वाले जानवरों से हिफ़ाज़त

१. जिन्न व इन्स से हिफ़ाज़त

اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۥ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ۭ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۭ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَاۗءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا يَـــــُٔـوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ۝

१. अल्लाहु ला इला ह इल्ला हु व से व हुवल अलीयुल अज़ीम० तक

—पारा ३, रुकूअ २

तर्जुमा—अल्लाह तआला (ऐसा है कि) उसके सिवा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं, ज़िंदा है, संभालने वाला है, न उसको ऊंघ दबा सकती है, न नींद। उसी के मम्लूक हैं सब, जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है। ऐसा कौन शख़्स है, जो उसके पास (किसी की) सिफ़ारिश कर सके, उसकी इजाज़त के बग़ैर, वह जानता है उनके तमाम हाज़िर व ग़ायब हालात को और वे मौजूदात उसकी मालूमात में से किसी चीज़ को अपने अहाता-ए-इल्मी में नहीं ला सकते, मगर जिस क़दर (इल्म देना वही) चाहे, उसकी कुर्सी ने सब आसमानों और ज़मीन को अपने अन्दर ले रखा है और अल्लाह तआला को उन दोनों की हिफ़ाज़त कुछ बोझ नहीं गुज़रती और वह आलीशान है।

ख़ासियत—आयतल कुर्सी को जो शख़्स हर नमाज़ के बाद एक बार पढ़ ले, इन्शाअल्लाह तआला उसके पास शैतान न आएगा, क्योंकि उसने इक़रार किया है कि जो शख़्स आयत कुर्सी पढ़ता है, मैं उसके पास नहीं जाता।

२. सूरतुल मुअव्वज़तैन (पारा ३०)

ख़ासियत—हर क़िस्म के दर्द, बीमारी व जादू व नज़र वग़ैरह के लिए पढ़ना और दम करना और लिख कर बांधना फ़ायदेमंद है और सोते वक़्त पढ़ने से हर क़िस्म की आफ़त से बचा रहे और अगर उसको लिख कर बच्चों के बांध दे तो उम्मुस्सिबयान वग़ैरह से हिफ़ाज़त रहे और अगर हाकिम के सामने जाते के वक़्त पढ़ ले, तो उसकी बुराई से बचा रहे।

३. सूरः इख़्लास (पारा ३०)

ख़ासियत—अगर ख़रगोश की झिल्ली पर लिख कर अपने पास रख ले तो कोई इंसान और जिन्न और तक्लीफ़ पहुंचाने वाला जानवर उसके पास न आए।

४. एक बुज़ुर्ग से नक़्ल किया गया है कि जंगल में एक बकरी देखी, जिससे भेड़िया खेल रहा था। यह पास गये तो भेड़िया भाग गया। देखते क्या हैं कि इस बकरी के गले में कोई तावीज़ है, खोल कर देखा तो उस में ये आयतें निकलीं—

وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ۞ فَاللَّهُ خَيْرٌ حَافِظًا وَهُوَ أَرْحَمُ
الرَّاحِمِينَ ۞ وَحِفْظًا مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ مَارِدٍ ۞ وَحَفِظْنَاهَا مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ رَجِيمٍ ۞
وَحِفْظًا ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۞ إِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ۞ إِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ
لَشَدِيدٌ ۞ إِنَّهُ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيدُ ۞ وَهُوَ الْغَفُورُ الْوَدُودُ ۞ ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيدُ ۞ فَعَّالٌ
لِمَا يُرِيدُ ۞ هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْجُنُودِ ۞ فِرْعَوْنَ وَثَمُودَ ۞ بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي

تَكْذِيبٍ ۞ وَاللَّهُ مِنْ وَرَائِهِمْ مُحِيطٌ ۞ بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَجِيدٌ ۞ فِي لَوْحٍ مَحْفُوظٍ ۞

व ला यऊदुहू हिफ़्ज़ु हुमा व हु व ल अलीयुल अज़ीम० फ़ल्लाहु ख़ैरुन हाफ़िज़ंव व हु व अर्हमुर्राहिमीन व हिफ़्ज़म मिन कुल्लि शैतानिम मारिद० व हफ़िज़्नाहा मिन कुल्लि शैतानिर्रजीम० व हिफ़्ज़न ज़ालि क तक़्दीरुल अज़ीज़िल अलीम० इन कुल्लु नफ़्सिल्लम्मा अलैहा हाफ़िज़० इन न बत् श रब्बि क ल शदीद० इन्नहू हु व युब्दिउ व युईद० व हुवल ग़फ़ूरुल वदूदु ज़ुल अर्शि ल मजीद० फ़अ़्आ़लुल लिमा युरीद हल अता क हदीसुल जुनूदि फ़िरऔ न व समूद बलिल्लज़ी न क फ़ रू फ़ी तक्ज़ीबिं व वल्लाहु मिंव व राइहिम मुहीत० बल हु व कुरआनुम मजीदुन फ़ी लौहिम महफ़ूज़०

जो शख़्स इनको लिख कर अपने पास रखे, उसको कोई तक्लीफ़ न पहुंचे।

५. अल-क़ह्हारु (बड़े ग़ालिब)

ख़ासियत—ज़्यादा से ज़्यादा ज़िक्र करने से दुनिया की मुहब्बत और अल्लाह के अलावा की बड़ाई दिल से जाती रहे और दुश्मनों पर ग़लबा हो और अगर चीनी के बर्तन पर लिख कर ऐसे आदमी को पिलाया जाए, जो जादू की वजह से औरत पर क़ुदरत न रख पाता हो, जादू दूर हो।

२. जादू दूर करने के लिए

فَلَمَّا أَلْقَوْا قَالَ مُوسَىٰ مَا جِئْتُمْ بِهِ السِّحْرُ ۖ إِنَّ اللَّهَ سَيُبْطِلُهُ ۖ إِنَّ اللَّهَ
لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِينَ ۞ وَيُحِقُّ اللَّهُ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ ۞

(پ ۱۱ رکوع ۱۳)

१. फ़ लम्मा अल्क़ौ क़ा ल मूसा मा जिअ्तुम बिहिस्सिहरु इन्नल्ला ह स युब्ति लु हू इन्नल्ला ह ला युस्लिहु अ म लल मुफ़्सि-

दीन० व युहिक़्क़ुल्लाहु ल हक़्क़ बिकलिमाति ही व लौ करिहल काफ़िरून०

—पारा ११, रुकूअ १३

तर्जुमा—सो जब उन्होंने (अपना जादू का सामान) डाला तो मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि जो कुछ तुम (बना कर) लाये हो, जादू है। यक़ीनी बात है कि अल्लाह तआला इस (जादू) को दरहम-बरहम किए देता है (क्योंकि) अल्लाह तआला ऐसे फ़सादियों का काम बनने नहीं देता और अल्लाह तआला सही दलील (यानी मोजज़े) को अपने वायदों के मुवाफ़िक़ साबित कर देता है, गो मुजरिम (और काफ़िर) लोग कैसा ही ना-गवार समझें।

ख़ासियत—जादू के लिए बहुत आज़माया हुआ है। जिस पर किसी ने जादू किया हो, इन आयतों को लिख कर उसके गले में डालें या तश्तरी पर लिख कर पिलाएं, इन्शाअल्लाहु तआला तन्दुरुस्त हो जाएगा।

يَا بَنِي آدَمَ خُذُوا زِينَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَكُلُوا وَاشْرَبُوا وَلَا تُسْرِفُوا إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ ۝ قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِينَةَ اللَّهِ الَّتِي أَخْرَجَ لِعِبَادِهِ وَالطَّيِّبَاتِ مِنَ الرِّزْقِ ۚ قُلْ هِيَ لِلَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ كَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝ قُلْ إِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَالْإِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَأَنْ تُشْرِكُوا بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ سُلْطَانًا وَأَنْ تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝ (پ۸ ع۱۱)

२. या बनी आद म ख़ुज़ू ज़ी न त कुम······मा ला तअ़्ल मून०

—पारा ८, रुकूअ ११

तर्जुमा—ऐ आदम की औलाद! तुम मस्जिद की हाज़िरी के वक़्त अपना लिबास पहन लिया करो और ख़ूब खाओ और पियो और हद से मत निकलो। बेशक अल्लाह तआला पसन्द नहीं करते, हद से निकल जाने वालों को। आप फ़रमाइए कि अल्लाह तआला के पैदा किये हुए कपड़ों को, जिनको उसने अपने बन्दों के वास्ते बनाया है और खाने-पीने की हलाल चीज़ों को किस शख़्स ने हराम किया है। आप यह कह दीजिए कि ये चीज़ें इस तौर पर कि क़ियामत के दिन भी ख़ालिस रहें, दुनिया की ज़िंदगी में ख़ालिस ईमान वालों ही के लिए हैं, हम इसी तरह तमाम आयतों को समझदारों के वास्ते साफ़-साफ़ बयान किया करते हैं। आप फ़रमाइये कि अल-बत्ता मेरे रब ने हराम किया है तमाम गन्दी बातों को, उनमें जो एलानिया हैं, वे भी और उनमें जो छिपी हैं, वे भी और हर गुनाह की बात को और ना-हक़ किसी पर ज़ुल्म करने को और इस बात को कि तुम अल्लाह तआला के साथ किसी ऐसी चीज़ को शरीक ठहराओ, जिस की अल्लाह ने कोई सनद नाज़िल नहीं फ़रमायी और इस बात को कि तुम लोग अल्लाह तआला के ज़िम्मे ऐसी बात लगा दो, जिस की तुम सनद न रखो।

ख़ासियत—यह आयत ज़हर व बुरी नज़र व जादू के दूर करने के लिए फ़ायदेमंद है। जो शख़्स इसको हरे अंगूर के अर्क़ और ज़ाफ़रान से लिख कर आंवले के पानी से धोकर ग़ुस्ल करे, बुरी नज़र और जादू उस से दूर हो और जो खाने में मिला कर खाये तो ज़हर से बचा रहे और जादू और बुरी नज़र से भी।

فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمْ مُوسَىٰ أَلْقُوا مَا أَنْتُمْ مُلْقُونَ ۝ فَلَمَّا أَلْقَوْا قَالَ مُوسَىٰ مَا جِئْتُمْ بِهِ السِّحْرُ ۖ إِنَّ اللَّهَ سَيُبْطِلُهُ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِينَ ۝ (پ۱۱ ع۱۳)

३. फ़ लम्मा जाअस्स ह र तु का ल लहुम मूसा अल्क़ू मा अन्तुम मुल्क़ून० फ़लम्मा अल्क़ौ का ल मूसा मा जिअ़्तुम बिहिस्सिहरु इन्नल्ला ह स युब्ति लहू इन्नल्ला ह ला युस्लिहु अ़ म ल ल मुफ़्सि-दीन०

—पारा ११, रुकूअ १३

तर्जुमा—सो जब वे आये (और मूसा अलैहिस्सलाम से) मुक़ा

बला) हुआ, मूसा (अलैहिस्सलाम) ने उनसे फ़रमाया कि डालो जो कुछ तुमको (मैदान में) डालना है, सो जब उन्होंने (अपना जादू का सामान) डाला तो मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि जो कुछ तुम (बना कर) लाये हो, जादू है। यक़ीनी बात है कि अल्लाह तआला इस (जादू) को अभी दरहम-बरहम किये देता है, (क्योंकि) अल्लाह तआला ऐसे फ़सादियों का काम बनने नहीं देता।

खासियत—सख्त जादू के दूर करने के लिए फ़ायदेमंद है। एक घड़ा बारिश के पानी का लेकर ऐसी जगह से जहां बरसने के वक़्त किसी की नज़र न पड़ी हो और एक घड़ा ऐसे कुएं के पानी का ले, जिसमें से कोई पानी न भरता हो, जुमा के दिन ऐसे पेड़ों के सात पत्ते ले, जिसका फल न खाया जाता हो, फिर दोनों पानी मिला कर उसमें सातों पत्ते डाल दे, फिर इन आयतों को काग़ज़ पर लिख कर इस पानी से धोकर जादू के मारे को दरिया के किनारे पर ले जाकर पानी में उसको खड़ा करके रात के वक़्त इस पानी से उसको गुस्ल दे। इन्शाअल्लाहु तआला जादू ग़लत हो जाएगा।

३. जिन्न व इन्सान का क़ाबू में करना

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ إِنِّي جَاعِلٌ فِي الْأَرْضِ خَلِيفَةً ۚ قَالُوٓا أَتَجْعَلُ فِيهَا مَنْ يُّفْسِدُ فِيهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَآءَ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ ۚ قَالَ إِنِّيٓ أَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ○ وَعَلَّمَ آدَمَ الْأَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلٰٓئِكَةِ فَقَالَ أَنْۢبِـُٔونِي بِأَسْمَآءِ هٰٓؤُلَآءِ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِينَ ○ قَالُوا سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَآ إِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ○ (پ۱ رکوع ۴)

१. व इज़ क़ा ल रब्बु क लिल मलाइकति······इन्न क अन्तल अलीमुल हकीम○ —पारा १, रुकूअ ४

तर्जुमा—और जिस वक़्त इर्शाद फ़रमाया, आपके रब ने फ़रिश्तों से कि ज़रूर मैं बनाऊंगा, ज़मीन में एक नायब, फ़रिश्ते कहने लगे कि आप पैदा करेंगे, ज़मीन में ऐसे लोगों को जो फ़साद करेंगे और ख़ून बहाएंगे और हम बराबर तस्बीह कहते रहते हैं, अल्लाह की तारीफ़ के साथ और तक़्दीस करते रहते हैं आपकी। हक़ तआला ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं जानता हूं इस बात को जिसे तुम नहीं जानते। और इल्म दे दिया अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को (उनको पैदा करके) सब चीज़ों के नामों का। फिर वे चीज़ें फ़रिश्तों के सामने कर दीं फिर फ़रमाया कि बताओ मुझको नाम उन चीज़ों के (यानी उनके आसार व ख़वास के साथ) अगर तुम सच्चे हो। फ़रिश्तों ने अर्ज़ किया कि आप तो पाक हैं, हमको ही इल्म नहीं, मगर वही जो कुछ आपने इल्म दिया। बेशक आप बड़े इल्म वाले हैं, हिक्मत वाले हैं (कि जिस क़दर जिस के लिए मस्लहत जाना, उसी क़दर इल्म व समझ अता फ़रमायी।)

खासियत—इल्म को सीखने और जिन्नों और दूसरे इंसानों को क़ाबू में करने के लिए मुफ़ीद है। जिस महीने की पहली तारीख़ को जुमेरात हो, गुस्ल करके उस दिन रोज़ा रखे। शाम को जौ की रोटी, शकर और किसी क़िस्म के साग से इफ़्तार करे और अपने वक़्त पर सो रहे। जब आधी रात हो, उठ कर वुज़ू करके क़िब्ला रुख़ बैठ कर ये आयतें ३३ बार पढ़े, फिर कांच के बर्तन पर मुश्क व ज़ाफ़रान व गुलाब से इन आयतों को लिख कर धोने के पानी से धोकर पिए और सो रहे। सात दिन तक इसी तरह करे और आख़िरी दिन में ये आयतें सत्तर बार पढ़े, मगर मकान तंहाई का हो और ऊद की धूनी दे, फिर फ़ारिग़ होकर उन ही कपड़ों में सो रहे। इन्शाअल्लाहु मक़्सूद हासिल होगा।

○

४. शैतानी वस्वसा दूर करने के लिए

وَإِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ إِنَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝
إِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا إِذَا مَسَّهُمْ طٰۤئِفٌ مِّنَ الشَّيْطٰنِ تَذَكَّرُوا فَإِذَا هُمْ مُّبْصِرُونَ ۝

(پ۹ ع۱۴)

१. व इम्मा यन्ज़ग़न्न क मिनश्शैतानि न ज़ गुन फ़स्तअिज़ बिल्लाहि इन्नहू समीअुन अलीम॰ इन्नल्लज़ी न त्त क़ौ इज़ा मस्सहुम ताइफ़ुम मिनश्शैतानि तज़क्करू फ़ इ ज़ा हुम मुब्सिरून॰

—पारा ९, रुकूअ १४

तर्जुमा—और अगर आपको कोई वस्वसा शैतान की तरफ़ से आने लगे तो अल्लाह की पनाह मांग लिया कीजिए। बिला शुब्हा वह खूब सुनने वाला, खूब जानने वाला है। यक़ीनन जो लोग खुदा तरस हैं, जब उनको कोई खतरा शैतान की तरफ़ से आजाता है, तो वह याद में लग जाते हैं, सो यकायक उनकी आंखें खुल जाती हैं।

खासियत—जिसको वस्वसों और खतरों और बुरे ख्यालों और दिल के कम्पन ने आजिज़ कर दिया हो, इन आयतों को गुलाब व ज़ाफ़रान से जुमा के दिन सूरज के निकलने के वक्त सात परचों पर लिख कर हर दिन एक परचा निगल जाए और उस पर एक घूंट पानी का पी ले, इन्शाअल्लाहु तआला दूर हो जाएगा।

फ़ायदा—हदीसों में आया है कि वस्वसे के वक्त 'आमन्तु बिल्लाहि व रसुलिही' कहे या अअूज़ुबिल्लाह पढ़ कर बायीं तरफ़ तीन बार थुतकारना आया है।

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ظَاهِرُهُ وَبَاطِنُهُ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ

आमन्तु बिल्लाहि व रसुलिही वज़ाहिरु वल बातिनु व हु व बि कुल्लि शैइन अलीम॰ पढ़े। इससे किसी को निजात नहीं होती, इसका ग़म न चाहिए, या

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ

'ला इला ह इल्लल्लाहु' ज्यादा से ज्यादा पढ़े।

अबू सुलेमान दारानी ने अजीब तद्बीर बतलायी है कि जब वस्वसा आये, खूब खुश हो, शैतान को मुसलमान का खुश होना सख्त ना-गवार है, वह फिर वस्वसा न डालेगा।

५. खौफ़ का दूर होना

فَاللّٰهُ خَيْرٌ حٰفِظًا وَّهُوَ أَرْحَمُ الرّٰحِمِينَ ۝ (پ۴ ع۲)

१. फ़ल्लाहु खैरुन हाफ़िज़ा व हु व अर्हमुर्राहिमीन॰

—पारा ४, रुकूअ २

तर्जुमा—अल्लाह (के सुपुर्द वही) सबसे बड़ा निगहबान है और वह सब मेहरबानों से ज्यादा मेहरबान है।

खासियत—जिसको किसी दुश्मन से डर हो या और किसी तरह की बला व मुसीबत का डर हो, वह उसको ज्यादा से ज्यादा पढ़ा करे, इन्शाअल्लाहु तआला मुश्किल दूर हो जाएगी।

إِذْ هَمَّتْ طَّآئِفَتٰنِ مِنْكُمْ أَنْ تَفْشَلَا وَاللّٰهُ وَلِيُّهُمَا وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُونَ ۝ وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّأَنْتُمْ أَذِلَّةٌ فَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ
إِذْ تَقُولُ لِلْمُؤْمِنِينَ أَلَنْ يَّكْفِيَكُمْ أَنْ يُّمِدَّكُمْ رَبُّكُمْ بِثَلٰثَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ
مُنْزَلِينَ ۝ بَلٰٓى إِنْ تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا وَيَأْتُوكُمْ مِّنْ فَوْرِهِمْ هٰذَا يُمْدِدْكُمْ
رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُسَوِّمِينَ ۝ وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ إِلَّا بُشْرٰى لَكُمْ
وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوبُكُمْ بِهٖ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ۝ (پ۴ ع۳)

२. इज़ हम्मत ताइफ़तानि·········मिन्इन्दिल्लाहिल अज़ीज़िल

हकीम० —पारा ४, रुकूअ ४

तर्जुमा—जब तुम में से दो जमाअतों (बनी सलमा व बनी हारिसा) ने दिल में ख्याल किया कि हिम्मत हार दें और अल्लाह तआला इन दोनों जमाअतों का मददगार था और पस मुसलमानों को तो अल्लाह तआला पर भरोसा करना चाहिए और यह बात जानी समझी है कि अल्लाह तआला ने तुमको बद्र की लड़ाई में मदद से जिताया, हालांकि तुम बे-सर व सामान थे। सो अल्लाह तआला से डरते रहा करो, क्या तुमको यह बात काफ़ी न होगी कि तुम्हारा रब तुम्हारी मदद करे तीन हज़ार फ़रिश्तों के साथ (जो आसमान से) उतारे जाएंगे। हां, क्यों नहीं (काफ़ी होगा) अगर मुस्तकिल रहोगे और तक़्वा वाले रहोगे और (अगर) वे तुम पर एकदम से (भी) आएंगे, तो तुम्हारा रब तुम्हारी मदद फ़रमाएगा। पांच हज़ार फ़रिश्तों से जो कि एक ख़ास शक्ल बनाये होंगे और अल्लाह तआला ने मदद सिर्फ़ इस लिए की कि तुम्हारे लिए (ग़लबे) की खुशख़बरी हो और ताकि तुम्हारे दिलों को (बेचैनी) से चैन मिल जाए और मदद सिर्फ़ अल्लाह ही की तरफ़ से है जो कि ज़बरदस्त हैं, हिक्मत वाले (भी) हैं।

ख़ासियत—ये आयतें ज़ालिम बादशाह व दुश्मन और रात के वक़्त जिन्न या इंसान के डर के लिए हैं, इसको जुमा की रात में आधी रात के वक़्त वुज़ू करके लिखे, फिर लिखने वाला सुबह की नमाज़ पढ़ के सूरज निकलने तक ज़िक्र व तस्बीह में लगा बैठा रहे। जब सूरज बुलंद हो जाए, दो रक्अत पढ़े, पहली में फ़ातिहा और आयतल कुर्सी और दूसरी में फ़ातिहा और 'आ म नर्रसूलु' से आख़िर सूरः तक पढ़े, फिर सात बार इस्तग़फ़ार पढ़े और सात बार 'हस्बियल्लाहु ला इला ह इल्ला हु व अलैहि तवक्कल्तु व हु व रब्बुल अर्शिल अज़ीम०' फिर ताज़ा वुज़ू करके ये आयतें लिख कर अपने पास रख ले, इन्शाअल्लाहु तआला मुराद हासिल हो।

وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُورًا ۝ وَجَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَن يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۚ وَإِذَا ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِي الْقُرْآنِ وَحْدَهُ وَلَّوْا عَلَىٰ أَدْبَارِهِمْ نُفُورًا ۝

३. व इज़ा क़रअ्तल क़ुरआ न से अला अद्बारिहिम नुफ़ूरा० —पारा १५, रुकूअ ५

तर्जुमा—और जब आप क़ुरआन पढ़ते हैं तो हम आपके और जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, उनके दर्मियान एक परदा डाल देते हैं और (वह परदा यह है कि) हम उनके दिलों पर परदा डालते हैं इससे कि वे उसको समझें और उनके कानों में डाट देते हैं और जब आप क़ुरआन में सिर्फ़ अपने रब का ज़िक्र करते हैं, तो वे लोग नफ़रत करते हुए पीठ फेर कर चल देते हैं।

ख़ासियत—किसी डरे हुए पर, जो गन्दे ख्यालों में गिरफ़्तार हो, पढ़ कर दम कर दे, तो उसका डर ख़त्म हो जाए।

४. दूसरा असर—कोई भूत पलीद किसी के सर हो गया हो तो नीले पश्मीने पर या काग़ज़ पर लिख कर उसके बाज़ू पर बांध दिया जाए, तो वह दूर हो जाए।

६. तकलीफ़ देने वाले जानवर से बचने का अमल

१. यह आयत पढ़ कर जिस आदमी या जानवर से डर हो, उस की तरफ़ दम करे—

اللَّهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۖ لَنَا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ ۖ لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ ۖ اللَّهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۖ

आमाले कुरआनी

अल्लाहु रब्बुना व रब्बुकुम लना अअ्मालुना व लकुम अअ्मालु कुम ला हुज्ज त बै नना व बै न कुम अल्लाहु यज्मघु बै न ना॰
उसकी तक्लीफ़ से बचा रहे।

चौथा—

حٰمٓ ۝ عٓسٓقٓ ۝ كَذٰلِكَ يُوحِيٓ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِكَ
اللّٰهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

हा-मीम॰ ऐन-सीन-क़ाफ़॰ क ज़ालि क यूहा इलै क व इलल्लज़ी न मिन क़ब्लि कल्लाहुल अज़ीज़ुल हकीम॰
बड़ी मुसीबतों के वक़्त पढ़ना मुफ़ीद है।
२. काब अह्बार से नक़ल किया गया है कि सात आयतें जब पढ़ लेता हूं, फिर किसी बात का डर नहीं रहता।

पहली आयत

قُل لَّن يُصِيبَنَآ إِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا هُوَ مَوْلٰىنَا وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُونَ ۝

कुल लंय्युसी ब ना इल्ला मा क त बल्लाहु लना हु व मौलाना व अलल्लाहि फ़ल य त वक्कलिल मुअ्मिनून॰

दूसरी आयत

وَإِن يَمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُٓ إِلَّا هُوَ وَإِن يُرِدْكَ
بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهِ يُصِيبُ بِهِ مَن يَشَآءُ مِنْ عِبَادِهِ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝

व इंय्यम्सस्कल्लाहु बिज़ुर्रिन फ़ ला काशि फ़ लहू इल्ला हु व व इंय्युरिद् क बिख़ैरिन फ़ ला राद द लिफ़ज़्लिही युसीबु बिही मंय्यशाउ मिन अिबादिही व हु वल ग़फ़ूरुर्रहीम॰

तीसरी आयत

وَمَا مِن دَآبَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَ
مُسْتَوْدَعَهَا كُلٌّ فِي كِتٰبٍ مُّبِينٍ ۝

व मा मिन दाब्बतिन फ़िल अर्ज़ि इल्ला अलल्लाहि रिज़्क़ुहा व यअ्लमु मुस्तक़र्रहा व मुस्तौ द अहा कुल्लुन फ़ी किताबिम मुबीन॰

चौथी आयत

إِنِّي تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ رَبِّي وَرَبِّكُم مَّا مِن دَآبَّةٍ إِلَّا هُوَ اٰخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهَآ
إِنَّ رَبِّي عَلٰى صِرٰطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝

इन्नी तवक्कल्तु अलल्लाहि रब्बी व रब्बिकुम मा मिन दाब्बतिन इल्ला हु व आख़िज़ुम बिनासि य ति हा इन न रब्बी अला सिरातिम मुस्तक़ीम॰

पांचवीं आयत

وَكَأَيِّن مِّن دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا اللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَإِيَّاكُمْ وَهُوَ
السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

व क अय्यिम मिन दाब्बतिन ला तह्मिलु रिज़्क़हा अल्लाहु यर्ज़ुक़ुहा व इय्या कुम व हुवस्समीउल अलीम॰

छठी आयत

مَا يَفْتَحِ اللّٰهُ لِلنَّاسِ مِن رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا وَمَا
يُمْسِكْ فَلَا مُرْسِلَ لَهُ مِنْۢ بَعْدِهِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

मा यफ़्तहिल्लाहु लिन्नासि मिर्रहमतिन फ़ला मुम्सि क लहा व मा युम्सिकु फ़ला मुर्सि ल लहू मिम बअ्दिही व हुवल अज़ीज़ुल हकीम०

सातवीं आयत

وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۚ قُلْ أَفَرَأَيْتُم مَّا تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ إِنْ أَرَادَنِيَ اللَّهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كَاشِفَاتُ ضُرِّهِ أَوْ أَرَادَنِي بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكَاتُ رَحْمَتِهِ ۚ قُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ ۖ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُونَ ۝

व लइन सअल्तहुम मन ख ल क़स्समावाति वल् अर्ज़ ल यक़ुलुन्नल्ला ह क़ुल अ फ़ रएतुम मा तद्अू न मिन दूनिल्लाहि इन अरा द नियल्लाहु बि ज़ुर्रिन हल हुन्न काशिफ़ातु ज़ुर्रि ही औ अरा द नी बिरहमतिन हल हुन्न मुम्सिकातु रहमति ही क़ुल हस्बियल्लाहु अलैहि य तवक्कलुल मुतवक्किलून०

३. डर दूर करने के लिए—रसूलुल्लाह सल्ल० से नक़ल किया गया है कि किसी ने किसी शख़्स को क़त्ल की धमकी दी, उसको डर हुआ, उसने किसी आलिम से ज़िक्र किया। उन्होंने फ़रमाया कि घर से निकलने से पहले सूरः यासीन पढ़ लिया करो, फिर घर से निकला करो। वह शख़्स ऐसा ही करता था और जब अपने दुश्मन के सामने आता था, उसको हरगिज़ नज़र न आता था।

७. आसेब वग़ैरह से हिफ़ाज़त

أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ۝ فَتَعَالَى اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۖ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ ۝ وَمَن يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا

آخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهُ بِهِ فَإِنَّمَا حِسَابُهُ عِندَ رَبِّهِ

१. अ फ़ हसिब्तुम अन्नमा ख़लक़्ना कुम अ ब संव्वअन्नकुम इलैना ला तुर्जअून० फ़ त आलल्लाहुल मलिकुल हक़्क़ु ला इला ह इल्ला हु व रब्बुल अर्शिल करीम व मंय्यद्अु मअल्लाहि इलाहन आ ख र ला बुर्हा न लहू बिही फ़ इन्नमा हिसाबुहू अिन्द रब्बि ही०

—पारा १८, रुकूअ ६

तर्जुमा—हां, तो क्या तुमने यह ख़्याल किया था कि हमने तुमको यों ही मुहमल (हिक्मत से ख़ाली) पैदा कर दिया है और यह (ख़्याल किया था) कि हमारे पास नहीं लाये जाओगे, सो (इस से पूरी तरह साबित हो गया कि) अल्लाह तआला बहुत ही आली-शान है, जो कि बादशाहे हक़ीक़ी है, उसके सिवा कोई भी इबादत के लायक़ नहीं (और) वह अर्शे अज़ीम का मालिक है और जो शख़्स (इस बात पर दलील क़ायम होने के बाद) अल्लाह के साथ किसी और माबूद की भी इबादत करे कि (जिसके माबूद होने पर) उसके पास कोई भी दलील नहीं, सो उसका हिसाब उसी के रब के पास होगा।

ख़ासियत—जिस शख़्स पर आसेब हो, इन आयतों को तीन बार पानी पर पढ़ कर मुंह पर छींटा दे या कान में दम करे, इन्शा-अल्लाहु तआला फ़ौरन दूर हो जाएगा।

२. पूरी सूरः जिन्न (पारा २६, रुकूअ ११)

ख़ासियत—जिस पर आसेब आता हो, उस पर एक बार पढ़ कर दम करे या लिख कर बाज़ू पर बांध दे, इन्शाअल्लाहु तआला जाता रहेगा।

३. ये ३३ आयतें दरिंदे, और चोर से हिफ़ाज़त, आसेब दूर करने और जान व माल की बेहतरी के लिए और कोढ़ और दूसरे

मर्ज़ों के लिए अक्सीर आज़म हैं। 'आयातुल हर्स' इनका लक़ब है। वे यह हैं—

शुरू सूरः बक़रः से मुफ़्लिहून तक (पारा १, रुकूअ १)

आयतल कुर्सी—अल्लाहु ला इला ह से ख़ालिदून तक। (पारा ३, रुकूअ ३)

और नीचे की आयतें—पारा ३, रुकूअ ८, पारा ८, रुकूअ १४, पारा १५, रुकूअ १२, पारा २३, रुकूअ ५, पारा २७, रुकूअ १२, पारा २८, रुकूअ ६, पारा २६, रुकूअ ११, पारा १, रुकूअ २

لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَاِنْ تُبْدُوْا مَا فِيْٓ
اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ ۚ فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ
عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۚ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ
وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۚ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۚ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا
غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ۝ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا
مَا اكْتَسَبَتْ ۚ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا
حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا
وَاغْفِرْ لَنَا ۚ وَارْحَمْنَا ۚ اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝ (پ ۳ ر ۸)

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى
عَلَى الْعَرْشِ ۚ يُغْشِي الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا ۙ وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍ
بِاَمْرِهٖ ۚ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ ۚ تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا
وَّخُفْيَةً ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ۝ وَلَا تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ
خَوْفًا وَّطَمَعًا ۚ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ (پ ۸ ر ۱۴)

قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ۚ اَيًّا مَّا تَدْعُوْا فَلَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى
وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ۝ وَقُلِ الْحَمْدُ
لِلّٰهِ الَّذِيْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ
وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا ۝ (پ ۱۵ ر ۱۲)

وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ۝ فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ۝ فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا ۝ اِنَّ
اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ۝ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ۝
اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِزِيْنَةِ ۨالْكَوَاكِبِ ۝ وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ ۝ لَا
يَسَّمَّعُوْنَ اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى وَيُقْذَفُوْنَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ۝ دُحُوْرًا وَّلَهُمْ
عَذَابٌ وَّاصِبٌ ۝ اِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ۝ فَاسْتَفْتِهِمْ
اَهُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمْ مَّنْ خَلَقْنَا ۭ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ طِيْنٍ لَّازِبٍ ۝ (پ ۲۳ ر ۵)

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ فَانْفُذُوْا ۭ لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ يُرْسَلُ
عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ ۙ وَّنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرٰنِ ۝ (پ ۲۷ ر ۱۲)

لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ
اللّٰهِ ۭ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ۝ هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ۝ هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ۭ
سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۭ
يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ (پ ۲۸ ر ۶)

قُلْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْٓا اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا ۝ يَّهْدِيْٓ
اِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ ۭ وَلَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ اَحَدًا ۝ وَّاَنَّهٗ تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ

[illegible] صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ۝ وَّاَنَّهٗ كَانَ يَقُوْلُ سَفِيْهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا (پ ٢٩)

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ بِالْهُدٰى فَمَا رَبِحَتْ تِّجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ۝ مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِى اسْتَوْقَدَ نَارًا فَلَمَّآ اَضَآءَتْ مَا حَوْلَهٗ ذَهَبَ اللّٰهُ بِنُوْرِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِىْ ظُلُمٰتٍ لَّا يُبْصِرُوْنَ ۝ صُمٌّ بُكْمٌ عُمْىٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ۝ اَوْ كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَآءِ فِيْهِ ظُلُمٰتٌ وَّرَعْدٌ وَّبَرْقٌ يَجْعَلُوْنَ اَصَابِعَهُمْ فِىْ اٰذَانِهِمْ مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ وَاللّٰهُ مُحِيْطٌ بِالْكٰفِرِيْنَ ۝ يَكَادُ الْبَرْقُ يَخْطَفُ اَبْصَارَهُمْ كُلَّمَآ اَضَآءَ لَهُمْ مَّشَوْا فِيْهِ وَاِذَآ اَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوْا (پ ١، [illegible])

खासियत—जिस दुश्मन को शरीअत के एतबार से तक्लीफ़ पहुंचाना जायज़ हो, तो उसके बदन का एक कपड़ा लेकर उस पर उसकी मां का नाम सात बार लिखा जाए और उसके चारों तरफ़ एक दायरा खींच दिया जाए और उस पर ये आयतें लिख दी जाएं और उस पर एक दायरा खींच दिया जाए। इस तरह तीन दायरे बनाए जाएं, फिर उस कपड़े को लपेट कर मिट्टी के किसी कोरे बर्तन में रख कर हफ़्ते के दिन उसके घर में ऐसी जगह दफ़्न कर दिया जाए कि उस जगह किसी का पांव न आए।

८. आसेब व जिन्न भगाने के आमाल

१. पाक पानी पर फ़ातिहा और आयतल कुर्सी और सूरः जिन्न के शुरू की पांच आयतें पढ़ कर आसेब के मारे हुए के चेहरे पर छिड़क दें और जिस मकान में शुब्हा हो, उसमें छिड़क दें, इन्शाअल्लाहु तआला आसेब दूर हो।

२. पाक बर्तन पर फ़ातिहा और आयत—

ثُمَّ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ الْغَمِّ

اَمَنَةً نُّعَاسًا يَّغْشٰى طَآئِفَةً مِّنْكُمْ وَطَآئِفَةٌ قَدْ اَهَمَّتْهُمْ اَنْفُسُهُمْ يَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ يَقُوْلُوْنَ هَلْ لَّنَا مِنَ الْاَمْرِ مِنْ شَىْءٍ قُلْ اِنَّ الْاَمْرَ كُلَّهٗ لِلّٰهِ يُخْفُوْنَ فِىْٓ اَنْفُسِهِمْ مَّا لَا يُبْدُوْنَ لَكَ يَقُوْلُوْنَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْاَمْرِ شَىْءٌ مَّا قُتِلْنَا هٰهُنَا قُلْ لَّوْ كُنْتُمْ فِىْ بُيُوْتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِيْنَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ اِلٰى مَضَاجِعِهِمْ وَلِيَبْتَلِىَ اللّٰهُ مَا فِىْ صُدُوْرِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا فِىْ قُلُوْبِكُمْ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗٓ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا سِيْمَاهُمْ فِىْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِى التَّوْرٰىةِ وَمَثَلُهُمْ فِى الْاِنْجِيْلِ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْـَٔهٗ فَاٰزَرَهٗ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰى عَلٰى سُوْقِهٖ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ۝

सुम म अन्ज़ ल अलै कुम……मिन्हुम मग़फ़िरतंव व अज्रन अज़ीमा० लिख कर रोग़न कबखद से धोकर आसेब के शिकार के बदन पर इस रोग़न की मालिश की जाए। इन्शाअल्लाहु तआला असर न हो।

३. इमाम ग़ज़ाली ने एक बुज़ुर्ग का क़िस्सा नक़ल किया है कि किसी बुज़ुर्ग की एक लौंडी रात को पेशाब करने बैठी और आसेब के असर से बेहोश हो गयी। उन बुज़ुर्ग ने उठकर ये कलिमात पढ़े, उसी वक़्त अच्छी हो गई—

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ الٓمّٓصٓ طٰهٰ طٰسٓمّٓ كٓهٰيٰعٓصٓ
يٰسٓ وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ حٰمٓ عٓسٓقٓ نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ ۝

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० अलिफ़-लाम-मीम-स्वाद० त्वा-हा० त्वा-सीम-मीम० का-हा-या-ऐन-स्वाद० या-सीन० वल् क़ुरआनिल

हकीमि० हा-मीम० ऐन-सीन-क़ाफ़० क़ाफ़० नून० वल क़ लमि व मा यस्तुरून०

४. फ़क़ीह कबीर अहमद बिन मूसा बिन अबी उजैल आसेब के शिकार पर यह आयत पढ़ा करते थे—

قُلْ آللّٰهُ أَذِنَ لَكُمْ أَمْ عَلَى اللّٰهِ تَفْتَرُونَ۝

क़ुल आल्लाहु अज़ि न लकुम अम अलल्लाहि तफ़्तरून०

इलाज—कुछ बुज़ुर्गों से नक़ल है कि एक लड़की खेलते-खेलते गिर गयी। उन्होंने ख़्वाब में देखा कि एक फ़रिश्ता बहुत अच्छी सूरत में आया। उसके दस बाज़ू हैं और कहा कि अल्लाह की किताब में इसकी शिफ़ा है। मैंने पूछा, क्या है, कहा कि ये आयतें उस पर पढ़ दी—

قُلْ آللّٰهُ أَذِنَ لَكُمْ أَمْ عَلَى اللّٰهِ تَفْتَرُونَ۝ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّن نَّارٍ وَّ
نُحَاسٌ فَلَا تَنتَصِرَانِ۝ يَا مَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ إِنِ اسْتَطَعْتُمْ أَن تَنفُذُوا مِنْ
أَقْطَارِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ فَانفُذُوا لَا تَنفُذُونَ إِلَّا بِسُلْطَانٍ۝ قَالَ اخْسَئُوا
فِيهَا وَلَا تُكَلِّمُونِ۝

क़ुल आल्लाहु अज़ि न लकुम अम अलल्लाहि तफ़्तरून० युर्सलु अलैकुमा शुवाज़ुम मिन नारिंव व नुहासु न फ़ ला तन्तसिरान० या मअ्शरल जिन्नि वल इन्सि इनिस्ततअ्तुम अन् तन्फ़ुज़ू मिन अक़्तारिस्समावाति वल अर्ज़ि फ़न्फ़ुज़ू ला तन्फ़ुज़ू न इल्ला बिसुल्तान० क़ालख़्सऊ फ़ी हा वला तुकल्लिमून०

कहते हैं कि जाग कर मैंने यह अमल किया, बिल्कुल उसका असर न रहा।

५. जिन्न भगाने के लिए—इब्ने क़ुतैबा रज़ि० से नक़ल किया गया है कि किसी शख़्स ने उनसे बयान किया कि मैं बसरा ख़ुरमा की तिजारत करने गया। किराए पर कोई घर न मिला, सिर्फ़ एक घर मिला, जिस पर मकड़ी ने जाले लगा रखे थे। मैंने इसकी वजह पूछी। लोगों ने कहा कि इसमें जिन्न रहता है। मैंने मालिक से किराए पर मांगा। उसने कहा कि क्यों अपनी जान खोते हो, उसमें बड़ा भारी जिन्न है। जो शख़्स इसमें रहता है, उसको मार डालता है। मैंने कहा, मुझको किराए पर दे दो, अल्लाह तआला मददगार है। उसने दे दिया। मैं उसमें ठहर गया। जब रात हुई। मेरी तरफ़ एक शख़्स काले रंग का आया, जिसकी आंखें अंगारों की तरह चमक रही थीं। मैंने आयतल कुर्सी पढ़ना शुरू की, वह भी बराबर पढ़ता रहा, जब मैं—

وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ

व ला यऊदुहू हिफ़्ज़ुहुमा व हु वल अली युल अज़ीम० पर पहुंचा, वह न कह सका। मैंने उसी को कहना शुरू किया, बस वह अंधेरा जाता रहा और रात भर आराम से रहा। जब सुबह हुई, उस जगह निशान जलने का और कुछ राख देखी और एक कहने वाले की आवाज़ सुनी कि तू ने बड़े भारी जिन्न को जलाया। मैंने पूछा, किस चीज़ से जल गया, जवाब दिया कि इस कलमे से—

وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ۝

व ला यऊदुहू हिफ़्ज़ुहुमा व हुवल अलीयुल अज़ीम०

६. इलाज—इब्ने क़ुतैबा रज़ि० से नक़ल किया गया है कि एक मिस्री ने मुझ से बयान किया कि मैं किसी अरब के पास उतरा। उसने मेरी ख़ातिर की। जब वह बिस्तर पर लेटा, यकायकी चीख़ कर खड़ा हो गया और बे-होश होकर गिर गया। मालूम हुआ, जब सोने को पड़ता है, यही हाल होता है। मैंने ये आयतें पढ़ीं—

إِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ
اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُغْشِي اللَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهُ حَثِيثًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ
وَالنُّجُومَ مُسَخَّرَاتٍ بِأَمْرِهِ ۗ أَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ ۗ تَبَارَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ۝

इन्नरब्बकुमुल्लाहुल्लजी ख ल क़स्समावाति वल् अर्ज़ फ़ी सि त्ति अय्या मिन सुम्मस्तवा अल ल अर्शि युग़शिल्लैलन्नहार यत्लुबुहू हसी संव्वश्शम्स वल् क़ म र व न्नुजू म मुसख़्ख़रातिम बिअ म्रिहीं अ ला लहुल ख़ल्कु वल अम्रु त बा र कल्लाहु रब्बुल आल मीन०

फिर कभी उस पर असर न हुआ।

७. घर से जिन्न भगाने के लिए—

إنهم يكيدون كيدا وأكيد كيدا ۝ فمهل الكافرين أمهلهم رويدا ۝

इन्नहुम यकीदू न कैदंव व अकीदु कैदा० फ़ महिहलिल काफ़िरी न अम्हिल हुम रुवैदा०

चार लोहे की कीलें ले, हर कील पर पचीस-पचीस बार पढ़ कर उनको घर के चारों कोनों में दफ़्न कर दे।

८. इमाम औज़ाई से नक़ल किया गया है कि एक भूत मेरे सामने आ गया, मैं डरा और أعوذ بالله من الشيطان الرجيم ۝ अऊज़ुबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम० पढ़ा। वह बोला कि तूने बड़े की पनाह मांगी, यह कह कर वह हट गया।

९. बुरी नज़र

وإن يكاد الذين كفروا ليزلقونك بأبصارهم لما سمعوا الذكر ويقولون
إنه لمجنون ۝ وما هو إلا ذكر للعالمين ۝ (पारा २९)

१. व इंय्य कादुल्लज़ी न क फ़रू ल युज़्लिक़ू न क बिअब्सारि हिम लम्मा समिउज़्ज़िक र व इन्नहू ल मजनून व मा हु व इल्ला ज़ि क रुल लिल आल मीन० —पारा २९, रुकूअ १

तर्जुमा—और ये काफ़िर जब क़ुरआन सुनते हैं तो (अदावत की ज़्यादती से) ऐसे मालूम होते हैं कि गोया आपको अपनी निगाहों से फिसला कर गिरा देंगे (यह एक मुहावरा है) और (इसी अदावत से आपके बारे में) कहते हैं कि यह मजनूं है, हालांकि यह क़ुरआन (जिसके साथ तकल्लुम फ़रमाते हैं) तमाम दुनिया के वास्ते नसीहत है।

ख़ासियत—हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया है कि बुरी नज़र के लिए फ़ायदेमंद है—

يا بني آدم خذوا زينتكم عند كل مسجد وكلوا واشربوا ولا تسرفوا
إنه لا يحب المسرفين ۝ قل من حرم زينة الله التي أخرج لعباده والطيبات
من الرزق ۝ قل هي للذين آمنوا في الحياة الدنيا خالصة يوم القيامة كذلك
نفصل الآيات لقوم يعلمون ۝ قل إنما حرم ربي الفواحش ما ظهر منها
وما بطن والإثم والبغي بغير الحق وأن تشركوا بالله ما لم ينزل به سلطانا
وأن تقولوا على الله ما لا تعلمون ۝ (پاره ٨ ركوع ١١)

१. या बनी आ द म ख़ुज़ू ज़ी न त कुम……मा ला तअ्लमू न०

—पारा ८, रुकूअ ११

तर्जुमा—ऐ आदम की औलाद! तुम मस्जिद की हाज़िरी के वक़्त अपना लिबास पहन लिया करो और ख़ूब खाओ और पियो और हद से मत निकलो, बेशक अल्लाह तआला पसन्द नहीं करते हद से निकल जाने वालों को। आप फ़रमाइए कि अल्लाह तआला के पैदा किए हुए कपड़ों को, जिनको उसने अपने बन्दों के वास्ते बनाया है और खाने-पीने की हलाल चीज़ों को किस शख़्स ने हराम किया है। आप यह कह दीजिए कि ये चीज़ें इस तौर पर कि क़ियामत के दिन भी ख़ालिस रहें, दुनिया की ज़िंदगी में ख़ास ईमान वालों ही के लिए हैं। हम इसी तरह तमाम आयतों को समझदारों के वास्ते साफ़-साफ़ बयान किया करते हैं। आप फ़रमाइए कि अलबत्ता मेरे रब ने हराम किया है तमाम फ़ह्श बातों को, उनमें जो एलानिया हैं वे भी और उनमें जो छिपी हैं, वे भी और हर गुनाह की बात

को और ना-हक़ किसी पर ज़ुल्म करने को और इस बात को कि तुम अल्लाह तआला के साथ किसी ऐसी चीज़ को शरीक ठहराओ, जिस की अल्लाह ने कोई सनद नाज़िल नहीं फ़रमायी और इस बात को कि तुम लोग अल्लाह तआला के ज़िम्मे ऐसी बात लगा दो, जिसकी तुम सनद न रखो।

ख़ासियत—यह आयत ज़हर व बुरी नज़र व जादू के दूर करने के लिए फ़ायदेमंद है, जो शख़्स इसको हरे अंगूर के अर्क़ और ज़ाफ़रान से लिख कर ओले के पानी से धोकर ग़ुस्ल करे, बुरी नज़र और जादू इससे दूर हो और जो खाने में मिला कर खाए तो ज़हर से अम्न में रहे और जादू और बुरी नज़र से भी।

४. सूरः हु म ज़: (पारा ३०)

ख़ासियत—जिसको बुरी नज़र लग गयी हो, उस पर दम किया जाए। इन्शाअल्लाह आराम होगा।

१०. अक़्ल व अम्वाल के लिए

१. **अबू जाफ़र** नह्हास ने हदीस नक़ल की है कि आयतल कुर्सी **और सूरः आराफ़ की तीन आयतें**—

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُغْشِي اللَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهُ حَثِيثًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُومَ مُسَخَّرَاتٍ بِأَمْرِهِ أَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ تَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝ ادْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ۝ وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا وَادْعُوهُ خَوْفًا وَطَمَعًا إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ قَرِيبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِينَ ۝

इन्न रब्बु कुमुल्लाहु…क़रीबुम मिनल मुह्सिनीन ०
(पारा ८, रुकूअ १४)

और

وَالصَّافَّاتِ صَفًّا ۝ فَالزَّاجِرَاتِ زَجْرًا ۝ فَالتَّالِيَاتِ ذِكْرًا ۝ إِنَّ إِلَٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ۝ رَّبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ۝ إِنَّا زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِزِينَةٍ الْكَوَاكِبِ ۝ وَحِفْظًا مِّن كُلِّ شَيْطَانٍ مَّارِدٍ ۝ لَّا يَسَّمَّعُونَ إِلَى الْمَلَإِ الْأَعْلَىٰ وَيُقْذَفُونَ مِن كُلِّ جَانِبٍ ۝ دُحُورًا وَلَهُمْ عَذَابٌ وَاصِبٌ ۝ إِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَأَتْبَعَهُ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ۝

वस्साफ़्फ़ाति सफ़्फ़न…शहाबुन साक़िब० (पारा २३, रुकूअ ५)

और सूरः रहमान की आयतें—

سَنَفْرُغُ لَكُمْ أَيُّهَ الثَّقَلَانِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ يَا مَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ إِنِ اسْتَطَعْتُمْ أَن تَنفُذُوا مِنْ أَقْطَارِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ فَانفُذُوا لَا تَنفُذُونَ إِلَّا بِسُلْطَانٍ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّن نَّارٍ وَنُحَاسٌ فَلَا تَنتَصِرَانِ ۝

स नफ़रुग़ु लकुम…फ़ला त न्तसिरान० (पारा २७, रुकूअ १२)

ख़वास—ये सब आयतें अगर कोई शख़्स दिन में पढ़े तो तमाम दिन और अगर रात को पढ़े तो तमाम रात सरकश शैतान और नुक़्सान पहुंचाने वाले जादूगर और ज़ालिम हाकिम और तमाम चोरों और दरिंदों से महफ़ूज़ रहेगा।

२. सूरः तबारक (पारा २९)

ख़वास—अगर चांद देखने के वक़्त पढ़ ले तो तमाम महीना ख़ैरियत से गुज़रे और मुसीबतों से बचा रहे।

११. दुश्मनों से बचाव और उनकी तबाही

وَأَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ

१. व अल्क़ैना बैनहुमुल आदाव त वल बग़ज़ा अ इला यौमिल क़ियामति०
—पारा ६, रुकूअ १३

तर्जुमा—और हमने उनमें आपस में अदावत और दुश्मनी डाल दी।

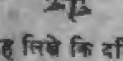

ख़ासियत—अगर दो आदमियों में फ़र्क़ व अदावत डालना चाहे तो इस आयत को भोज-पत्र पर लिख कर उसके नीचे यह नक़्श लिखे—

और इस नक़्श के नीचे यह लिखे कि दर्मियान फ़्लां-फ़्लां के फ़र्क़ हो जाए। फ़्लां-फ़्लां की जगह दोनों का नाम लिखे और तावीज़ बना कर दर्मियान को पुरानी क़ब्रों के दफ़न कर दे, मगर ना-हक़ के लिए न करे, वरना गुनाहगार होगा।

१२. ख़ौफ़ व डर दूर करने के लिए

فَاللّٰهُ خَيْرٌ حٰفِظًا وَّهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ

१. फ़ल्लाहु ख़ैरुन हाफ़िज़व हु व अर्हमुर्राहिमीन०

—पारा ४, रुकूअ २

तर्जुमा—अल्लाह (के सुपुर्द, वही) सबसे बढ़ कर निगहबान है और वह सब मेहरबानों से ज़्यादा मेहरबान है।

ख़ासियत—जिसको किसी दुश्मन का ख़ौफ़ हो या और किसी तरह की बला व मुसीबत का डर हो, वह ज़्यादा से ज़्यादा इसको पढ़ा करे। इन्शाअल्लाहु तआला मुश्किल दूर हो जाएगी।

१३. बहस में ग़ालिब आना

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمْ بُرْهَانٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَاَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكُمْ نُوْرًا مُّبِيْنًا ۝
فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَاعْتَصَمُوْا بِهٖ فَسَيُدْخِلُهُمْ فِيْ رَحْمَةٍ مِّنْهُ وَفَضْلٍ

وَّيَهْدِيْهِمْ اِلَيْهِ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا

१. या ऐयुहन्नासु क़द जा अ कुम बुर्हानुम मिर्रब्बिकुम व अन्ज़ल्ना इलैकुम नूरम मुबीना० फ़ अम्मल्लज़ी न आ म नू बिल्लाहि वअ्त स मू बिही फ़ स युदख़िलुहुम फ़ी रहमतिम मिन्हु व फ़ज़्लिव व य हदीहिम इलैहि सिरातम मुस्तक़ीमा० —पारा ६, रुकूअ ४

तर्जुमा—ऐ (तमाम) लोगो! यक़ीनन तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से एक (काफ़ी) दलील आ चुकी है और हमने तुम्हारे पास एक साफ़ नूर भेजा है, सो जो लोग अल्लाह पर ईमान लाए और उन्होंने अल्लाह (के दीन) को मज़बूत पकड़ा, सो ऐसों को अल्लाह तआला अपनी रहमत (यानी जन्नत में) दाख़िल करेंगे और अपने फ़ज़्ल में और अपने तक (पहुंचने का) उन को सीधा रास्ता बतलाएंगे।

ख़ासियत—दुश्मन पर बहस में ग़ालिब आने के लिए इतवार के दिन रोज़ा रखे और एक चमड़े के टुकड़े पर लिख कर बांध ले।

१४. जान की हिफ़ाज़त

اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ

इन्ना नह्नु नज़्ज़लनज़्ज़िक र व इन्ना लहू ल हाफ़िज़ून०

—पारा १४, रुकूअ ६

तर्जुमा—हमने क़ुरआन को नाज़िल किया है और हम उस की हिफ़ाज़त करने वाले और निगहबान हैं।

ख़ासियत—चांदी के मुलम्मा के पत्तर पर इसको लिख कर, जुमा की रात को यह आयत चालीस बार उस पर पढ़े, फिर उसको

अंगूठी के नग के नीचे रख कर वह अंगूठी पहन ले, उसका माल व जान और सब हालात हिफ़ाज़त से रहें।

१९. दुश्मन से मुक़ाबला

१. आयाते हिज़्बे चहल क़ाफ़—

ألم تر إلى الملإ من بني إسرائيل من بعد موسى
إذ قالوا لنبي لهم ابعث لنا ملكا نقاتل في سبيل الله قال هل عسيتم إن كتب
عليكم القتال ألا تقاتلوا قالوا وما لنا ألا نقاتل في سبيل الله وقد أخرجنا من ديارنا و
أبنائنا فلما كتب عليهم القتال تولوا إلا قليلا منهم والله عليم بالظالمين (٢٤٦)

अल म त र…अलीमुम बिज़्ज़ालिमीन० —पारा २, रुकूअ १६

لقد سمع الله قول الذين قالوا إن الله فقير ونحن أغنياء سنكتب
ما قالوا وقتلهم الأنبياء بغير حق ونقول ذوقوا عذاب الحريق (١٨١)

लक़द समिअल्लाहु…अज़ाबल हरीक़ —पारा ४, रुकूअ १०

ألم تر إلى الذين قيل لهم كفوا أيديكم وأقيموا الصلاة
وآتوا الزكاة فلما كتب عليهم القتال إذا فريق منهم يخشون الناس كخشية الله
أو أشد خشية وقالوا ربنا لم كتبت علينا القتال لولا أخرتنا إلى أجل قريب
قل متاع الدنيا قليل والآخرة خير لمن اتقى ولا تظلمون فتيلا (٧٧)

अ लम त र…तुज़्लमून फ़तीला० —पारा ५, रुकूअ ८

واتل عليهم نبأ ابني آدم بالحق إذ قربا قربانا فتقبل من أحدهما ولم يتقبل
من الآخر قال لأقتلنك قال إنما يتقبل الله من المتقين (٢٧)

वत्लु अलैहिम…मिनल मुत्तक़ीन० —पारा ६, रुकूअ ९

ख़ासियत—इनकी ख़ासियत फ़त्ह, दर्जा भी, ग़ल्बा, दुश्मनों के मुक़ाबले में है। अगर परचम पर लिख लिया जाए, तो मुक़ाबले में कभी हार न हो और दुश्मनों पर जीत व कामियाबी हो और अगर काग़ज़ में लिख कर, सर में रख कर सरदारों और हाकिमों के पास जाए तो उसकी इज़्ज़त उनकी आंखों में पैदा हो जाए।

لن يضروكم إلا أذى وإن يقاتلوكم يولوكم الأدبار ثم لا ينصرون
ضربت عليهم الذلة أين ما ثقفوا إلا بحبل من الله وحبل من
الناس وباءوا بغضب من الله وضربت عليهم المسكنة ذلك بأنهم كانوا
يكفرون بآيات الله ويقتلون الأنبياء بغير حق ذلك بما عصوا وكانوا
يعتدون (١١٢)

२. लंय्यज़ुर्रूकुम…कानू यअ़तदून० —पारा ४, रुकूअ ३

तर्जुमा—वे तुमको हरगिज़ कोई नुक़सान न पहुंचा सकेंगे, मगर ज़रा थोड़ी सी तकलीफ़ और अगर वे तुम से लड़ें, तो तुमको पीठ दिखा कर भाग जाएंगे, फिर किसी की तरफ़ से उनकी हिमायत भी न की जाएगी। जमा दी गयी है उन पर बे-क़द्री, जहां कहीं भी पाये जाएंगे, मगर हां, एक तो ऐसे ज़रिए की वजह से, जो अल्लाह की तरफ़ से है और एक ऐसे ज़रिए से जो आदमियों की तरफ़ से है और मुस्तहिक़ हो गये (ये लोग) अल्लाह के ग़ज़ब के और जमा दी गयी उन पर पस्ती। यह (ज़िल्लत व ग़ज़ब) इस वजह से हुआ कि वे लोग इंकारी हो जाते थे अल्लाह के हुक्मों के और क़त्ल कर दिया करते थे पैग़म्बरों को ना-हक़ और यह इस वजह से हुआ कि इन लोगों ने इताअत न की और (इताअत) के दायरे से निकल जाते थे।

ख़ासियत—ये आयतें दुश्मन पर जीत हासिल करने के लिए हैं, किसी हथियार पर इतवार के दिन छठी साअत में इसको खोदे और खोदने वाला रोज़े से हो, वह हथियार लेकर जो शख़्स दुश्मन के मुक़ाबले में आए, जीते।

إِذْ هَمَّتْ طَّائِفَتَانِ مِنكُمْ أَن تَفْشَلَا وَاللَّهُ وَلِيُّهُمَا ۗ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ○ وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرٍ وَأَنتُمْ أَذِلَّةٌ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ○ إِذْ تَقُولُ لِلْمُؤْمِنِينَ أَلَن يَكْفِيَكُمْ أَن يُمِدَّكُمْ رَبُّكُم بِثَلَاثَةِ آلَافٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ مُنزَلِينَ ○ بَلَىٰ ۚ إِن تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا وَيَأْتُوكُم مِّن فَوْرِهِمْ هَٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُم بِخَمْسَةِ آلَافٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ مُسَوِّمِينَ ○ وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ لَكُمْ وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوبُكُم بِهِ ۗ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِندِ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ○

३. इज़ हम्मत ताइफ़तानि मिन्कुम ··· अिन्दिल्लाहिल अज़ीज़िल हकीम०

—पारा ४, रुकूअ ४

तर्जुमा—जब तुम में से दो जमाअतों (बनी सलमा व बनी हारिसा) ने दिल में ख्याल किया कि हिम्मत हार दें और अल्लाह तआला इन दोनों जमाअतों का मददगार था और पस। मुसलमानों को तो अल्लाह तआला पर एतमाद करना चाहिए और यह बात यक़ीनी है कि अल्लाह तआला ने तुम्हारी (बद्र की लड़ाई में) मदद फ़रमायी, हालांकि तुम बे सर व सामान थे, सो अल्लाह तआला से डरते रहा करो ताकि तुम शुक्र गुज़ार हो। (यह मदद) उस वक़्त हुई जब कि आप मुसलमानों से यों फ़रमा रहे थे कि क्या तुमको यह बात काफ़ी न होगी कि तुम्हारा रब तुम्हारी मदद करे, तीन हज़ार फ़रिश्तों के साथ, (जो आसमान से) उतारे जाएंगे। हां, क्यों नहीं (काफ़ी होगा।) अगर मुस्तक़िल रहोगे और (अगर) वे तुम पर एकदम से भी आएंगे तो तुम्हारा रब तुम्हारी मदद फ़रमाएगा पांच हज़ार फ़रिश्तों से जो कि एक ख़ास ढंग बनाये होंगे और अल्लाह तआला ने यह मदद सिर्फ़ इस लिए की कि तुम्हारे लिए (ग़लबे) की ख़ुशख़बरी है और ताकि तुम्हारे दिलों को (बेचैनी से) चैन हो जाए और मदद सिर्फ़ अल्लाह ही की तरफ़ से है जो कि ज़बरदस्त है, हकीम भी है।

ख़ासियत—ये आयतें ज़ालिम बादशाह व दुश्मन और रात के वक़्त जिन्न या इंसान के डर के लिए हैं, इसको जुमा की रात में, आधी रात के वक़्त वुज़ू करके लिखे, फिर लिखने वाला सुबह की नमाज़ पढ़ के सूरज निकलने तक तस्बीह व ज़िक्र में लगा बैठा रहे। जब सूरज ऊपर चढ़ जाए, तो दो रक्अत पढ़े, पहली में सूरः फ़ातिहा और आयतल कुर्सी और दूसरी में फ़ातिहा और 'आ म नर्रसूलु' से आख़िर सूरः तक पढ़े, फिर सात बार इस्तग़्फ़ार पढ़े और सात बार—

حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۖ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ

हस्बियल्लाहु ला इला ह इल्ला हु व अलैहि तवक्कल्तु व हु व रब्बुल अर्शिल अज़ीम०

पढ़े, फिर ताज़ा वुज़ू करके ये आयतें लिख कर अपने पास रख ले, इन्शाअल्लाहु तआला मुराद हासिल हो।

الَّذِينَ يُنفِقُونَ فِي السَّرَّاءِ وَالضَّرَّاءِ وَالْكَاظِمِينَ الْغَيْظَ وَالْعَافِينَ عَنِ النَّاسِ ۗ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ○ وَالَّذِينَ إِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً أَوْ ظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللَّهَ فَاسْتَغْفَرُوا لِذُنُوبِهِمْ وَمَن يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا اللَّهُ وَلَمْ يُصِرُّوا عَلَىٰ مَا فَعَلُوا وَهُمْ يَعْلَمُونَ ○ أُولَٰئِكَ جَزَاؤُهُم مَّغْفِرَةٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَجَنَّاتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَنِعْمَ أَجْرُ الْعَامِلِينَ ○

४. अल्लज़ी न युन्फ़िक़ू न ··· व निअ म अज्रुल आमिलीन०

—पारा ४, रुकूअ ५

तर्जुमा—जो लोग कि ख़र्च करते हैं फ़राख़ी में और तंगी में (भी) और ग़ुस्से के ज़ब्त करने वाले और लोगों की (ख़ताओं) से

दर गुज़र करने वाले और अल्लाह तआला ऐसे नेक लोगों को महबूब रखता है और (कुछ) ऐसे लोग कि जब कोई ऐसा काम कर गुज़रते हैं, जिसमें ज़्यादती हो या अपनी ज़ात पर नुक़्सान उठाते हैं तो (तुरन्त) अल्लाह तआला को याद कर लेते हैं, फिर अपने गुनाहों की माफ़ी चाहने लगते हैं। और अल्लाह तआला के सिवा और है कौन जो गुनाहों को बख़्शता हो और वे लोग अपने बुरे (काम) पर इस्रार और (हठ) नहीं करते और वे जानते हैं उन लोगों का बदला बख़्शिश है उनके रब की तरफ़ से और (बहिश्त के) ऐसे बाग़ हैं कि उनके नीचे नहरें चलती होंगी। ये हमेशा (हमेशा) इन ही में रहेंगे और यह अच्छा हक़्क़ुल ख़िदमत (सेवा करने का बदला) है इन काम करने वालों का।

ख़ासियत—ये आयतें सुकून, नफ़्स व ग़ज़ब की तेज़ी और जाबिर सुल्तान व जाहिल दुश्मन के लिए हैं। जुमा की रात में इशा की नमाज़ के बाद काग़ज़ पर लिख कर बांध ले और सुबह को उन लोगों के पास जाए। इन्शाअल्लाहु तआला उनकी बुराई से बचा रहेगा।

५. सूरः हूद (पारा ११, रुकूअ १२)

ख़ासियत—हिरन की झिल्ली पर लिख कर जो आदमी अपने पास रखे, उसको ताक़त व मदद मिले। अगर सौ आदमियों से भी मुक़ाबला हो, सब पर हैबत ग़ालिब हो जाए और उसके ख़िलाफ़ कोई बात उससे न कर सके और अगर उसको ज़ाफ़रान से लिख कर तीन दिन सुबह व शाम पी ले, दिल मज़बूत हो जाए और किसी के मुक़ाबले में उसको डर न हो।

إِنَّا جَعَلْنَا فِي أَعْنَاقِهِمْ أَغْلَالًا فَهِيَ إِلَى الْأَذْقَانِ فَهُمْ مُقْمَحُونَ وَجَعَلْنَا
مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَأَغْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ

([illegible])

६. इन्ना जअल्ना फ़ी अअ्नाक़िहिम अग़्लालन फ़हि य इलल् अज़्क़ानि फ़हुम मुक़्महून० व जअल्ना मिम बैनि ऐदीहिम सद्दंव व मिन ख़ल्फ़िहिम सद्दन फ़ अग़्शैनाहुम फ़ हुम ला युब्सिरून०

—पारा २२, ६ [illegible] १८

तर्जुमा—हमने उनकी गरदनों में तौक़ डाल दिए, फिर वे ठोढ़ियों तक (अड़ गये) हैं, जिससे उनके सर ऊपर उलल गये और हमने एक आड़ उनके सामने कर दी और एक आड़ उनके पीछे कर दी, जिससे हमने (हर तरफ़ से) उनको परदों से घेर दिया, सो वे नहीं देख सकते।

ख़ासियत—अगर ढाल पर लिख कर दीन के दुश्मनों का मुक़ाबला करे तो ग़ालिब आए।

७. सूरः नाज़िआत (पारा ३०)

ख़ासियत—दुश्मन के मुक़ाबले के वक़्त पढ़ने से उसके नुक़्सान से बचा रहे।

८. सूरः फ़ील (पारा ३०)

ख़ासियत—दुश्मन से मुक़ाबला करते वक़्त उसको पढ़ा जाए, इन्शाअल्लाहु तआला ग़लबा हासिल हो।

९. आयतुल कुर्सी

ख़ासियत—अगर दुश्मन के मुक़ाबले के वक़्त ३१३ बार पढ़े तो ग़लबा हासिल हो।

१०. सूरः त्वाहा

ख़ासियत—अगर सुबह के वक़्त पढ़े, तो लोगों के दिल क़ाबू में आएं और दुश्मनों पर ग़लबा हासिल हो।

سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّونَ الدُّبُرَ

११. स युहज़मुल जम्अु व युवल्लूनद्दुबुर०

खासियत—मिट्टी पर पढ़ कर दुश्मन की तरफ़ फेंकने से उसे हार हो।

१२. सूरः इन्ना अअ्तै नाकल कौसर

खासियत—तंहाई में तीन सौ बार पढ़ने से दुश्मनों पर गलबा हासिल हो।

१३. इज़ा ज़ुल्ज़िलत

आलिमों में से एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि एक जगह लड़ाई हो रही थी, मैंने सूरः 'इज़ा ज़ुलज़िलत' पढ़ कर, ज़मीन पर हाथ मार कर उस तरफ़ को मिट्टी फेंक दी, फिर सर पर हाथ रख कर ये आयतें पढ़ीं—

فَاضْرِبْ لَهُمْ طَرِيقًا فِي الْبَحْرِ يَبَسًا لَّا تَخَافُ دَرَكًا وَلَا تَخْشَىٰ
وَجَعَلْنَا مِن بَيْنِ أَيْدِيهِمْ سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَأَغْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ

फज़रिब लहुम तरी क़न फ़िल बह़्रि य ब सल्ला तख़ाफ़ु द र कंव ला तख़्शा व जअ़ल्ना मिम बैनि ऐदीहिम सद्दंव मिन ख़ल्फ़िहिम सद्दन फ़ अग़्शैनाहुम फ़हुम ला युब्सिरून०

क़सम खाकर कहते हैं कि यह अमल करके एक पेड़ के नीचे बैठा रहा, मुख़ालिफ़ लोग वहां पहुंच कर कहने लगे कि अभी तो वह शख़्स यहां था, कहां गया और उनको नज़र न आए।

१ . काफ़िरों को हराने का अमल

इब्नुल कलबी से नक़ल किया गया है कि मुझसे एक मोतबर शख़्स ने बयान किया कि काफ़िरों के बादशाहों में से किसी एक ने इस्लाम वालों के किसी शहर को घेर लिया। इन लोगों में कोई नेक आदमी था। उसने एक मुट्ठी मिट्टी लेकर उस पर—

وَمَا رَمَيْتَ إِذْ رَمَيْتَ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ رَمَىٰ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِينَ مِنْهُ بَلَاءً حَسَنًا
إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا ۝ وَأَخْرَجَتِ الْأَرْضُ أَثْقَالَهَا ۝

وَقَالَ الْإِنسَانُ مَا لَهَا ۝ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا ۝ بِأَنَّ رَبَّكَ أَوْحَىٰ لَهَا ۝ يَوْمَئِذٍ
يَصْدُرُ النَّاسُ أَشْتَاتًا ۝

व मा रमै त इज़ रमै त व ला किन्नल्लाह रमा व लि युब्लि यल मुअ्मिनी न मिन्हु बलाअन ह स ना इन्नल्ला ह समीअुन अ़लीम० इज़ा ज़ुल्ज़ि ल तिल अर्ज़ु ज़िल्ज़ा ल हा० व अख़्रजतिल अर्ज़ु अस्क़ालहा० व क़ालल् इन्सानु मालहा० यौमइज़िन तुहद्दिसु अख़बा र हा० बि अन्न रब्ब क औहा लहा० यौ मइज़िय यस्दुरुन्नासु अश्ताता०

लिख कर उन काफ़िरों के पड़ावों में डलवा दी। वे आपस में लड़ कर भाग गये।

१५. अल-क़ादिरु (तवाना सब पर)

खासियत—दो रक्अत नमाज़ पढ़ कर उसको सौ बार पढ़े तो ताक़त हासिल हो और अगर वुज़ू करते हुए उसे ज़्यादा से ज़्यादा पढ़े तो दुश्मनों पर ग़ालिब हो।

१६. अल-मुक़द्दिमु (आगे करने वाले)

खासियत—लड़ाई में जाकर पढ़े तो ताक़त और निजात हो।

१७. अत-तव्वाबु (तौबा क़ुबूल करने वाले)

खासियत—चाश्त की नमाज़ के बाद तीन सौ साठ बार पढ़े तो तौबा की तौफ़ीक़ हासिल होगी, अगर ज़ालिम पर दस बार पढ़े तो उससे खलासी हो।

१८. अल-मुन्तक़िमु (बदला लेने वाले)

खासियत—जो शख़्स अपने ज़ालिम दुश्मन से बदला न ले सकता हो, तो इसे ज़्यादा से ज़्यादा पढ़े, अल्लाह तआ़ला उससे

बदला ले लें।

सफ़र

१. सवार होते वक़्त

سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَٰذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ

१. सुब्हानल्लज़ी सख़्ख़ र लना हाज़ा व मा कुन्ना लहू मुक़्रि-नीन०

—पारा २५, रुकूअ ७

तर्जुमा—उसी की ज़ात पाक है जिसने इन चीज़ों को हमारे बस में कर दिया और हम तो ऐसे न थे जो उनको क़ाबू में कर लेते।

ख़ासियत—घोड़े या दूसरी सवारी पर सवार होने के वक़्त इस आयत को पढ़ लिया करे, इन्शाअल्लाहु तआला आफ़तों से बचा रहेगा।

أَفَغَيْرَ دِينِ اللَّهِ يَبْغُونَ وَلَهُ أَسْلَمَ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا وَإِلَيْهِ يُرْجَعُونَ

२. अ फ़ ग़ै र दीनिल्ला हि यब्ग़ू न व लहू अस्ल म मन फ़िस्समा-वाति वल अर्ज़ि तौ अंव व कर्हंव व इलैहि युर्ज अून०

—पारा ३, रुकूअ १७

तर्जुमा—क्या फिर उस ख़ुदा के दीन के सिवा और किसी तरीक़े को चाहते हैं, हालांकि हक़ तआला के सामने सब सर झुकाते हैं जितने आसमानों और ज़मीन में हैं, (कुछ) ख़ुशी से और (कुछ) बे-अख़्तियारी से और सब ख़ुदा ही की तरफ़ लौटाये जाएंगे।

ख़ासियत—अगर सवारी का कोई जानवर घोड़ा, ऊंट, सवारी के वक़्त शोख़ी और शरारत करे और चढ़ने न दे तो इस आयत को तीन बार पढ़ कर उसके कान में फूंक दे, इन्शाअल्लाहु तआला बाज़ आ जाएगा।

२. किसी शहर में दाख़िल होना

رَبِّ أَنْزِلْنِي مُنْزَلًا مُبَارَكًا وَأَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِينَ

१. रब्बि अन्ज़िल्नी मुन्ज़लम मुबारकंव व अन् त ख़ैरुल मुन्ज़ि-लीन०

—पारा १८, रुकूअ २

तर्जुमा—ऐ मेरे रब! मुझको ज़मीन पर बरकत का उतारना उतारियो और आप सब उतारने वालों से अच्छे हैं।

ख़ासियत—जब किसी शहर में दाख़िल हो तो इस आयत को पढ़े, इन्शाअल्लाहु तआला वहां ब-ख़ैर व ख़ूबी बसर होगी।

३. कश्ती व जहाज़ की हिफ़ाज़त

بِسْمِ اللَّهِ مَجْرَاهَا وَمُرْسَاهَا إِنَّ رَبِّي لَغَفُورٌ رَحِيمٌ

१. बिस्मिल्लाहि मज्रेहा व मुर्साहा इन् न रब्बी ल ग़फ़ूरुर्रहीम०

—पारा १२, रुकूअ ५

तर्जुमा—फ़रमाया कि (आओ) उस कश्ती में सवार हो जाओ (और कुछ अंदेशा मत करो, क्योंकि उसका चलना और उसका ठहरना अल्लाह ही के नाम से है, यक़ीनन मेरा रब ग़फ़ूर है, रहीम है।

ख़ासियत—जब कश्ती या दूसरी सवारी पर सवार होने लगे तो इस आयत को पढ़ ले, इन्शाअल्लाहु तआला राह की आफ़तों

से बचा रहेगा और जिस शख्स को सर्दी से बुखार आता हो तो बेरी की लकड़ी पर लिख कर उसके गले में डाल दे, इन्शाअल्लाह तआला ठीक हो जाएगा।

فَالِقُ الْإِصْبَاحِ وَجَعَلَ اللَّيْلَ سَكَنًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۝ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ النُّجُومَ لِتَهْتَدُوا بِهَا فِي ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ قَدْ فَصَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝

२. फ़ालिकुल इस्बाह···लिक़ौमिय्य अ्‌ ल मून०

—पारा ७, रुकूअ १८

तर्जुमा—वह (अल्लाह तआला) सुबह का निकालने वाला है और उसने रात को राहत की चीज़ बनाया है और सूरज और चांद की (रफ़्तार) को हिसाब से रखा है। यह ठहराई बात है ऐसी ज़ात की जो कि क़ादिर है, बड़े इल्म वाला है और वह अल्लाह ऐसा है, जिसने तुम्हारे (फ़ायदे) के लिए सितारों को पैदा किया ताकि तुम उनके ज़रिए से अंधेरों में, खुश्की में भी, और दरिया में भी रास्ता मालूम कर सको। बेशक हमने ये दलीलें खोल-खोल कर बयान कर दी हैं, उन लोगों के लिए, जो खबर रखते हैं।

खासियत—इस आयत को जुमा के दिन वुज़ू करके साखू के तख्ते पर या किसी लकड़ी पर लिख कर, खुदवा करके कश्ती के आगे बांध देने से कश्ती तमाम आफ़तों से बची रहेगी।

३. अगर इस अबरद के नग पर बुध के दिन खुदवा करके अंगूठी पहने, हर तरह ज़रूरत पूरी हो और क़ुबूलियत और मुहब्बत व हैबत लोगों की नज़र में पैदा हो।

وَقَالَ ارْكَبُوا فِيهَا بِسْمِ اللَّهِ مَجْرَاهَا وَمُرْسَاهَا إِنَّ رَبِّي لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

४. व क़ालर्कबू फ़ीहा बिस्मिल्लाहि मज्रेहा व मुर्साहा इन् न रब्बी लग़फ़ूरुर्रहीम०

—पारा १२, रुकूअ ४

तर्जुमा—और (नूह अलैहिस्सलाम ने) फ़रमाया कि (आओ) इस कश्ती में सवार हो जाओ और कुछ अंदेशा मत करो (क्योंकि) इसका चलना और इसका ठहरना (सब) अल्लाह ही के नाम से है। यक़ीनन मेरा रब ग़फ़ूर है, रहीम है।

खासियत—साखू की तख्ती पर इस आयत को खुदवा कर कश्ती के अगले हिस्से में उसको जड़ दिया जाए, हर क़िस्म की आफ़त से कश्ती महफ़ूज़ रहे और उसको कश्ती में सवार होते वक़्त पढ़ना चाहिए।

५. इसी तरह आयत—

وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ وَالْأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَالسَّمَاوَاتُ مَطْوِيَّاتٌ بِيَمِينِهِ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝

व मा क़ द रुल्ला ह हक़्क़ क़द्रिही वल् अर्‌ दु जमी अन क़ब्ज़तुहू यौमल क़ियामति वस्समावातु मत्वीयातुम बियमीनिही सुब्हान हू व तआला अम्मा युश्रिकून०

—पारा २४, रुकूअ ४

पढ़ना मुफ़ीद है।

तर्जुमा—और (अफ़सोस है कि) इन लोगों ने अल्लाह तआला की कुछ अज़मत (बड़ाई) न की, जैसी अज़मत करनी चाहिए थी, हालांकि (इसकी वह शान है कि) सारी ज़मीन उसकी मुट्ठी में होगी, क़ियामत के दिन और तमाम आसमान लिपटे होंगे उसके दाहिने हाथ में। वह पाक व बरतर है उनके शिर्क से।

६. सूरः लुक़मान (पारा २१)

खासियत—इसको लिख कर पीने से पेट की सब बीमारियां

और बुखार और तिजारी और चौथया जाता रहता है और इसको पढ़ने से डूबने से बचा रहे।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللَّهِ لِيُرِيَكُم مِّنْ آيَاتِهِ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ

७. अ लम त र अन्नल् फुल क तज्री फ़िल बह्रि बिनिअमतिल्लाहि लि युरि य कुम मिन आयातिही इन् न फ़ी ज़ालिक ल आयातिल्लि कुल्लि सब्बारिन शकूर० —पारा २१, रुकूअ १३

तर्जुमा—ऐ मुखातब ! क्या तुमको यह (तौहीद की दलील) मालूम नहीं कि अल्लाह ही के फ़ज़्ल से कश्ती दरिया में चलती है, ताकि तुमको अपनी निशानियां दिखलाए, इसमें निशानियां हैं हर एक ऐसे शख़्स के लिए जो सब्र व शुक्र करता हो।

खासियत—दरिया के तूफ़ान के वास्ते सात परचों पर लिख कर दरिया में पूरब की तरफ़ एक-एक करके डाल दिया जाए।

قُلْ مَن يُنَجِّيكُم مِّن ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُونَهُ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً لَّئِنْ أَنجَانَا مِنْ هَٰذِهِ لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ قُلِ اللَّهُ يُنَجِّيكُم مِّنْهَا وَمِن كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ أَنتُمْ تُشْرِكُونَ

कुल मंय्युनज्जीकुम मिन ज़ुलुमातिल बरि वल बह्रि तद् ऊ न हू तज़र्रुअंव व खुफ़्यतन ल इन अन्जाना मिन हाज़िही ल न कूनन्न मिनश्शाकिरीन० कुलिल्लाहु युनज्जीकुम मिन्हा व मिन कुल्लि करबिन सुम्म अन्तुम तुश्रिकून० —पारा ७, रुकूअ १४

तर्जुमा—आप कहिए कि वह कौन है जो तुम को खुश्की और दरिया की अंधियारियों से इस हालत में निजात देता है कि तुम उसको पुकारते हो तज़र्रुअ (विनम्रता) जाहिर करके और (कभी) चुपके-चुपके। अगर आप हमको उनमें निजात दे दें तो हम ज़रूर हक़ शनासी (पर क़ायम रहने) वालों से हो जाएं। आप (ही) कह दीजिए कि अल्लाह ही तुमको इन से निजात देता है और हर ग़म से, तुम फिर भी शिर्क करने लगते हो।

खासियत—अगर दरिया में जोश व बाढ़ हो, ये आयतें लिख कर दरिया में डालने से तूफ़ान को सुकून हो जाता है।

९. सूरः फ़त्ह (पारा २६)

खासियत—रमज़ान शरीफ़ के चांद के देखने के वक़्त तीन बार पढ़ने से तमाम साल रोज़ी ज़्यादा रहे। लिख कर लड़ाई-झगड़े के वक़्त पास रखने से अम्न में रहे और फ़त्ह मिले। कश्ती में सवार होकर पढ़ने से डूबने से बचा रहे।

رَّبِّ أَدْخِلْنِي مُدْخَلَ صِدْقٍ وَأَخْرِجْنِي مُخْرَجَ صِدْقٍ وَاجْعَل لِّي مِن لَّدُنكَ سُلْطَانًا نَّصِيرًا

१०. रब्बि अद्खिल्नी मुद् ख ल सिद् किंव व अख़्रिज्नी मुख़्र ज सिद्किंव व ज् अल्ली मिल्ल दुन क सुल्तानन नसीरा०

—पारा १५, रुकूअ ६

तर्जुमा—ऐ रब ! मुझको ख़ूबी के साथ पहुंचाइयो और मुझको ख़ूबी के साथ ले जाइयो और मुझको अपने पास से ऐसा ग़ल्बा दीजियो जिसके साथ मदद हो।

खासियत—सफ़र करने के वक़्त या सफ़र से आने के वक़्त इसको पढ़ ले, इन्शाअल्लाहु तआला इज़्ज़त व क़द्र होगी।

११. सूरः अ ब स (पारा ३०)

खासियत—इसको लिख कर पास रखने से रास्ते के खतरों से बचा रहे।

१२. सूरः अलक़ (पारा ३०)

खासियत—सफ़र में साथ रखने से घर आने तक हर क़िस्म

की ग्राफ़त—समुन्दर की या खुश्की की—से बचा रहे।

५. खाण्सी खैरियत के साथ

१. हुरूफ़े मुक़त्तआत जो सूरतों के शुरू में होते हैं, वे यह हैं—

الٓمٓ . الٓمٓصٓ . الٓر . الٓمٓر . كٓهٰيٰعٓصٓ . طٰهٰ . طٰسٓمٓ . طٰسٓ . يٰسٓ . صٓ . حٰمٓ . عٓسٓقٓ . قٓ . نٓ .

अलिफ़-लाम-मीम, अलिफ़-लाम-मीम-स्वाद, अलिफ़-लाम-रा अलिफ़-लाम-मीम रे, काफ़-हा-या-ऐन-स्वाद, त्वा-हा, त्वा-सीन, त्वा-सीम-मीम, या-सीन, स्वाद, हा-मीम, ऐन-सीन-क़ाफ़, क़ाफ़, नून—

और जिनमें ये हुरूफ़ आये हैं—

[illegible]

अलिफ़-हा-स्वाद-सीन-काफ़-ऐन-त्वा-क़ाफ़-रा-हा-नून-मीम-लाम-या इनका लक़ब इस्तिलाह में हुरूफ़े नूरानी है।

ख़ासियत—एक अल्लाह वाले बुज़ुर्ग से नक़ल किया गया है कि इन हुरूफ़े नूरानी को पास रखने से, तमाम आफ़तों से हिफ़ाज़त रहती है और रोज़ी मिलती है और ज़रूरतें पूरी होती हैं और दुश्मन और चोर और सांप और बिच्छू और दरिंदे और कीड़े-मकोड़े से बचा रहता है और सफ़र में उनके पढ़ने से सही व सालिम घर वापस आता है।

२. अल अलीयु (बुलंद सबसे)

ख़ासियत—अगर लिख कर मुसाफ़िर अपने पास रखे तो जल्दी अपने रिश्तेदारों से आ मिले। अगर मुहताज हो, ग़नी हो जाए।

३. अल अव्वलु (सबसे पहले)

ख़ासियत—अगर मुसाफ़िर हर जुमा को हज़ार बार पढ़े तो जल्दी अपने लोगों से आ मिले।

जिस्मानी मर्ज़

१. बुख़ार या हर बीमारी को दूर करने के लिए

إِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا إِذَا مَسَّهُمْ طَائِفٌ مِّنَ الشَّيْطَانِ تَذَكَّرُوا فَإِذَا هُم مُّبْصِرُونَ

इन्नल्लज़ी न त्तक़ौ इज़ा मस्स हुम ताइफ़ुम मिनश्शैतानि तज़क्करू फ़ इज़ा हुम मुब्सिरून। —पारा ६, रुकूअ १४

तर्जुमा—यक़ीनन जो लोग खुदा तरस हैं, जब उनको कोई ख़तरा शैतान की तरफ़ से आ जाता है, तो वे याद करने में लग जाते हैं।

ख़ासियत—जिस शख़्स को गर्मी से बुख़ार आता हो, इस आयत को पढ़ कर उस पर दम करे या तश्तरी पर लिख कर, धोकर पिला दे। इन्शाअल्लाहु तआला शिफ़ा होगी।

قُلْنَا يَا نَارُ كُونِي بَرْدًا وَسَلَامًا عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ

२. क़ुल्ना या ना रुकूनी बर्दंव व सलामन अला इब्राहीम। —पारा १७, रुकूअ ५

तर्जुमा—हमने (आग को) हुक्म दिया कि ऐ आग! ठंडी और बे-नुक़सानी हो जा, इब्राहीम के हक़ में।

ख़ासियत—जिसको गर्मी से बुख़ार आता हो, उस आयत

को लिख कर धोकर पिला दे या गले में डाल दे, इन्शाअल्लाह तआला बुखार जाता रहेगा।

وَيَشْفِ صُدُورَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِينَ ۝ وَشِفَاءٌ لِّمَا فِي الصُّدُورِ
يَخْرُجُ مِن بُطُونِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ فِيهِ شِفَاءٌ لِّلنَّاسِ ۝ وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْآنِ
مَا هُوَ شِفَاءٌ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝ وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِ ۝ قُلْ هُوَ لِلَّذِينَ آمَنُوا
هُدًى وَشِفَاءٌ

३. व यश्फ़ि सुदू र क़ौमिम मुअ्मि नीन० (पारा १०, रुकूअ ८) व शिफ़ाउल्लिमा फ़िस्सु दूरि० (पारा ११, रुकूअ १) यख़्रुजु मिम बुतूनि हा शराबुम मुख़्तलिफ़ुन अल् वा नहू फ़ीहि शिफ़ाउल्लिन्नासि० (पारा १४, रुकूअ १६) व नुनज़्ज़िलु मिनल क़ुरआनि मा हु व शि फ़ा उं व व रहमतुल लिल मुअ् मि नीन० (पारा १५, रुकूअ ६) व इज़ा मरिज़ तु फ़ हु व यश्फ़ीनि (पारा १९, रुकूअ ६) क़ुल हु व लिल्लज़ी न आम नू हुदंव व शिफ़ा उन० (पारा २४, रुकूअ १६)

तर्जुमा—और बहुत से (ऐसे) मुसलमानों के दिलों को शिफ़ा देगा।

दिलों में जो (बुरे कामों से) बीमारियां है उनके लिए शिफ़ा है।

उसके पेट में से पीने की एक चीज़ निकलती है (यानी शहद) जिसकी रंगतें मुख़्तलिफ़ होती है कि उसमें लोगों के लिए शिफ़ा है।

और हम क़ुरआन में ऐसी चीजें नाज़िल करते है कि ईमान वालों के हक़ में शिफ़ा व रहमत है।

और जब मैं बीमार हो जाता हूं (जिसके बाद शिफ़ा हो जाती है) तो वही मुझको शिफ़ा देता है।

आप कह दीजिए कि यह क़ुरआन ईमान वालों के लिए तो रहनुमा और शिफ़ा है।

ख़ासियत—शिफ़ा की इन आयतों को जिस मर्ज़ में चाहे, तश्तरी पर लिख कर मरीज़ को पिलाये या तावीज़ लिख कर गले में डाल दे। इन्शाअल्लाह तआला सेहत होगी, चाहे कैसा ही सख़्त मर्ज़ हो।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ۝ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
مَالِكِ يَوْمِ الدِّينِ ۝ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ۝ اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ۝
صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ ۝

४. बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ ल मीन० अर्रहमानिर्रहीम० मालिकि यौमिद्दीन० इय्या क नअ्बुदु व इय्या क नस्तईन० इह्दिनस्सिरातल मुस्तक़ीम० सिरा तल्लज़ी न अन्अम् त अलैहिम ग़ैरिल मग़्ज़ूबि अलैहिम वलज़्ज़ाल्लीन०

तर्जुमा—शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं। सब तारीफ़ें अल्लाह के लायक़ हैं जो मुरब्बी है, हर-हर आलम के, जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले है, जो बदले के दिन के मालिक हैं। हम आप ही की इबादत करते हैं और आप ही से मदद की दर्ख़्वास्त करते हैं, बतला दीजिए हमको रास्ता सीधा, रास्ता उन लोगों का, जिन पर आपने इनाम फ़रमाया है, न रास्ता उन लोगों का, जिन पर आपका ग़ज़ब किया गया और न उन लोगों का जो रास्ते से गुम हो गये।

ख़ासियत—जिसको बुख़ार आता हो, थोड़ी रुई लेकर ग्यारह बार दरूद शरीफ़ पढ़ें, फिर सात बार 'अल-हम्दुशरीफ़' पढ़ कर, रुई पर दम करके दाएं कान में रख और रुई का दूसरा टुकड़ा लेकर पांच बार अल-हम्दु शरीफ़ पढ़े, ग्यारह बार दरूद शरीफ़ पढ़ कर रुई पर दम करके बाएं कान में रख ले, दूसरे दिन उसी वक़्त जिस वक़्त रुई कान में रखी थी, दाएं कान की रुई बाएं कान में रख

से और बाएं कान की रुई दाएं कान में रखे। इन्शाअल्लाहु तआला बुखार जाता रहेगा।

५. हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि बुखार के लिए यह लिख कर मरीज़ के बंधवाते थे—

يُرِيدُ اللَّهُ أَن يُخَفِّفَ عَنكُمْ وَخُلِقَ الْإِنسَانُ ضَعِيفًا ۝ الْآنَ خَفَّفَ اللَّهُ عَنكُمْ
وَعَلِمَ أَنَّ فِيكُمْ ضَعْفًا ۝ رَّبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ إِنَّا مُؤْمِنُونَ
وَإِن يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ وَإِن يُرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَادَّ لِفَضْلِهِ
وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

युरीदुल्लाहु अंय्युखफ़्फ़िफ़ अन्कुम व खुलिक़ल इन्सानु ज़ईफ़ा॰ अल् आ न खफ़्फ़फ़ल्लाहु अन्कुम व अलि म अन् न फ़ीकुम ज़अ फ़ा॰ (पारा १०, रुकूअ ५) रब्बनक् शिफ़ अन्नल- अज़ा ब इन्ना मुअ्मिनून॰ (पारा २५, रुकूअ १४) व इंय्यम्सस्कल्लाहु बिज़ुर्रिन फ़ ला काशि फ़ लहू इल्ला हु व व इंय्युरिद् क बिख़ैरिन फ़ ला राद्द लि फ़ज़्लिही॰ (पारा ११, रुकूअ १६) व हु व अला कुल्लि शैइन क़दीर॰ (पारा ११, रुकूअ १७)

तर्जुमा—अल्लाह तआला को तुम्हारे साथ तख़्फ़ीफ़ (कटौती) मंज़ूर है और वजह इसकी यह है कि आदमी कमज़ोर पैदा किया गया है।

अब अल्लाह तआला ने तुम पर तख़्फ़ीफ़ कर दी और मालूम कर लिया कि तुममें हिम्मत की कमी है।

ऐ हमारे रब! हमसे इस मुसीबत को दूर कर दीजिए, हम ज़रूर ईमान ले आएंगे।

और अगर तुमको अल्लाह कोई तक्लीफ़ पहुंचाए तो उसके अलावा और कोई उसको दूर नहीं कर सकता और अगर वह तुमको कोई राहत पहुंचाना चाहे तो उसके फ़ज़्ल का कोई हटाने वाला

नहीं है।

और वह हर शै पर पूरी क़ुदरत रखता है।

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ وَأَخِيهِ أَن تَبَوَّآ لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوتًا وَاجْعَلُوا بُيُوتَكُمْ
قِبْلَةً وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ۝

६. व अव हैना इला मूसा व अख़ीहि अन तबव्वआ लिक़ौमि-कुमा बिमिस् र बुयूतंव वज अलू बुयू त कुम क़िब्लतंव व अक़ीमुस्-सला त व बश्शि रिल मुअ मिनी न॰ —पारा ११, रुकूअ १४

और

وَإِن يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ ۖ وَإِن يُرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا
رَادَّ لِفَضْلِهِ ۚ يُصِيبُ بِهِ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۚ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ

व इंय्यम्सस्कल्लाहु बिज़ुर्रिन फ़ ला काशि फ़ लहू इल्ला हु व व इंय्युरिद् क बिख़ैरिन फ़ ला राद द लिफ़ज़्लिही युसीबु बिही मंय्यशाउ मिन अिबादिही व हु वल ग़फ़ूर्रहीम॰ —पारा ११, रुकूअ १६

तर्जुमा—और हमने मूसा (अलैहिस्सलाम) और उन के भाई हारून (अलैहिस्सलाम) के पास वह्य भेजी कि तुम दोनों अपने उन लोगों के लिए (बदस्तूर) मिस्र में घर पर क़रार रखो और (नमाज़ के औक़ात में) तुम सब अपने उन्हीं घरों को नमाज़ पढ़ने की जगह क़रार दे लो। और (यह ज़रूरी है कि) नमाज़ के पाबन्द रहो और (ऐ मूसा!) आप मुसलमानों को बशारत दे दें।

और अगर तुमको अल्लाह तआला कोई तक्लीफ़ पहुंचाए तो उस के अलावा और कोई उसका दूर करने वाला नहीं और अगर वह तुम को कोई राहत पहुंचाना चाहे तो उसके फ़ज़्ल का कोई हटाने वाला नहीं, (बल्कि) वह अपना फ़ज़्ल अपने बन्दों में से जिस पर चाहें, उंडेल दें और वह बड़ी मग़्फ़िरत और बड़ी रहमत वाले हैं।

ख़ासियत—मिट्टी के टुकड़े पर लोहे की सूई से इस आयत

को नक़्श कर के मीठे पानी से जो रात के वक़्त नहर से लिया गया हो, घोल कर मरीज़ को फ़ज्र होने के क़रीब पिलाया जाए। इन्शा-अल्लाहु तआला हर क़िस्म के मर्ज़ों से शिफ़ा हो।

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ وَلَا يَزِيدُ الظَّالِمِينَ إِلَّا خَسَارًا

७. व नुनज़्ज़िलु मिनल क़ुरआनि मा हु-व शिफ़ाउं व व रहमतुल लिल मुअ्मिनी न व ला यज़ीदुज़्ज़ालिमीन इल्ला ख़सारा०

—पारा १५, रुकूअ़ ६

तर्जुमा—और हम क़ुरआन में ऐसी चीज़ें नाज़िल करते हैं कि वह ईमान वालों के हक़ में तो शिफ़ा व रहमत है।

ख़ासियत—इसको पढ़ कर मरीज़ पर दम करना या लिख कर पिलाना हर मर्ज़ को नफ़ा देता है।

إِنَّ الَّذِينَ سَبَقَتْ لَهُم مِّنَّا الْحُسْنَىٰ أُولَٰئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ ۝ لَا يَسْمَعُونَ
حَسِيسَهَا ۖ وَهُمْ فِي مَا اشْتَهَتْ أَنفُسُهُمْ خَالِدُونَ ۝ لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْأَكْبَرُ
وَتَتَلَقَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ هَٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ ۝ يَوْمَ نَطْوِي السَّمَاءَ
كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ۚ كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيدُهُ ۚ وَعْدًا عَلَيْنَا
إِنَّا كُنَّا فَاعِلِينَ ۝ وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُورِ مِن بَعْدِ الذِّكْرِ أَنَّ الْأَرْضَ يَرِثُهَا
عِبَادِيَ الصَّالِحُونَ ۝ إِنَّ فِي هَٰذَا لَبَلَاغًا لِّقَوْمٍ عَابِدِينَ ۝ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً
لِّلْعَالَمِينَ ۝ قُلْ إِنَّمَا يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۖ فَهَلْ أَنتُم مُّسْلِمُونَ ۝ فَإِن تَوَلَّوْا
فَقُلْ آذَنتُكُمْ عَلَىٰ سَوَاءٍ ۖ وَإِنْ أَدْرِي أَقَرِيبٌ أَم بَعِيدٌ مَّا تُوعَدُونَ ۝

८. इन्नल्लज़ी न स ब क़त……अम बओ़ दुम मा तूअ़ दून०

—पारा १७, रुकूअ़ ७

ख़ासियत—बुख़ार और तमाम मर्ज़ों और दर्दों के लिए पाक बरतन में स्याही से लिख कर कुएं के पानी से जिस पर धूप न आती हो, धोकर तीन घूंट मरीज़ को पिलाए और दर्द की तेज़ी के वक़्त बाक़ी उसकी कमर पर छिड़क दे। तीन दिन इसी तरह करे या रोग़न बाबूना से धोकर कमर के दर्द और जानू के वास्ते मालिश करे।

९. सूरः यासीन (पारा २२, रुकूअ़ २३)

ख़ासियत—इस सूरः को लिख कर पास रखने से बुरी नज़र और सब बीमारियों और दर्द से हिफ़ाज़त रहे।

१०. सूरः मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) (पारा २६)

ख़ासियत—इस सूरः को लिख कर ज़मज़म के पानी से धोकर पीने से लोगों की नज़र में महबूब हो जाए। जो बात सुने याद रहे, उसके पानी से ग़ुस्ल कराना तमाम मर्ज़ों को दूर करता है।

११. सूरः मुजादलः (पारा २८)

ख़ासियत—मरीज़ के पास पढ़ने से उसको नींद और सुकून आए और अगर काग़ज़ पर लिख कर ग़ल्ले में रख दें, उसमें कोई बिगाड़ न हो।

१२. फ़क़ीह मुहम्मद माज़नी रह० को बुख़ार आया, उनके उस्ताद फ़क़ीह वली उमर बिन सईद रह० इयादत को आये और एक तावीज़ बुख़ार का देकर चले गये और फ़रमा गये कि उसको देखना मत। ग़रज़ उसको बांधा और बुख़ार उसी वक़्त जाता रहा; उन्होंने उसको खोल कर देखा तो उसमें 'बिस्मिल्लाह' लिखी थी, उनके एतक़ाद में सुस्ती पैदा हुई, तुरन्त बुख़ार फिर लौट आया। उन्होंने जाकर शेख़ से अर्ज़ किया और अपने फ़ेल से तौबा की, उन्होंने और तावीज़ दे दिया और ख़ुद बांध दिया, फिर तुरन्त बुख़ार जाता रहा। उन्होंने एक साल बाद उसको खोल कर देखा, तो वही बिस्मिल्लाह थी, उस वक़्त उनको निहायत अफ़सोस और एतक़ाद दिल में पैदा हुआ।

१३. अस्सलामु (बे-ऐब)

ख़ासियत—अगर मरीज़ के पास बैठ कर उसके सिरहाने दोनों हाथ उठा कर उसको ३६ बार ऊंची आवाज़ से पढ़े कि मरीज़ सुन ले, इन्शाअल्लाहु उसको शिफ़ा होगी।

१४. अल-अज़ीमु (बुज़ुर्ग)

ख़ासियत—ज़्यादा से ज़्यादा ज़िक्र करने से इज्जत और मर्ज़ से शिफ़ा हो।

१५. अल-हय्यु (ज़िंदा)

ख़ासियत—इसको ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ा करने या लिख कर पिलाने से हर क़िस्म के मर्ज़ों से निजात हो।

१६. अल-ग़नीयु (बे-परवा मुतलक़)

ख़ासियत—किसी मर्ज़ या बला के वक़्त पढ़े तो जाता रहे।

२. हौलदिली

وَلِيَرْبِطَ عَلَىٰ قُلُوبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْأَقْدَامَ (پ٩ ع١٦)

१. लि यर्बि त अला क़ुलूबिकुम व युसब्बि त बिहिल अक़दाम०

—पारा ६, रुकूअ १६

तर्जुमा—तुम्हारे दिलों को मज़बूत कर दे और तुम्हारे पांव जमा दे।

ख़ासियत—यह आयत हौलदिली के लिए निहायत आज़मायी हुई है, इसको लिख कर तावीज़ बना कर गले में इस तरह लटकाए कि वह तावीज़ सीधे दिल पर रहे, बल्कि उसको कपड़े या डोरे से बांध दे ताकि दिल से न हटने पाये।

الَّذِينَ آمَنُوا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوبُهُم بِذِكْرِ اللَّهِ ۗ أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ تَطْمَئِنُّ

الْقُلُوبُ ۝ (پ١٣ ع١٠)

२. अल्लज़ी न आ म नू व ततमइन्नु क़ुलूबुहुम बिज़िक्रिल्लाहि अला बिज़िक्रिल्लाहि ततमइन्नुल क़ुलूबु —पारा १३, रुकूअ १०

तर्जुमा—मुराद इससे वे लोग हैं जो ईमान लाये और अल्लाह तआला के ज़िक्र से उनके दिलों को इत्मीनान होता है। ख़ूब समझ लो कि अल्लाह के ज़िक्र से दिलों को इत्मीनान हो जाता है।

ख़ासियत—यह हौलदिली के वास्ते है तर्कीब ऊपर गुज़री।

३. दिल की धड़कन

أَفَغَيْرَ دِينِ اللَّهِ يَبْغُونَ وَلَهُ أَسْلَمَ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا
وَإِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ۝ قُلْ آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ عَلَيْنَا وَمَا أُنزِلَ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ
وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ وَالنَّبِيُّونَ مِن رَّبِّهِمْ لَا
نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ۝ وَمَن يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَن
يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝ (پ٣ ع١٧)

१. अ फ़ ग़ै र दीनिल्लाहि······मिनल ख़ासिरीन०

—पारा ३, रुकूअ १७

तर्जुमा—क्या फिर (इस) अल्लाह के दीन के सिवा और किसी तरीक़े को चाहते हैं, हालांकि हक़ तआला के सामने सब फ़रमांबरदार हैं जितने आसमान और ज़मीन में हैं (कुछ ख़ुशी से और कुछ बे-अख़्तियारी से) और सब ख़ुदा ही की तरफ़ लौटाये जाएंगे। आप फ़रमा दीजिए कि हम ईमान रखते हैं अल्लाह पर और उस (हुक्म) पर जो हमारे पास भेजा और उस पर जो (हज़रत) इब्राहीम व इस्माईल व इस्हाक़ व याक़ूब (अलैहिमुस्सलाम) और याक़ूब की औलाद तरफ़ भेजा गया और इस (हुक्म व मोजज़े) पर भी जो मूसा व ईसा (अलैहिमुस्सलाम) और दूसरे नबियों को दिया गया,

उन के परवरदिगार की तरफ़ से, इस कैफ़ियत से कि हम उन (हज़रात) में से किसी एक में भी फ़र्क़ नहीं करते और हम तो अल्लाह ही के मुतीअ (फ़रमांबरदार) हैं और जो शख्स इस्लाम के सिवा किसी और दीन की तलब करेगा तो वह (दीन) उस से (ख़ुदा के नज़दीक) मक़्बूल न होगा और वह (शख्स) आख़िरत में तबाहकारों में से होगा। (यानी निजात न पाएगा।)

ख़ासियत—ये आयतें दिल की धड़कनों के लिए मुफ़ीद हैं। मिट्टी के कोरे बर्तन में लिख कर बारिश या मीठे कुएं के पानी से जिस पर धूप न आती हो, धोकर मरीज़ को पिलाया जाए, इन्शाअल्लाह तआला सेहत हो जाएगी।

४. दिल का दर्द

وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِنْ غِلٍّ

१. व नज़अना मा फ़ी सुदूरिहिम मिन ग़िल्लिन०

ख़ासियत—इस आयत को मिट्टी के कोरे बर्तन पर ज़ाफ़रान और गुलाब से लिख कर पानी से धोकर पिए, दिल का दर्द ख़त्म हो जाए

२. सूरः अल-इन्शिराह (पारा ३०)

ख़ासियत—सीने पर दम करने से तंगी और दिल के दर्द को सुकून हो। इसका पीना पथरी को टुकड़े-टुकड़े करके निकाल देता है।

५. दिल को ताक़त पहुंचाने के लिए

१. अल-माजिदु (बुज़ुर्ग वार)

ख़ासियत—इसे पढ़ कर खाए तो दिल को ताक़त हासिल हो और अगर इस नाम को हमेशा-हमेशा पढ़े, दिल रोशन हो।

२. अल-वाहिदुल अहदु

ख़ासियत—अगर हज़ार बार पढ़े तो मख़्लूक़ का ताल्लुक़ उसके दिल से निकल जाए।

६. तहाल के लिए

إِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ اَنْ تَزُوْلَا ۚ وَلَئِنْ زَالَتَاۤ اِنْ اَمْسَكَهُمَا مِنْ اَحَدٍ مِّنْ بَعْدِهٖ ۚ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ﴿پ ٢٢-ع ١٧﴾

१. इन्नल्ला ह युम्सिकुस्समावाति वल अर ज़ अन तज़ूला व लइन ज़ा ल ता इन अम्स क हुमा मिन अ ह दिम मिम् बअ्दि ही इन्नहू का न हलीमन ग़फ़ूरा० —पारा २२, रुकूअ १७

तर्जुमा—यक़ीनी बात है कि अल्लाह तआला आसमानों और ज़मीन को थामे हुए है कि वह मौजूदा हालत को न छोड़ें और (फ़र्ज़ करो) वह मौजूदा हालत को छोड़ भी दें तो फिर ख़ुदा के सिवा और कोई उनको थाम भी नहीं सकता, वह हलीम व ग़फ़ूर है।

ख़ासियत—इस आयत को काग़ज़ पर लिख कर तावीज़ बना कर तहाल पर बांधे, इन्शाअल्लाह जाता रहेगा।

७. नाफ़ टलने के लिए

ذٰلِكَ تَخْفِيْفٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ ﴿پ ٢-ع ٦﴾

ज़ालि क तख़्फ़ीफ़ुम मिर्रब्बिकुम व रह्मतुन०—पारा २, रुकूअ ६

ख़ासियत—जिसकी नाफ़ टल गयी हो, इस आयत को लिख कर नाफ़ पर बांधे। इन्शाअल्लाह तआला सेहत हो जाएगी।

८. बवासीर के लिए

وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرَاهِيمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَإِسْمَاعِيلُ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّكَ
أَنتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِن ذُرِّيَّتِنَا أُمَّةً مُّسْلِمَةً
لَّكَ وَأَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا إِنَّكَ أَنتَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيهِمْ
رَسُولًا مِّنْهُمْ يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيهِمْ إِنَّكَ أَنتَ
الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ (پ ۱ ع ۱۵)

१. व इज़ यर्फ़अु……इन्न क अन्तल अज़ीज़ुल हकीम०

—पारा १, रुकूअ १५

तर्जुमा—और जब कि उठा रहे थे इब्राहीम अलैहिस्सलाम दीवारें खाना-ए-काबा की और इस्माईल अलैहिस्सलाम भी (और यह कहते जाते थे कि) ऐ हमारे परवरदिगार! (यह खिदमत) हम से क़ुबूल फ़रमाइए। बिला शुब्हा आप खूब सुनने वाले हैं, जानने वाले हैं, ऐ हमारे परवरदिगार! हमको अपना और ज़्यादा ताबेदार बना लीजिए और हमारी औलाद में से भी एक ऐसी जमाअत (पैदा) कीजिए जो आपकी फ़रमांबरदार हो और (यह कि) हमको हमारे हज (वग़ैरह) के हुक्म भी बतला दीजिए और हमारे हाल पर तवज्जोह रखिए और हक़ीक़त में आप ही हैं तवज्जोह फ़रमाने वाले, मेहरबानी करने वाले। ऐ हमारे परवरदिगार! और उस जमाअत के अन्दर उन्हीं में का एक ऐसा पैग़म्बर भी मुक़र्रर कीजिए जो उन लोगों को आप की आयतें पढ़-पढ़ कर सुनाया करें और उनको (आसमानी) किताब की और ख़ुशफ़हमी की तालीम दिया करें और उनको पाक कर दें। बिला शुब्हा आप ही हैं, बड़ी ताक़त वाले, ज़बरदस्त हिक्मत वाले।

ख़ासियत—कुछ अल्लाह वाले बुज़ुर्गों का क़ौल है कि इस आयत को बिल्लौरी बरतन पर ज़ाफ़रान और गुलाब से लिख कर काले अंगूर के पानी से धोकर इसमें कुछ कहरबा और कुछ काफ़ूर और कुछ शकर मिला कर पीने से ख़ूनी बवासीर को नफ़ा करता है।

९. हैज़ की ज़्यादती से हिफ़ाज़त

وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِ الرُّسُلُ أَفَإِن مَّاتَ أَوْ
قُتِلَ انقَلَبْتُمْ (پ ۴ ع ۵)

व मा मुहम्मदुन इल्ला रसूलुन क़द ख़ल त मिन क़ब्लिहिर्रुसुलु अ फ़ इम मा त औ क़ुतिलन्क़लब्तुम०

—पारा ४, रुकूअ ५

तर्जुमा—और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तेरे रसूले पाक हैं, (ख़ुदा तो नहीं) आप से पहले और भी बहुत रसूल गुज़र चुके हैं, सो अगर आपका इंतिक़ाल हो जाए या आप शहीद हो जाएं तो क्या तुम लोग (जिहाद या इस्लाम) से ऐसे फिर जाओगे?

ख़ासियत—अगर किसी औरत का ख़ून जारी हो जाए तो इस आयत को तीन परचों पर लिखे, एक परचा उसके अगले दामन में बांध दे और एक पिछले दामन में, एक नाफ़ के नीचे।

१०. नक्सीर के लिए

१. जिसको नक्सीर जारी हो तो ऊपर वाली आयत को लिखकर मरीज़ की दोनों आंखों के दर्मियान नाक के ऊपर बांध दे।

२. नक्सीर के लिए— وَقِيلَ يَا أَرْضُ ابْلَعِي مَاءَكِ وَيَا سَمَاءُ أَقْلِعِي وَغِيضَ الْمَاءُ
وَقُضِيَ الْأَمْرُ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ فَسَيَكْفِيكَهُمُ اللّٰهُ وَهُوَ السَّمِيعُ

الظّٰلِمِيْنَ۝

व क़ील या अर्ज़ुब लई मा अ कि व या समाउ अक़्लि ओ व ग़ीज़ल मा उ व क़ुज़ियल अम्रु व क़ीलल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आल मी न फ़ स यक्फ़ी क हुमुल्लाहु व हुवस्समी अुल अलीम०

कतान से पाक कपड़े पर लिख कर हाथ पर बांध दिया जाए।

३. नक्सीर के लिए—नक्सीर वाले के सर पर हाथ रख कर ये आयतें पढ़ो और आखिर में यह कह दो कि ऐ नक्सीर! बन्द हो जा खुदा के हुक्म से। आयतें ये हैं—

إِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ أَنْ تَزُوْلَا وَلَئِنْ زَالَتَا إِنْ أَمْسَكَهُمَا

مِنْ أَحَدٍ مِّنْ بَعْدِهٖ إِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ۝ وَقِيْلَ يٰأَرْضُ ابْلَعِيْ مَاءَكِ وَيٰسَمَاءُ

أَقْلِعِيْ وَغِيْضَ الْمَاءُ وَقُضِيَ الْأَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُوْدِيِّ وَقِيْلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ۝

इन्नल्ला ह युम्सिकुस्समावाति वल अर ज़ अन तज़ूला व लइन ज़ाल ता इन अम्स क हुमा मिन अ हदिम मिन बअ्दिही इन्नहू का न हलीमन ग़फ़ूरा० व क़ी ल या अर्ज़ुब्लई मा अ कि व या समाउ अक़्लि ई व ग़ीज़ल मा उ व क़ुज़ियल अम्रु वस्तवत अलल जूदीयि व क़ी ल बुअ्दल लिल क़ौमिज़्ज़ालिमीन०

११. मर्ज़

وَبِالْحَقِّ أَنْزَلْنٰهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ۚ وَمَا أَرْسَلْنٰكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ۝

(پارہ ۱۵، رکوع ۱۲)

१. व बिल हक़्क़ि अन्ज़ल्नाहु व बिल हक़्क़ि न ज़ल व मा अर्सल्ना क इल्ला मुबश्शिरंव व नज़ीरा०— पारा १५, रुकूअ १२

तर्जुमा—और हमने दुरुस्ती ही के साथ नाज़िल किया और वह दुरुस्ती ही के साथ नाज़िल हो गया और हमने आपको सिर्फ़

ख़ुशी सुनाने वाला और डराने वाला बना कर भेजा है।

ख़ासियत—हर मर्ज़ व हर दर्द के वास्ते मरज़ की जगह पर हाथ रख कर इन आयतों को पढ़ कर तीन मर्तबा दम कर दे। इन्शा-अल्लाहु तआला बहुत जल्द सेहत होगी।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَالنُّوْرَ ثُمَّ

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ۝ (پارہ ۷، رکوع ۷)

२. अल-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी ख़ ल क़स्समावाति वल अर ज़ व ज अ लज़्ज़ुलुमाति वन्नू र सुम मल्लज़ी न कफ़रू बिरब्बिहिम यअ्-दिलून०   पारा ७, रुकूअ ७

तर्जुमा—तमाम तारीफ़ें अल्लाह ही के लायक़ है जिसने आसमान को और ज़मीन को पैदा किया और अंधेरियों और रोशनी को बनाया, फिर भी काफ़िर लोग (दूसरों को) अपने रब के बराबर क़रार देते हैं।

ख़ासियत—जो आदमी इस आयत को सुबह व शाम सात बार पढ़ कर अपने बदन पर हाथ फेरे, तमाम दर्द व आफ़तों से बचा रहे।

وَمَا لَنَا أَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنَا سُبُلَنَا ۚ وَلَنَصْبِرَنَّ عَلٰى مَا آذَيْتُمُوْنَا ۚ

وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ۝ (پارہ ۱۳، رکوع ۱۴)

३. व मा लना अल्ला न त वक्क ल अलल्लाहि व क़द हदाना सुबु ल ना व ल नस्बि रन्न अला मा आ ज़ैतुमूना व अलल्लाहि फ़ल् य त वक्कलिल मुतवक्किलून०   —पारा १३, रुकूअ १४

तर्जुमा—और हमको अल्लाह पर भरोसा न करने की कौन सी बात वजह बन सकती है, हालांकि उसने हमको (दोनों जहाँ के मनाफ़े) के रास्ते बता दिए और तुमने जो कुछ हमको तक्लीफ़ पहुंचायी है, हम उस पर सब्र करेंगे और अल्लाह ही पर भरोसा करने

वालों को भरोसा करना चाहिए।

ख़ासियत—जिसके हाथ-पैर में दर्द हो या उसको नज़र हो उसको लिख कर तावीज़ बना कर बांध दे, इन्शाअल्लाह ठीक हो जाएगा।

४. सूरः अल-हाक़्क़ा (पारा २६)

ख़ासियत—हामिला के बांधने से बच्चा हर आफ़त से बचा रहे। अगर बच्चा पैदा होने के वक़्त इसका पढ़ा हुआ पानी मुंह में लगायें तो वह बुद्धिमान हो और हर मर्ज़ और हर आफ़त से, जिसमें बच्चे मुब्तला हो जाते हैं, बचा रहे और अगर ज़ैतून के तेल पर पढ़ कर बच्चे के मल दें, तो बहुत फ़ायदा पहुंचे और सब कीड़ों-मकोड़ों और तक्लीफ़ पहुंचाने वाले जानवरों से बचा रहे और यह तेल तमाम जिस्मानी दर्दों के लिए फ़ायदेमंद है।

५. सूरः ग़ाशियः (पारा ३०)

ख़ासियत—खाने पर दम करने से उसके नुक़सान से बचा रहे और दर्द पर पढ़ने से सुकून हो।

६. सूरः अबी लहब (पारा ३०)

ख़ासियत—अगर लिख कर दर्द की जगह बांध दिया जाए तो कम हो जाए और अंजाम बेहतर हो।

१२. सर दर्द के लिए

لَا يُصَدَّعُونَ عَنْهَا وَلَا يُنزِفُونَ ٥ (पारा २७, रुकूअ १...)

१. ला युसद्दअू न अन्हा व ला यन्ज़िफ़ून०

—पारा २७, रुकूअ १...

ख़ासियत—इससे उनको न सर दर्द होगा और न इससे अक़्ल में ख़राबी होगी।

ख़ासियत—जिसको सर-दर्द हो, उस पर तीन बार पढ़ कर दम कर दे, इन्शाअल्लाहु तआला जाता रहेगा।

२. सूरः तकासुर (पारा ३०)

ख़ासियत—अस्र की नमाज़ के बाद सर-दर्द और शक़ीक़े पर दम करना फ़ायदेमंद है।

३. बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम०

ख़ासियत—रूम के क़ैसर ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में सर दर्द की शिकायत अर्ज़ की। आपने एक टोपी सिलवा कर भेज दी। जब तक वह टोपी सर पर रहती, दर्द को सुकून रहता और जब उसको उतारता, फिर दर्द होने लगता। उसको ताज्जुब हुआ और खोल कर उस टोपी को देखा तो उसमें फ़क़त 'बिस्मिल्लाह' लिखी थी।

४. सर-दर्द के लिए—रमज़ान के आख़िरी जुमा में यह आयत लिखकर रखले, ज़रूरत के वक़्त काम में लाये—

أَلَمْ تَرَ إِلَىٰ رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ وَلَوْ شَاءَ لَجَعَلَهُ سَاكِنًا ثُمَّ جَعَلْنَا
الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيلًا ثُمَّ قَبَضْنَاهُ إِلَيْنَا قَبْضًا يَسِيرًا

अ लम त र इला रब्बि क कैफ़ मद्दज़्ज़िल्ल व लौ शा अ ल ज अ ल हू साकि नन सुम्म ज अ ल्नश्शम्स अलैहि दलीला० सुम्म क़बज़्नाहु इलैना क़ब्ज़ंय्यसीरा०

५. शक़ीक़ा के लिए—यह आयत पढ़ कर दम कर दें—

قُلْ مَن رَّبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
قُلِ اللَّهُ قُلْ أَفَاتَّخَذْتُم مِّن دُونِهِ أَوْلِيَاءَ لَا يَمْلِكُونَ لِأَنفُسِهِمْ نَفْعًا وَلَا ضَرًّا

क़ुल मर्रब्बुस्समावाति वल अर्ज़ि क़ुलिल्लाहु क़ुल अ फ़त्त ख़ज़्तुम मिन दूनिही औ लिया अ ला यम्लिकू न लिअन्फ़ुसिहिम नफ़्अंव

ला वर्रा०

१३. दाढ़ का दर्द

१. बसरा में एक शख़्स दाढ़ का दर्द झाड़ता था और कंजूसी की वजह से किसी को बतलाता न था। जब मरने लगा, उस वक़्त क़लम व दावात मंगा कर यह अमल बतलाया। वह झाड़ यह है—

الٓمّٓصٓ ۔ الٓمّٓرٰ ۔ كٓهٰيٰعٓصٓ ۔ حٰمٓ عٓسٓقٓ ۔ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ
اُسْكُنْ بِكٓهٰيٰعٓصٓ ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا ۔ اُسْكُنْ بِالَّذِيْ اِنْ يَّشَاْ يُسْكِنِ الرِّيْحَ فَيَظْلَلْنَ رَوَاكِدَ
عَلٰى ظَهْرِهٖ اُسْكُنْ بِالَّذِيْ سَكَنَ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ

अलिफ़-लाम-मीम-स्वाद, रा-लाम-मीम, काफ़-हा-या-ऐन-स्वाद हा-मीम-ऐन-सीन-क़ाफ़, अल्लाहु ला इला ह इल्ला हु व रब्बुल अर्शिल अज़ीम उस्कुन बि काफ़-हा-या-ऐन-स्वाद ज़िक्रु रह्मति रब बि क अब द हू ज़ क रीया उस्कु न बिल्ल ज़ी इंय्य शा उ युस्किनिर्री ह फ़ यज़्लल न रवा कि द अला ज़हिरही उस्कुन बिल्लज़ी स क न लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल अर्ज़ि व हुवस्समीउल अलीम०

२. दाढ़ के दर्द के लिए एक दूसरा—

لِكُلِّ نَبَاٍ مُّسْتَقَرٌّ وَّسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ۝

लि कुल्लि न ब इम्मुस्त क़र्रुंव व सौ फ़ तअ् ल मून०। छोटे से काग़ज़ पर लिखकर दाढ़ के नीचे दबाये।

दाढ़ के दर्द के लिए—जब किसी को इसकी शिकायत हो, उससे कह दो, जिस दाढ़ में दर्द है, उसको दाहिने हाथकी शहादत की उंगली से पकड़े और बात करते वक़्त उसको न छोड़े, फिर सूरः फ़ातिहा मय बिस्मिल्लाह सात बार पढ़ो और उससे पूछो कि तेरा नाम क्या है ? वह नाम बतलाये। फिर सूरः फ़ातिहा मय बिस्मिल्लाह सात बार पढ़ो और पूछो कि तेरी मां का क्या नाम है ? वह इसका नाम बतलाये। फिर फ़ातिहा मय बिस्मिल्लाह सात बार पढ़ो और पूछो, तेरे दर्द कहां है ! वह कहे दाढ़ में है। फिर सूरः फ़ातिहा मय बिस्मिल्लाह सात बार पढ़ो और उससे कहो कि ख़ुदा के हुक्म से उस को कील दूं ? वह कहे हां, फिर इसी तरह सूरः फ़ातिहा मय बिस्मिल्लाह सात बार पढ़ो और उससे कहो कि थोड़ी देर जाकर आराम करे, बल्कि सो रहे तो बेहतर है। इन्शाअल्लाहु तआला सुकून हो जाएगा।

३. जिधर के हिस्से में दर्द हो, उस ओर से गाल पर हाथ फेरता जाए और यह आयत पढ़ता जाए—

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ اَوَلَمْ يَرَ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ نُّطْفَةٍ
فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ۝

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम०अ व लम् यरलइंसानु अन्ना ख़लक़्ना हु मिन नुत्फ़तिन फ़ इज़ा हु व ख़सीमुम मुबीन०

और आयतल कुर्सी और ये आयतें पढ़े—

وَلَهٗ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ وَ
النَّهَارِ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝ ثُمَّ سَوّٰىهُ وَنَفَخَ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِهٖ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ
وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْئِدَةَ ۝ وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ۝

व लहू मा स क न फ़िल्लैलि वन्नहारि व हु वस्स मीउल अलीम सुम म सव्वा हु व न फ़ ख फ़ीहि मिर्रू हि ही व ज अ ल लकुमुस्सम् अ वल अब्सा र वल अफ़ इ द त व नुनज़्ज़िलु मिनल क़ुरआनि मा हु व शिफ़ा उंव व रह्मतुल्लिल मुअ्मिनी न०

१४. कान का दर्द

قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اَمَّنْ يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَمَنْ يُّخْرِجُ

الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ فَسَيَقُولُونَ اللَّهُ فَقُلْ أَفَلَا
تَتَّقُونَ ○ (پاره ١١ رکوع ٩)

१. कुल मंय्यर्ज़ु क़ुकुम मिनस्समाइ वल अर्ज़ि अम्मयं यम्लि-कुस्सम अ वल अब्सा र मंय्युख्रिजुल हय य मिनल मय्यिति व युख्रि-जुल मय य त मिनल हय्यि व मंय्युदब्बिरुल अम् र फ़ स यक़ूलूनल्लाहु फ़ क़ुल अ फ़ ला त त्तक़ून०

—पारा ११, रुकूअ ९

तर्जुमा—आप (इन मुश्रिकों से) कहिए कि (बतलाओ) वह कौन है जो तुमको आसमान और ज़मीन से रोज़ी पहुंचाता है या (यह बतलाओ) वह कौन है जो (तुम्हारे) कानों और आंखों पर पूरा अख़्तियार रखता है। और वह कौन है जो जानदार (चीज़) को बे-जान (चीज़) से निकालता है और बेजान (चीज़) को जानदार से निकालता है और वह कौन है जो तमाम कामों की तद्‌बीर करता है। (उनसे ये सवाल कीजिए) सो ज़रूर वे (जवाब में) यही कहेंगे कि (इन सब का करने वाला) अल्लाह (है) तो उनसे कहिए कि फिर (शिर्क से) क्यों नहीं परहेज़ करते?

ख़ासियतें—यह आयत बच्चे की पैदाइश में आसानी और कान में दर्द और रोज़ी में सहूलत के लिए मीठे कद्दू की पोस्त पर स्याही से लिखकर बच्चा जननेकी तक्लीफ़ में पड़ी औरत के दाहिने बाज़ू पर बांध देने से पैदाइश में सहूलत होती है और क़लईदार तांबे की तश्तरी पर अर्क़ गोंदना से लिख कर साफ़ शहद से धोकर आग पर पका कर जिसके कान में दर्द हो, तीन बूंदें छोड़ दे, इन्शाअल्लाहु तआला नफ़ा हो और जो काग़ज़ पर लिख कर नीले कपड़े में तावीज़ बना कर दाहिने बाज़ू पर बांधे, रोज़ी के रास्तों के खुलने में आसानी हो।

१५. आंख का आना

१. इन हर्फ़ों को ब हर्फ़े मुकर्रर नौचंदी हफ़्ते में लिख कर, धोकर पिए, तो साल भर तक आंख आने से बचा रहे। वे हुरूफ़ यह हैं—

الٓمٓ. الٓمٓصٓ. الٓمٓرٰ. الٓرٰ. كٓهٰيٰعٓصٓ. طٰهٰ. طٰسٓمٓ. طٰسٓ. يٰسٓ. صٓ.
قٓ. نٓ.

अलिफ़-लाम-मीम, अलिफ़-लाम-मीम-स्वाद, अलिफ़-लाम-मीम-रा, अलिफ़-लाम-रा, काफ़-हा-या-ऐन-स्वाद, त्वा-हा, त्वा-सीम-मीम, त्वा-सीन, या-सीन, स्वाद, क़ाफ़, नून०

قَالُوا تَاللَّهِ لَقَدْ آثَرَكَ اللَّهُ عَلَيْنَا وَإِنْ كُنَّا لَخَاطِئِينَ ○ قَالَ لَا تَثْرِيبَ
عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ يَغْفِرُ اللَّهُ لَكُمْ وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ○ اذْهَبُوا بِقَمِيصِي هَٰذَا
فَأَلْقُوهُ عَلَىٰ وَجْهِ أَبِي يَأْتِ بَصِيرًا وَأْتُونِي بِأَهْلِكُمْ أَجْمَعِينَ ○ (پاره ١٣ رکوع ٤)

२. क़ालू तल्लाहि······वअ्तूनी बिअह्लिकुम अज्मईन०

—पारा १३, रुकूअ ४

तर्जुमा—वे कहने लगे कि ख़ुदा की क़सम! कुछ शक नहीं तुमको अल्लाह तआला ने हम पर फ़ज़ीलत दी और बेशक हम (इस में) ग़लती पर थे। (ख़ुदा के लिए) माफ़ कर दो। यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि नहीं तुम पर आज कोई इल्ज़ाम नहीं। अल्लाह तआला तुम्हारा क़ुसूर माफ़ करे और वह सब मेहरबानों से ज़्यादा मेहरबान है। अब तुम मेरा यह कुर्ता (भी) लेते जाओ और इसको मेरे बाप के चेहरे पर डाल दो, (इससे) उनकी आंखें रोशन हो जाएंगी। (और यहां तशरीफ़ ले आएंगे) और अपने (बाक़ी) घर वालों को (भी), सब को मेरे पास ले आओ।

ख़ासियत—यह आयत आंख के तमाम दर्द व तक्लीफ़ और आंख की सफ़ेदी के वास्ते, जिनके इलाज से डाक्टर परेशान हो गये हों, नफ़ा देने वाली है—

सुर्मा असफ़ हानी एक जुज़, एलवा आधा जुज़, मूंगा आधा जुज़ ज़ाफ़रान या मीरान चीनी, समुन्दर झाग आधा-आधा जुज़, नागर नोथा आधा जुज़, ख़रीफ़ की अव्वल बारिश का पानी और नहर और चश्मे का पानी जो जुमेरात के दिन दिसम्बर के महीने में सूरज निकलने से पहले लिया गया हो (और एक नुस्ख़े में जनवरी है) फिर ये सब दवाएं अलग-अलग पीस कर और सबको मिला कर, फिर सब को हरे पेड़ के पानी में पीसे और सूखने तक फिर उन को ख़रीफ़ की बारिश के पानी में पीस कर सुखाए, फिर तीसरी बार दिसम्बर या जनवरी के साथ पीसे, फिर चौथी बार शहद में जिसको आग न लगी हो और सिरके में पीसे, जब सूख जाए इन सब आयतों को शीशे के बर्तन में ज़ाफ़रान से लिख कर और जनवरी के पानी से धोकर फिर सबको उस पानी में पीस कर पांचवीं बार सुखा ले और हर मर्ज़ के लिए उसका इस्तेमाल करे।

الله نور السموت والارض مثل نوره كمشكوة فيها مصباح المصباح
في زجاجة الزجاجة كانها كوكب دري يوقد من شجرة مبركة زيتونة لا
شرقية ولا غربية يكاد زيتها يضيء ولو لم تمسسه نار نور على نور يهدي
الله لنوره من يشاء ويضرب الله الامثال للناس والله بكل شيء عليم في
بيوت اذن الله ان ترفع ويذكر فيها اسمه يسبح له فيها بالغدو والاصال
رجال لا تلهيهم تجارة ولا بيع عن ذكر الله واقام الصلوة وايتاء الزكوة
يخافون يوما تتقلب فيه القلوب والابصار ليجزيهم الله احسن ما عملوا و
يزيدهم من فضله والله يرزق من يشاء بغير حساب (پ ١٨ ع ١١)

३. अल्लाहु नूरुस्समावाति……बिग़ैरि हिसाब०

—पारा १८, रुकूअ ११

ख़ासियत—अगर आयी हुई आंख पर रोज़ाना सुबह के वक़्त ऊपर की आयतें तीन बार पढ़ कर दम किया करे, इ शाअल्लाहु तआला आंख ठीक हो जाएगी।

४. सूरः हाम-मीम सज्दा (पारा २४)

ख़ासियत—इसको लिख कर बारिश के पानी से धोकर उस में सुर्मा पीस कर लगाने से या ख़ुद उस पानी से आंख धोने से सफ़ेदी और आंख न आने और नाख़ूने वग़ैरह को नफ़ा होता है।

५. सूरः मुल्क (पारा २९)

ख़ासियत—आयी आंख पर तीन दिन तक तीन बार हर दिन दम करने से आराम हो जाए।

६. आंख आने पर यह लिख कर बांध दिया जाए—

اذهبوا بقميصي هذا فالقوه
على وجه ابي يات بصيرا ۔ فكشفنا عنك غطاءك فبصرك اليوم حديد

इज़्हबू बि क़मीसी हाज़ा फ़ अल्क़ूहु अला वज्हि अबी यानि बसीरा फ़क शफ़्ना अन क ग़िता अ क फ़ ब स रुकल यौ म हदीद०

१६. आंख का दर्द

१. सूरः फ़ातिहा

ख़वास—फ़ज्र की सुन्नत व फ़र्ज़ के दर्मियान ४१ बार पढ़ कर आंख पर दम करने से दर्द जाता रहता है और दूसरे मर्ज़ों के लिए भी फ़ायदेमंद और आज़माया हुआ है और बड़ी शर्त यह है कि आमिल व मरीज़ दोनों अच्छे अक़ीदे के हों।

१७. गुर्दे का दर्द

१. सूरः ईलाफ़ (पारः ३०)

ख़वास—खाने पर दम करके खाने से हर क़िस्म के नुक़सान व तुख़्मे से बचा रहे और गुर्दे के दर्द में फ़ायदेमंद है।

१८. पथरी को तोड़ कर निकाले

१. सूरः अ लम नश्रह् (पारा ३०)

ख़ासियत—सीने पर दम करने से तंगी और दिल के दर्द को सुकून हो। इसका पीना पथरी को चूर-चूर करके निकाल देता है।

१९. पसली का दर्द (नमूनिया)

وَإِن يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ ۖ وَإِن يَمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٧﴾ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ

१. व इंय्यम्सस्कल्लाहु बि जुर्रिन फ़ ला काशि फ़ लहू इल्ला हु व व इंय्यम्सस् क बिख़ैरिन फ़ हु व अला कुल्लि शैइन क़दीर० व हुवल क़ाहिरु फ़ौक़ अिबादिही वहु वल हकीमुल ख़बीर०

—पारा ७, रुकूअ ८

तर्जुमा—और अगर तुझको अल्लाह तआला कोई तक्लीफ़ पहुंचाएं तो उसका दूर करने वाला सिवाए अल्लाह तआला के और कोई नहीं और अगर तुझको कोई नफ़ा पहुंचाएं, तो वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाले हैं और वही अल्लाह तआला अपने बन्दों के ऊपर ग़ालिब हैं, बरतर हैं और वही बड़ी हिक्मत वाले और पूरी ख़बर रखने वाले हैं।

ख़ासियत—ये आयतें रात के आख़िर में काग़ज़ पर लिख कर जिस शख़्स को पसली या नमूनिया या हाथों में दर्द हो, उसको

बांध दें, इन्शाअल्लाहु तआला शिफ़ा होगी और जिस शख़्स को ज़्यादा रंज व ग़म हो, इन आयतों को सोते वक़्त सात बार पढ़ कर सो रहे। जिस वक़्त जागेगा, रंज व ग़म सब दूर होता मालूम होगा।

२०. आंख की रोशनी

فَكَشَفْنَا عَنكَ غِطَاءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيدٌ [illegible]

१. फ क शफ़्ना अन् क ग़िता अ क फ़ बसुरु कल यौ म हदीद०

—पारा २६, रुकूअ १२

तर्जुमा—सो अब हमने तुझ पर से तेरा परदा (ग़फ़लत का) हटा दिया। आज (तो) तेरी निगाह बड़ी तेज़ है।

ख़ासियत—इस आयत को हर नमाज़ के बाद तीन बार उंगली पर पढ़ कर दम करके आंखों पर लगाये, इन्शाअल्लाहु तआला रोशनी में कमी न होगी, बल्कि जितना नुक़सान हो गया होगा, वह भी जाता रहेगा।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ إِنَّا أَنزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ ﴿١﴾ وَمَا أَدْرَاكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ﴿٢﴾ لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ أَلْفِ شَهْرٍ ﴿٣﴾ تَنَزَّلُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِم مِّن كُلِّ أَمْرٍ ﴿٤﴾ سَلَامٌ هِيَ حَتَّىٰ مَطْلَعِ الْفَجْرِ ﴿٥﴾

२. बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० इन्ना अन्ज़ल्नाहु फ़ी लैलतिल क़द्रि० व मा अद्रा क मा लैलतुल क़द्रि० लैलतुल क़द्रि ख़ैरुम मिन अल्फ़ि शह्र० तनज़्ज़लुल मलाइकतु वर्रूहु फ़ीहा बि इज़्नि रब्बिहिम मिन कुल्लि अम् रिन सलामुन हि य हत्ता मत् ल अिल फ़ज्रि०

ख़ासियत—जो शख़्स वुज़ू के बाद आसमान की तरफ़ नज़र करके एक बार पढ़ लिया करे, तो इन्शाअल्लाहु तआला उसकी रोशनी में कमी न होगी।

३. सूरः कुव्विरत (पारा ३०)

खासियत—इसको पढ़ कर आंख पर दम करने से रोशनी बढ़े और आंख का आना और जाला दूर हो।

४. अत्तारिक़ (क़द दान)

खासियत—जिसको सांस की घुटन या थकन या जिस्म की ऐंठन हो, इसको लिख कर बदन पर फेर दे और पिए तो नफ़ा हो और अगर रोशनी कमज़ोर हो तो अपनी आंख पर फेरे, निगाह में तरक्क़ी हो।

२१. बुखार व कंपन

१. सूरः अंकबूत (पारा ३०)

खासियत—चौथिया के वास्ते इसको लिख कर पानी से धोकर पिए। ग़म व सुस्ती दूर करने, खुशी हासिल करने और दिल खोलने के लिए भी मुफ़ीद है।

२. सूरः लुक़मान (पारा २१)

खासियत—इसको लिख कर पीने से पेट की सब बीमारियां और बुखार और तिजारी और चौथिया जाता रहता है और उसको पढ़ने से डूबने से बचा रहे।

२२. मिरगी के लिए

१. एक अल्लाह वाले बुज़ुर्ग की लौंडी को मिरगी थी। उन्होंने उसके कान में यह पढ़ा—

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥ الٓمّٓصٓ ٥ طٰسٓمٓ ٥ كٓهٰيٰعٓصٓ ٥ يٰسٓ ٥ وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ٥ حٰمٓ ٥
عٓسٓقٓ ٥ نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ ٥

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० अलिफ़-लाम-मीम-स्वाद, त्वा-सीम मीम, काफ़-हा-या-ऐन-स्वाद, या-सीन० वल् कुरआनिल हकीम० हामीम, ऐन-सीन-क़ाफ़, नून, वल-क़ ल मि व मा यस्तुरून० वह बिल्कुल अच्छी हो गयी और फिर मिरगी नहीं उठी।

२. रजब की नौचन्दी जुमेरात को चांदी के नग पर हर्फ़ खुदवा कर पहने तो हर डर से अम्न में रहे। अगर हाकिम के पास जाए तो उसकी क़द्र हो और सब काम पूरे हों और अगर ग़ज़बनाक आदमी के सर पर हाथ फेर दे तो उसका गुस्सा जाता रहे और अगर प्यास की तेज़ी में उसको चूस ले तो सुकून हो जाए और अगर बारिश के पानी में उसको रात के वक़्त डाल कर सुबह को नहार मुंह पिए, तो हाफ़िज़ा मज़बूत हो जाए और जो बेकार आदमी पहने, काम में लग जाए और अगर मिरगी वाले को पहनाया जाए तो मिरगी जाती रहे। वे हुरूफ़ ये हैं—

الٓمّٓ ٥ الٓمّٓصٓ ٥ الٓمّٓرٰ ٥ كٓهٰيٰعٓصٓ ٥ طٰهٰ
طٰسٓ ٥ طٰسٓمٓ ٥ يٰسٓ ٥ صٓ ٥ حٰمٓ ٥ حٰمٓ عٓسٓقٓ ٥ قٓ ٥ نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ ٥

अलिफ़-लाम-मीम, अलिफ़-लाम-मीम-स्वाद, अलिफ़-लाम-मीम-रा, काफ़-हा-या-ऐन-स्वाद, त्वा-हा, त्वा-सीन, त्वा-सीम-मीम, या-सीन, स्वाद, हा-मीम, हामीम, ऐन-सीन-क़ाफ़, क़ाफ़, नून, वल क़ लमि व मा यस्तुरून०

३- सूरः अब्स (पारा ३०)

खासियत—मिरगी वाले और बेहोशी वाले के कान में पढ़ना मुफ़ीद है और उसका पानी बुखार वाले को नफ़ा पहुंचाएगा।

२३. फ़ालिज के लिए

इब्ने क़ुतैबा ने एक फ़ालिज मारे शख़्स से नक़ल किया है कि मैंने

ज़मज़म के पानी से दावात दुरुस्त, करके और उससे एक बर्तन में 'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम और आख़िरी सूरः हश्र की आयतें—

هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ۝ هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ۚ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ وَلَا يَزِيْدُ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا ۝

हुवल्लाहुल्लज़ी······व ला यज़ीदुज़्ज़ालिमी न इल्ला ख़सारा॰

लिख कर ज़मज़म से धोकर पी लिया, अल्लाह तआला ने शिफ़ा अता फ़रमायी—

२४. लक़वा कूलंज के लिए

قَدْ نَرٰى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَآءِ ۚ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضٰىهَا ۖ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ۗ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۗ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ۝

[illegible]

१. क़द नरा ······बिग़ाफ़िलिन अम्मा यअ् मलून॰

—पारा २, रुकूअ १

तर्जुमा—हम आप के मुंह का (यह) बार-बार आसमान की तरफ़ उठना देख रहे हैं, इस लिए हम आपको उसी क़िब्ले की तरफ़ मुतवज्जह कर देंगे, जिसके लिए आपकी मर्ज़ी है (लो) फिर अपना चेहरा (नमाज़ में) मस्जिदे हराम (काबा) की तरफ़ किया कीजिए और तुम सब लोग भी जहां कहीं भी मौजूद हो, अपने चेहरे को उसी (मस्जिदे हराम) की तरफ़ कर लिया करो और ये अहले

किताब भी यक़ीनन जानते हैं कि यह (हुक्म) बिल्कुल ठीक है (और) उनके परवरदिगार की तरफ़ से (है) और अल्लाह तआला उनकी कार्रवाइयों से कुछ बे-ख़बर नहीं है।

ख़ासियत—यह आयत कूलंज और लक़वा और रियाह के लिए फ़ायदेमंद है, जो शख़्स इसमें मुब्तला हो, क़लई और तांबे की तश्तरी लेकर उसको ख़ूब साफ़ करके उससे यह आयत मुश्क व गुलाब से लिख कर पाक पानी से धोकर लक़वा वाले का मुंह धुलाया जाए और मुंह धोने के बाद उस तश्तरी में तीन घंटे तक नज़र रखे, इस तरह तीन दिन-तक करे और रियाह और फ़ालिज वाले पर वह पानी छिड़का जाए।

२. सूरः ज़िल ज़ाल (पारा ३०)

ख़ासियत—बग़ैर इस्तेमाल वाले तश्त में इसका पानी पीना लक़वे में मुफ़ीद है।

२५. कोढ़ के लिए

१. कोढ़ वग़ैरह को नफ़ा देने वाले अमल वग़ैरह—इब्ने क़ुतैबा ने कहा कि किसी कोढ़ वाले ने, जिसका गोश्त बिल्कुल गिरने लगा था, किसी बुज़ुर्ग से शिकायत की। उन्होंने यह आयत पढ़ कर फूंका, नयी खाल निकल आई और अच्छा हो गया—

وَاَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ اَنِّيْ مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ۝

व अय्यू ब इज़ नादा रब्बहू अन्नी मस्सनियज़्ज़ुर्रु व अन् त अर्ह-र्रा हि मीन॰

२६. सफ़ेद दाग़ के लिए

१. अल-मजीदु (बुज़ुर्ग)

ख़ासियत—अगर सफ़ेद दाग़ वाला अय्यामे बीज़ (चांद की

१३-१४-१५) में रोज़ा रखे और हर रोज़ इफ़्तार के वक़्त उसको ज़्यादा से ज़्यादा पढ़े, इन्शाअल्लाह मर्ज़ अच्छा हो जाए।

२. कलबी रह० से एक शख़्स ने हिकायत बयान की कि मुझको सफ़ेद दाग़ हो गया था, किसी के पास न बैठ सकता था। एक बुज़ुर्ग से मुलाक़ात हुई। उन्होंने यह आयत पढ़ कर फ़रमाया, मुंह खोल। मैंने मुंह खोल दिया। उन्होंने मेरे मुंह में थूक दिया। अल्लाह तआला ने शिफ़ा बख़्श दी। आयत यह है—

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ اِنِّىْ قَدْ جِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ اَنِّىْ اَخْلُقُ
لَكُمْ مِّنَ الطِّيْنِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ فَاَنْفُخُ فِيْهِ فَيَكُوْنُ طَيْرًا بِاِذْنِ اللّٰهِ وَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا
تَاْكُلُوْنَ وَمَا تَدَّخِرُوْنَ فِىْ بُيُوْتِكُمْ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० इन्नी क़द जिअ्तुकुम बि आय तिम मिर्रब्बिकुम इन्नी अख़्लुक़ु लकुम मिनत्तीनि क हैअतित्ति फ़अन्फ़ुख़ु फ़ीहि फ़ यकूनु तैरम बिइज़्निल्लाहि व उनब्बिउकुम बिम ताकुलू न व मा तद्दख़िरू न फ़ी बुयूतिकुम इन न फ़ी ज़ालि क ल आय तल्लकुम इन कुन्तुम मुअ्मिनी न०

२७. ख़ारिश के लिए

१. किसी शख़्स को ख़ारिश हो गयी थी और किसी तद्बीर फ़ायदा न होता था। एक क़ाफ़िले के साथ मक्के को चला और चल ने आजिज़ होकर क़ाफ़िले से पीछे रह गया। हज़रत अली कर्रमल्ला वज्हहू के मज़ार पर ठहर गया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ख़्वाब में देखा और अपने मर्ज़ की शिकायत अर्ज़ की। आपने आयत पढ़ी—

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ

عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ ۝

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० फ़ कसौनल अिज़ा म लहमन सुम् म अन्शानाहु ख़ल्क़न आ ख़ र फ़ तबारकल्लाहु अहसनुल ख़ालिक़ीन०

सुबह को अच्छा-ख़ासा उठा।

२८. दाद

१. एक धागा लेकर उसमें यह आयत तीन बार पढ़ कर तीन गिरह लगाये और वह धागा मरीज़ के बांध दिया जाए।

وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيْثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيْثَةِ ِۨاجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْاَرْضِ مَا لَهَا
مِنْ قَرَارٍ ۝

व म स लु कलिमतिन ख़बीस तिन क श ज रतिन ख़बीसति-निज्तुस्सत मिन फ़ौक़िल अर्ज़ि मा ल हा मिन क़रार०

فَاَصَابَهَآ اِعْصَارٌ فِيْهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ ۝ (پاره ۳ رکوع ۴)

२. फ़ अ सा ब हा इअ् सारुन फ़ीहि नारुन फ़ह्त र क़ त०

—पारा ३, रुकूअ ४

तरकीबे अमल—तो उस आयत पर एक तावीज़ बनाया जाए, जिसमें दाग़ (का असर) हो, फिर वह दाग़ जल जाए।

ख़ासियत—दाद पर लिख देने से दाद ख़त्म हो जाता है।

२९. [illegible] के लिए

[illegible] का अमल—और मैंने हज़रत वाजिद से सुना, फ़रमाते हैं कि जब चेचक की बीमारी ज़ाहिर हो तो नीला धागा ले और उस पर सूरः रहमान पढ़े और जितनी बार फूं—

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ

फ़बिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान०

पर पहुंचे तो एक गिरह दे और उस पर फूंक डाल और धागे को लड़के की गरदन में बांध दे, हक़ तआला उसको उस बीमारी से आराम देगा।

३०. उम्मुस्सिबयान

الٓمٓ ۝ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ۝ نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَأَنْزَلَ التَّوْرَاةَ وَالْإِنْجِيلَ ۝ مِنْ قَبْلُ هُدًى لِلنَّاسِ وَأَنْزَلَ الْفُرْقَانَ ۝ [illegible]

१. अलिफ़-लाम-मीम० अल्लाहु ला इला ह इल्ला हुवल हय्युल क़य्यूम० नज़्ज़ ल अलै कल किता ब बिल हक़्क़ि मुसद्दिक़ल्लिमा बै न यदैहि व अन्ज़लत्तौरा त वल् इंजी ल मिन क़ब्लु हुदल्लिन्नासि व अन्ज़ लल् फ़ुर्क़ान०   पारा ३, रुकूअ ९

तर्जुमा—अलिफ़-लाम-मीम। अल्लाह तआला ऐसे हैं कि उनके सिवा कोई माबूद बनाने के क़ाबिल नहीं और वह ज़िंदा (जावेद) हैं, सब चीज़ों के संभालने वाले हैं। अल्लाह तआला ने आपके पास क़ुरआन भेजा है, जानकारी के साथ इस तरह कि वह तस्दीक़ करता है उन (आसमानी) किताबों को, जो इससे पहले आ चुकी हैं और इसी तरह भेजा था तौरेत और इंजील को इससे पहले के लोगों की हिदायत के वास्ते और अल्लाह तआला ने भेजे मोजज़े।

ख़ासियत—मुश्क, गुलाब, ज़ाफ़रान से लिख कर एक नरकुल में, जो सूरज निकलने से पहले काटा गया हो, रख कर उसके मुंह पर मोम लगा कर लड़के के गले में लटका दिया जाए, तो मुर्गी और उम्मुस्सिबयान, बुरी नज़र और तमाम हादसों से बचा

२. सूरः फ़लक़ और सूरः नास (पारा ३०)

ख़ासियत—हर क़िस्म के दर्द व बीमारी, जादू और बुरी नज़र वग़ैरह के लिए पढ़ना और दम करना और लिख कर बांधना मुफ़ीद है। और सोते वक़्त पढ़ने से हर क़िस्म की आफ़त से बचा रहे और अगर लिख कर बच्चे के बांध दे तो उम्मुस्सिबयान वग़ैरह से हिफ़ाज़त रहे और अगर हाकिम के सामने जाने के वक़्त पढ़ ले तो उस की बुराई से बचा रहे।

३१. उज़्व का ढीला पड़ना (फ़ालिज)

إِنَّمَا يَسْتَجِيبُ الَّذِينَ يَسْمَعُونَ ۘ وَالْمَوْتَىٰ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ ثُمَّ إِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ۝ [illegible]

१. इन्नमा यस्तजी बुल्लज़ी न यस्मऊ न वल् मौता यब्असुहु-मुल्लाहु सुम् म इलैहि युर्जऊन०   —पारा ७, रुकूअ १०

तर्जुमा—वही लोग क़ुबूल करते हैं, जो सुनते हैं और मुर्दों को अल्लाह तआला ज़िंदा करके उठाएंगे, फिर सब अल्लाह ही की तरफ़ लाए जाएंगे।

ख़ासियत—जिसकी आंख में कुछ ख़राबी हो या किसी उज़्व में ढीलापन हो, तीन दिन लगातार रोज़ा रखे और दूध व शकर से इफ़्तार करे और आधी रात के वक़्त उठ कर तांबे के क़लम से ज़ाफ़रान व गुलाब से अपने या दूसरे मरीज़ के दाहिने हाथ पर लिख कर चाट ले, तीन दिन तक ऐसा ही करे।

३२. हड्डी टूट जाना

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۖ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ

१. फ़ इन तवल्लौ फ़क़ुल हस्बियल्लाहु ला इला ह इल्ला हु व अलैहि तवक्कल्तु व हु व रब्बुल अर्शिल अज़ीम०

—पारा ११, रुकूअ ५

ख़ासियत—हज़रत अबूदर्दा रज़ि०से नक़ल किया गया है कि जो शख़्स इस आयत को हर दिन सौ बार पढ़े, दुनियां व आख़िरत की मुहिमों के लिए काफ़ी है और एक रिवायत में है कि वह आदमी गिर कर, डूब कर और चोट खाकर न मारेगा, और लैस बिन साद से नक़ल किया गया है कि किसी शख़्स की रान में चोट आ गयी थी, जिससे वह टूट गयी थी। कोई शख़्स उसके सपने में आया और कहा कि जिस मौक़े में दर्द है, उस जगह अपना हाथ रख कर यह आयत पढ़ो, पस उसकी रान अच्छी हो गयी और उसकी ख़ासियत यह भी है कि उस को लिखकर, बांध कर जिस हाकिम के सामने, जिस काम के लिए जाए, उसकी ज़रूरत अल्लाह के हुक्म से पूरी करे।

२३. नींद आना

إِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ۚ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ۝

१. इन्नल्ला ह व मलाइ क त हू युसल्लू न अलन्नबीयि या ऐ युहल्ल जी न आ म नू सल्लू अलैहि व सल्लिमू तस्लीमा०

ख़ासियत—इसको पढ़ने से नींद ख़ूब आती है।

२४. निस्यान (भूलना)

१. अर्रहमानु (बड़े मेहरबान)

ख़ासियत—हर नमाज़ के बाद सौ बार पढ़ने से दिल की ग़फ़लत और भूलने का मर्ज़ दूर हो।

२५. पेशाब रुक जाना

१. इब्नुलकलबी ने लिखा है कि किसी शख़्स का पेशाब रुक था। एक फ़ाज़िल ने यह आयत लिख कर बांध दी—

فَفَتَحْنَآ اَبْوَابَ السَّمَآءِ بِمَآءٍ مُّنْهَمِرٍ ۝ وَّفَجَّرْنَا الْاَرْضَ عُيُوْنًا فَالْتَقَى الْمَآءُ
عَلٰٓى اَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ۝

फ़ फ़तह्ना अब्वाबस्समाइ बिमाइम मुन्हमिर० व फ़ज्जर्नल अर ज़ुयूनन फ़ल तक़ल माउ अला अम्रिन क़द क़ुदिर०

उसको शिफ़ा हो गयी।

२६. एहतलाम

وَالسَّمَآءِ وَالطَّارِقِ ۝ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الطَّارِقُ ۝ النَّجْمُ الثَّاقِبُ ۝ اِنْ كُلُّ
نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ۝ فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ۝ خُلِقَ مِنْ مَّآءٍ دَافِقٍ ۝
يَّخْرُجُ مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَآئِبِ ۝ اِنَّهٗ عَلٰى رَجْعِهٖ لَقَادِرٌ ۝ يَوْمَ تُبْلَى
السَّرَآئِرُ ۝ فَمَا لَهٗ مِنْ قُوَّةٍ وَّلَا نَاصِرٍ ۝

१. वस्समाइ वत्तारिक़ि० व मा अद्रा क मत्तारिक़ु० अन्नजु-इक़िबु० इन कुल्लु नफ़्सिल्लम्मा अलैहा हाफ़िज़० फ़ल् यन्ज़ुरिल जानु मिम मा ख़ुलिक़० ख़ुलि क़ मिम माइन दाफ़िक़- यख़्रुजु मिम बैनिस्सुल्बि वत्तराइबि० इन्नहू अला रज्अि ही ल क़ादिर० यौ म तुब्लस्सराइर० फ़ मा लहू मिन क़ूवतिव व ला नासिर०

सोते वक़्त पढ़ने से एहतलाम से हिफ़ाज़त रहती है।

२. अगर पूरी सूरः नूह सोते वक़्त पढ़ ले तो एहतलाम से महफ़ूज रहे।

९७. परेशान ख़्वाब

१. सूरः मआरिज (पारा २९)

फ़ायदा—सोते वक़्त पढ़ने से जनाबत और परेशान ख़्वाब से बचा रहे।

لَهُمُ الْبُشْرٰى فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ۚ لَا تَبْدِيْلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۚ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ

२. लहुमुल बुशरा फ़िल हयातिद्दुन्या व फ़िल आख़िरति ला तब्दी ल लिकलिमातिल्लाहि ज़ालि क हुवल फ़ौज़ुल अज़ीम०

—पारा ११, रुकूअ १२

तर्जुमा—उनके लिए दुनिया की ज़िंदगी में भी और आख़िरत में भी (अल्लाह की तरफ़ से डर व ग़म से बचने की) ख़ुशख़बरी है (और) अल्लाह की बातों में (यानी वायदों में) कुछ फ़र्क़ हुआ नहीं करता। यह (ख़ुशख़बरी, जिसका ज़िक्र किया गया) बड़ी कामियाबी है।

फ़ायदा—जिस को बद-ख़्वाबी होती हो और परेशान ख़्वाब देखता हो, वह इसको लिख कर गले में डाले या सोते वक़्त पढ़ लिया करे, इन्शाअल्लाह बद-ख़्वाबी से महफ़ूज़ रहेगा।

९८. ज़बान का खुलना

१. सूरः बनी इसराईल (पारा १५)

फ़ायदा—अगर ज़ाफ़रान से लिख कर पानी से धोकर लड़के को पिलाए जिसकी ज़ुबान न चलती हो, तो ज़ुबान चलने लगे।

आमाले कुरआनी यानी आसारे सिफ़ाती

हिस्सा सोम

अस्माउल हुस्ना

१. पढ़ने की तर्कीब—

هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ جَلَّ جَلَالُهُ الرَّحْمٰنُ جَلَّ جَلَالُهُ الرَّحِيْمُ جَلَّ جَلَالُهُ

हुवल्लाहुल्लज़ी ला इला ह इल्ला हु व जल ल जलालुहुर्रहमानु जल ल जलालुहुर्रहीमु जल ल जलालुहू आख़िर तक इसी तरह पढ़ते चले जाइए—

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम०

اَلْقُدُّوْسُ	اَلْمَلِكُ	اَلرَّحِيْمُ	اَلرَّحْمٰنُ	اَللّٰهُ
अल-क़ुद्दूसु	अल-मलिकु	अर्रहीमु	अर्रहमानु	अल्लाहु
बहुत पाक	सब के बादशाह	निहायत रहम वाले	बड़े मेहरबान	ख़ुदा
اَلْجَبَّارُ	اَلْعَزِيْزُ	اَلْمُهَيْمِنُ	اَلْمُؤْمِنُ	اَلسَّلَامُ

अल-जब्बारु	अल-अज़ीज़ु	अल-मुहैमिनु	अल-मुअ्मिनु	अस-सलामु
दुरुस्त करने वाले	सब से ग़ालिब	निगहबान	ईमान देने वाले	बे-ऐब
اَلْغَفَّارُ	اَلْمُصَوِّرُ	اَلْبَارِئُ	اَلْخَالِقُ	اَلْمُتَكَبِّرُ
अल-ग़फ़्फ़ारु	अल-मुसव्विरु	अल-बारिउ	अल-ख़ालिक़ु	अल-मु त कब्बिरु
बख़्शने वाले	सूरत बनाने वाले	बनाने वाले	पैदा करने वाले	तकब्बुर करने वाले
اَلْعَلِيْمُ	اَلْفَتَّاحُ	اَلرَّزَّاقُ	اَلْوَهَّابُ	اَلْقَهَّارُ
अल-अलीमु	अल-फ़त्ताहु	अर-रज़्ज़ाक़ु	अल-वह्हाबु	अल-क़ह्हारु
जानने वाले	खोलने वाले	रिज़्क़ देने वाले	बड़े देने वाले	बड़े ग़ालिब
اَلْمُعِزُّ	اَلرَّافِعُ	اَلْخَافِضُ	اَلْبَاسِطُ	اَلْقَابِضُ
अल-मुइज़्ज़ु	अर-राफ़िउ	अल-ख़ाफ़िज़ु	अल-बासितु	अल-क़ाबिज़ु
इज़्ज़त देने वाले	बुलंद करने वाले	पस्त करने वाले	खोलने वाले	बंद करने वाले
اَلْعَدْلُ	اَلْحَكَمُ	اَلْبَصِيْرُ	اَلسَّمِيْعُ	اَلْمُذِلُّ
अल-अद्लु	अल-हकीमु	अल-बसीरु	अस-समीउ	अल-मुज़िल्लु
इन्साफ़ करने वाले	फ़ैसला करने वाले	देखने वाले	सुनने वाले	ज़िल्लत देने वाले
اَلْغَفُوْرُ	اَلْعَظِيْمُ	اَلْحَلِيْمُ	اَلْخَبِيْرُ	اَللَّطِيْفُ
अल-ग़फ़ूरु	अल-अज़ीमु	अल-हलीमु	अल-ख़बीरु	अल-लतीफ़ु
बड़े बख़्शने वाले	बुज़ुर्ग	बुर्दबार	ख़बरदार	मेहरबान

اَلْمُقِيْتُ	اَلْحَفِيْظُ	اَلْكَبِيْرُ	اَلْعَلِيُّ	اَلشَّكُوْرُ
अल-मुक़ीतु	अल-हफ़ीज़ु	अल-कबीरु	अल-अलीयु	अश-शकूरु
क़ूवत देने वाले	निगहबान	बड़े	सबसे बुलंद	क़द्रदान
اَلْمُجِيْبُ	اَلرَّقِيْبُ	اَلْكَرِيْمُ	اَلْجَلِيْلُ	اَلْحَسِيْبُ
अल-मुजीबु	अर्रक़ीबु	अल-करीमु	अल-जलीलु	अल-हसीबु
क़ुबूल करने वाले	निगहबान	बख़्शिश करने वाले	बुज़ुर्ग क़द्र	किफ़ायत करने वाले
اَلْبَاعِثُ	اَلْمَجِيْدُ	اَلْوَدُوْدُ	اَلْحَكِيْمُ	اَلْوَاسِعُ
अल-बाइसु	अल-मजीदु	अल-वदूदु	अल-हकीमु	अल-वासिउ
भेजने वाले रसूलों के	बुज़ुर्ग	दोस्तदार	हिकमत वाले	फ़राख़ी वाले
اَلْمَتِيْنُ	اَلْقَوِيُّ	اَلْوَكِيْلُ	اَلْحَقُّ	اَلشَّهِيْدُ
अल-मतीनु	अल-क़वीयु	अल-वकीलु	अल-हक़्क़ु	अश-शहीदु
मज़बूत	तवाना	कारसाज़	ख़ुदाई का सज़ावार	बड़े मौजूद
اَلْمُعِيْدُ	اَلْمُبْدِئُ	اَلْمُحْصِيْ	اَلْحَمِيْدُ	اَلْوَلِيُّ
अल-मुईदु	अल-मुब्दिउ	अल-मुह्सी	अल-हमीदु	अल-वलीयु
लौटाने वाले	पैदा करने वाले	घेरने वाले	तारीफ़ किये गये	मदद करने वाले
اَلْوَاجِدُ	اَلْقَيُّوْمُ	اَلْحَيُّ	اَلْمُمِيْتُ	اَلْمُحْيِيْ
अल-वाजिदु	अल-क़य्यूमु	अल-हय्यु	अल-मुमीतु	अल-मुह्यी
पाने वाले	थामने वाले	ज़िंदा	मारने वाले	ज़िंदा करने वाले

اَلْمُقْتَدِرُ	اَلْقَادِرُ	اَلصَّمَدُ	اَلْوَاحِدُ	اَلْمَاجِدُ
अल-मुक़्तदिरु कुदरत वाले	अल-क़ादिरु तवाना सब पर	अस्समदु बे-नियाज़	अल-वाहिदु अकेले	अल-माजिदु बुज़ुर्गवार
اَلظَّاهِرُ	اَلْآخِرُ	اَلْاَوَّلُ	اَلْمُؤَخِّرُ	اَلْمُقَدِّمُ
अज़्ज़ाहिरु ज़ाहिर	अल-आख़िरु पीछे सबसे	अल-अव्वलु पहले सब से	अल-मुअ-ख़्ख़िरु पीछे करने वाले	अल-मुक़द्दिमु आगे करने वाले
اَلتَّوَّابُ	اَلْبَرُّ	اَلْمُتَعَالِي	اَلْوَالِي	اَلْبَاطِنُ
अत्तव्वाबु तौबा क़ुबूल वाले	अल-बर्रु नेकवार	अल-मुत-आली बुलंद व बरतर	अल-वाली काम बनाने वाले	अल-बातिनु छिपा
مَالِكُ الْمُلْكِ		اَلرَّءُوْفُ	اَلْعَفُوُّ	اَلْمُنْتَقِمُ
मालिकुल मुल्कि मालिक बादशाहत के		अर रऊफ़ु मेहरबान	अल-अफ़ुवु माफ़ करने वाले	अल-मुन्त-क़िमु बदला लेने वाले
اَلْمُغْنِيْ	اَلْغَنِيُّ	اَلْجَامِعُ	اَلْمُقْسِطُ	ذُوالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ
अल-मुग़्नी तवंगर करने वाले	अल-ग़नीयु बे-परवाह	अल-जामिउ जमा करने वाले	अल-मुक़्सितु इन्साफ़ करने वाले	ज़ुलजलालि वल इकरामि बुज़ुर्गी और इनाम वाले
اَلْهَادِيْ	اَلنُّوْرُ	اَلنَّافِعُ	اَلضَّارُّ	اَلْمَانِعُ

अल-हादी राह दिखाने वाले	अन्नूरु रोशनी वाले	अन्नाफ़िउ नफ़ा पहुंचाने वाले	अज़्ज़ार्रु नुक़सान पहुंचाने वाले	अल-मानिउ रोकने वाले
اَلصَّبُوْرُ	اَلرَّشِيْدُ	اَلْوَارِثُ	اَلْبَاقِيْ	اَلْبَدِيْعُ
अस्सबूरु सब्र करने वाले	अर्रशीदु सीधी तद्बीर वाले	अल-वारिसु मालिक	अल-बाक़ी हमेशा रहने वाले	अल-बदीउ ईजाद करने वाले

ख़ासियतें—अस्मा-ए-हुस्ना (मुबारक नामों) को याद करने और पढ़ने की बरकत से जन्नत में दाख़िले की ख़ुशख़बरी आयी है और उन के वसीले से दुआ मांगना क़ुबूल होने की वजह है। तिर्मिज़ी वग़ैरह में ९९ नाम आये हैं। अस्मा-ए-हुस्ना के आसार व ख़वास बे-शुमार हैं। फ़ज्र की नमाज़ के बाद एक बार पढ़ कर दुआ मांगना बहुत फ़ायदेमंद और भलाई और बरकत की वजह है।

क़ैद और तकलीफ़ पहुंचाने वाले जानवरों से निजात

१. क़ैद से निजात

رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ أَهْلُهَا وَاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ
وَلِيًّا وَاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ نَصِيْرًا ۝ (४:७५)

१. रब्बना अख़्रिज्ना मिन हाज़िहिल क़र्यतिज़्ज़ालिमि अह्लुहा

वज्अल्लना मिल्लदुन क वलीयंव वज्अल्लना मिल्लदुन क नसीरा०

—पारा ५, रुकूम ७

तर्जुमा—ऐ परवरदिगार ! हमको (किसी तरह) इस बस्ती (यानी मक्का) से बाहर निकाल, जिसके रहने वाले सख्त ज़ालिम हैं और हमारे वहां ग़ैब से किसी दोस्त को खड़ा कर दीजिए और हमारे लिए ग़ैब से किसी को हामी भेजिए।

खास्सियत—अगर किसी ज़ालिम व बद-कार के बाहर या मौजे में गिरफ्तार हो और वहां से निजात मुश्किल हो, तो इस आयत को कसरत से पढ़ा करे और अल्लाह से अपनी रिहाई के लिए दुआ मांगे, इन्शाअल्लाहु तआला ज़रूर रिहा हो जाएगा।

فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَىٰ يُوسُفَ آوَىٰ إِلَيْهِ أَبَوَيْهِ وَقَالَ ادْخُلُوا مِصْرَ إِن شَاءَ
اللَّهُ آمِنِينَ وَرَفَعَ أَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوا لَهُ سُجَّدًا وَقَالَ يَا أَبَتِ هَٰذَا تَأْوِيلُ
رُؤْيَايَ مِن قَبْلُ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّي حَقًّا وَقَدْ أَحْسَنَ بِي إِذْ أَخْرَجَنِي مِنَ السِّجْنِ وَ
جَاءَ بِكُم مِّنَ الْبَدْوِ مِن بَعْدِ أَن نَّزَغَ الشَّيْطَانُ بَيْنِي وَبَيْنَ إِخْوَتِي إِنَّ رَبِّي لَطِيفٌ
لِّمَا يَشَاءُ إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ (پ١٣ ع٥)

२. फ़लम्मा द ख़लू······हुवल अलीमुल हकीम०

—पारा १३ रुकूम ५

तर्जुमा—फिर जब ये सब के सब यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के पास पहुंचे तो उन्होंने अपने मां-बाप को अपने पास (अदब के साथ) जगह दी और कहा सब मिस्र में चलिए (और) इन्शाअल्लाहु तआला (वहां) अम्न व चैन से रहिए और अपने मां-बाप को (शाही) तख्त पर ऊंचा बिठाया और सब के सब उनके सामने सज्दे में गिर गये और (यह हालत देख कर वे कहने लगे कि ऐ अब्बा जान ! यह है मेरे ख्वाब की ताबीर, जो पहले ज़माने में देखा था। मेरे रब ने इस

(ख्वाब) को सच्चा कर दिया और मेरे साथ (एक) उस वक्त एहसान फ़रमाया, जिस वक्त मुझको क़ैद से निकाला और इसके बाद कि शैतान ने मेरे और मेरे भाइयों के दर्मियान में फ़साद डलवा दिया था, तुम सब को बाहर से (यहां) ले आया (और सब को मिला दिया) बिला शुब्हा मेरा रब जो चाहता है, उसकी तद्बीर कर देता है। बिला शुब्हा वह बड़ा इल्म और हिक्मत वाला है।

खास्सियत—अगर कोई शख्स ज़ुल्म से क़ैद हो गया हो, तो इन आयतों को लिख कर दाहिने बाज़ू पर बांधे और ज़्यादा से ज़्यादा पढ़े, इन्शाअल्लाहु तआला रिहाई पाए।

३. सूरः फ़ातिहा—एक सौ ग्यारह बार पढ़ कर बेड़ी-हथकड़ी पर दम करने से क़ैदी जल्द रिहाई पाये। रात के आखिर में ४१ बार पढ़ने से बे-मेहनत रोज़ी मिले।

२. चीटियों की ज़्यादती

يَا أَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوا مَسَاكِنَكُمْ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمَانُ وَجُنُودُهُ وَ
هُمْ لَا يَشْعُرُونَ (پ١١ ع١٧)

१. या ऐयुहन्नम्लुद् ख़ुलू मसाकि न कुम ला यह्तिमन्नकुम सुलैमानु व जुनूदुहू व हुम ला यशअुरून०

—पारा १६, रुकूम १७

तर्जुमा—ऐ चींटियो ! अपने-अपने सूराखों में जा घुसो, तुमको सुलेमान और उनका लश्कर बे-खबरी में कुचल न डालें।

खास्सियत—अगर चींटियों की ज़्यादती हो तो इस आयत को लिख कर उनके सूराख में रख दे, इन्शाअल्लाहु तआला सब चींटियां अपने सूराख में दाखिल हो जाएंगी।

O

२. मच्छरों की ज़्यादती

ألم تر إلى الذين خرجوا من ديارهم وهم ألوف حذر الموت فقال
لهم الله موتوا ثم أحياهم إن الله لذو فضل على الناس ولكن أكثر الناس
لا يشكرون ٥ (ب۲ ع۱۶)

१. अ लम त र इलल्लज़ी न ख र जू मिन दियारिहिम व हुम उलूफ़ुन ह ज़ र रल मौति फ़ क़ाल ल हुमुल्लाहु मूतू सुम म अह्याहुम इन्नल्ला ह ल ज़ू फ़ज़्लिन अलन्नासि व ला किन न अक्सरन्नासि ला यश्कुरून० —पारा २, रुकूअ १६

तर्जुमा—(ऐ मुखातब !) तुमको उन लोगों का क़िस्सा मालूम नहीं हुआ जो कि अपने घरों से निकल गये थे और वे लोग हज़ारों ही थे मौत से बचने के लिए, सो अल्लाह तआला ने उनके लिए (हुक्म) फ़रमा दिया कि मर जाओ (सब मर गये) फिर, उनको जिला दिया। बेशक अल्लाह तआला बड़ा फ़ज़्ल करने वाले हैं लोगों (के हाल) पर, मगर अक्सर लोग शुक्र नहीं करते। (इस क़िस्से पर ग़ौर करो।)

खासियत—तश्त में स्याही से लिख कर शीरा बर्ग़ फ़ या शीरा बर्ग ज़ैतून में धोकर घर में छिड़कने से, जितने सांप-बिच्छू, पिस्सू, मच्छर होंगे, इन्शाअल्लाहु तआला सब मर जाएंगे और जुमेरात के दिन सुबह के वक़्त ज़ैतून के चार पत्तों पर लिख कर एक एक मकान के एक कोने में दफ़्न कर दिया जाए।

وما لنا ألا نتوكل على الله وقد هدانا سبلنا ولنصبرن
على ما آذيتمونا وعلى الله فليتوكل المتوكلون ٥ (ب۱۳ ع۱۴)

२. व मा लना अल्ला न त वक्क ल अलल्लाहि व क़द हदाना सुबु ल ना व ल नस्बिरन न अला मा आ ज़ैतुमूना व अलल्लाहि फ़ल यत वक्क लिल मु त वक्किलून० —पारा १३, रुकूअ १४

ABDUL RAB ROOHANI ELAZ
Shaikh Abdul Gafar
Majhikhanda,Niali,Cuttack
Odisha,India
Mail Id:-bdulgafarshaikh@gmail.com
gtelteleservice754004@gmail.com
Mob:+919861478787
ISSUU.COM/ABDUL23
ISSUU.COM/SHAIKHBDULGAFAR